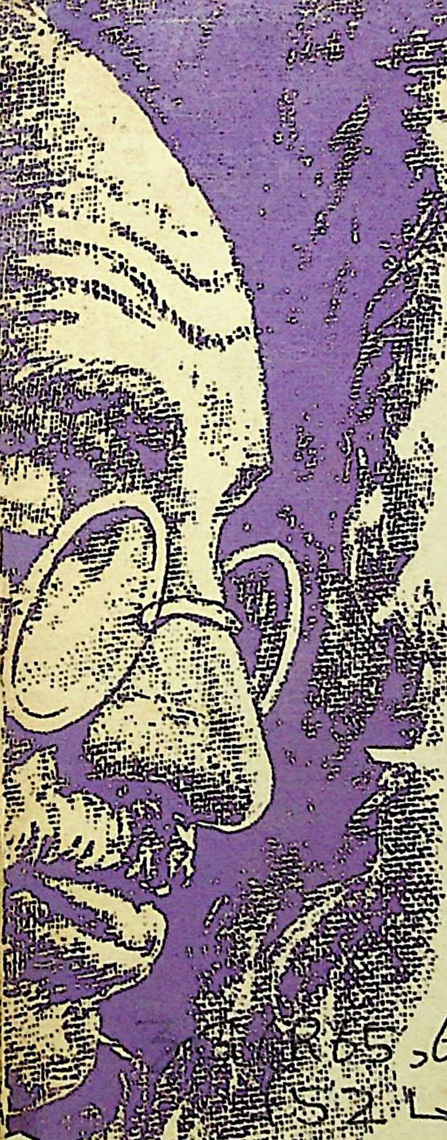


गीता पदार्थ कोश



कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

गीता
पदार्थ-कोश

गीता के शब्दों का अर्थ और स्थल-निर्देश

मो० क० गांधी

१९७७



सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

•

पहली बार : १९७७
मूल्य
तीन रुपये

•

मुद्रक
रूपक प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा
दिल्ली-११००३२

प्रकाशकीय

गीता का गांधीजी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। वह उससे निरंतर प्रेरणा लेते रहे। उन्होंने इस ग्रंथ को 'गीता-माता' की संज्ञा से विभूषित किया। इतना ही नहीं, उन्होंने इस बात का प्रयत्न भी किया कि गीता का संदेश जन-जन तक पहुंचे। इसके लिए उन्होंने अत्यन्त सरल-सुबोध भाषा में उसका सार तैयार किया, जो 'गीता बोध' के नाम से प्रकाशित हुआ। गीता के सारे श्लोकों की टीका की और विषय की स्पष्टता के लिए स्थान-स्थान पर अपनी टिप्पणियां दीं। उसका प्रकाशन 'अनासक्ति-योग' के नाम से हुआ। भक्ति-प्रधान और सरल श्लोकों का चयन करके 'गीता-प्रवेशिका' तैयार की। गीता की महिमा पर अनेक लेख लिखे।

इस सबसे भी उन्हें संतोष न हुआ तो उन्होंने गीता के शब्दों की अकारादि क्रम से अनुक्रमणिका बनाई, किस शब्द का प्रयोग कहां-कहां हुआ है, उसका निर्देश किया और शब्दों का अर्थ दिया।

उस सम्पूर्ण सामग्री का संग्रह प्रस्तुत पुस्तक में हुआ है। वस्तुतः यह सामान्य कोश नहीं है। गीता का स्वाध्याय करनेवाले व्यक्तियों के लिए यह एक संदर्भ-ग्रंथ है। सच यह है कि जो गीता के अभ्यासी नहीं हैं, वे भी यदि इस सारी सामग्री पर एक बार निगाह डालेंगे तो उनकी गीता में रुचि उत्पन्न होगी और फिर वे इस ग्रंथ-रत्न का सहारा छोड़ नहीं सकेंगे।

संसार के अनेक देशों में, विशेषकर हमारे भक्ति-प्रधान देश में, जिन ग्रंथों को असामान्य लोकप्रियता प्राप्त हुई है, उनमें गीता का बहुत ऊंचा स्थान है। उसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति का अभूतपूर्व समन्वय है।

हमारा विश्वास है कि गीता से संबंधित गांधीजी की सभी पुस्तकों को पाठक सूक्ष्म दृष्टि से पढ़ेंगे और उसकी शिक्षाओं से भरपूर लाभ उठावेंगे। जिसके जीवन में ज्ञान, कर्म और भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित होने लगती है, उस व्यक्ति का जीवन सफल हो जाता है।

—मंत्री

निवेदन

काकासाहब ने अपने 'दो शब्द' में बताया है कि यह कोश बारह वर्ष पहले तैयार हुआ और जैसा चाहिए था, वैसा न होनेपर भी आज क्यों छप रहा है।

जिन्हें मेरे नाम से प्रकाशित अनुवाद में कुछ भी रस है, उनके लिए यह कोश सहज ही आवश्यक है। संभव है, अन्य गीताभ्यासियों के लिए भी यह उपयोगी हो। ऐसे लोगों के लिए मेरी यह सूचना है कि यदि 'पदार्थ-कोश' में दिये हुए अर्थ उन्हें न रुचें और दूसरे अर्थ अधिक प्रिय लगें तो वे उन्हें उसी में लिख लें। ऐसा करने से उन्हें बहुत थोड़ी मेहनत में अपना मनचाहा कोश मिल जायगा और इस प्रकार अभ्यास करनेवाले व्यक्ति यदि अपने पसंद किये हुए अर्थ मेरे पास भेज दें तो मैं आभारी होऊंगा।

मैं ज्यों-ज्यों गीता का अभ्यास करता हूं त्यों-त्यों मुझे उसकी अनुपमता अधिक मालूम होती जाती है। मेरे लिए वह आध्यात्मिक कोश है।

मैं जब कभी कार्याकार्य की परेशानी में पड़ता हूं तब उसका आश्रय लेता हूं और अबतक उसने मुझे कभी निराश नहीं किया। वह सचमुच कामधेनु है। रोज एक श्लोक, फिर दो, फिर पांच, फिर रोज एक अध्याय फिर चौदह दिन में पारायण और अंत में कई वर्ष से हम में से कुछ लोग सात दिन के पारायण तक पहुंच गये हैं और सुबह साढ़े चार बजे के लगभग निश्चित दिनों के निश्चित अध्यायों की ध्वनि सुनाई पड़ती है। कुछ ने—बहुत थोड़े लोगों ने—अठारहों अध्याय कंठ कर लिये हैं। वार के हिसाब से सुबह की प्रार्थना में रोज यह क्रम चलता है:

शुक्र १, २; शनि ३, ४, ५; रवि ६, ७, ८; सोम ९, १०, ११, १२; मंगल १३, १४, १५; बुध १६, १७; गुरु १८.

इस विभाजन के विषय में इतना ही कहना काफी है कि इसके पीछे

एक विचारश्रेणी रही है। ऐसा अनुभव है कि इस प्रकार मनन करने में ठीक-ठीक सुविधा होती है।

यह प्रश्न उठना संभव है कि शुक्रवार से ही पारायण क्यों शुरू हुआ। इसका कारण इतना ही है : काफी समय तक चौदह दिन का पारायण चलता रहा। यरवदा जेल में मुझे सात दिन के पारायण की बात सूझी और एक शुक्रवार को उस पर अमल हुआ, इसलिए और उसी समय से पारायण-सप्ताह शुक्रवार से शुरू होता है।

पारायण की बात यहां देने के दो हेतु हैं। एक तो यह बताना कि गीता-भक्ति आजतक हममें से कुछ लोगों को कहां तक ले गई है और दूसरे, पाठकों को अभ्यास में प्रोत्साहन देनेवाला रास्ता बताना।

किंतु गीता गाकर ही निहाल नहीं हो सकते। गीता धर्म-दर्शक कोश है, आत्मा की उलझन को सुलझानेवाली प्रचंड शक्ति है, दीन-दुखियों का आधार है, सोते से जगानेवाली है, जो ऐसा मानता है, उसे ही गीता-गान मदद दे सकता है। यहां यह कहने का आशय बिल्कुल नहीं है कि बिना अर्थ समझे गीता-गान स्वतन्त्र रूप से मनुष्य का कल्याण करता है। प्रयत्न-पूर्वक पाले हुए तोते को गीता अवश्य कंठ कराई जा सकती है; किन्तु उससे तोते को या उसके शिक्षक को जरा भी पुण्य नहीं मिलने का।

गीता जीती-जागती, जीवन देनेवाली, अमर माता है। दूध पिलाकर पालने-पोसनेवाली माता एक दिन धोखा देकर चली जायगी। हम देखते हैं, असंख्य माताएं अपनी सन्तान को तूफान में से बचाने में असमर्थ रहती हैं, किन्तु गीता-माता का आश्रय लेनेवाला भयंकर तूफान में से उबर जाता है। वह नित्य जाग्रत है। कभी धोखा नहीं देती; किन्तु जैसे बिना मांगे मां भी दूध नहीं पिलाती, वैसे ही गीतामाता भी बिना मांगे कुछ नहीं देती। वह किसी को अपनी गोद में लेने से पहले उसकी कठिन परीक्षा लेती है; पूर्ण भक्ति की अपेक्षा रखती है। शुष्क भक्ति से भी काम नहीं चलेगा। वह अनन्य भक्ति चाहती है। इसलिए जो लोग उसे सर्वार्पण करने को तैयार नहीं, उन्हें आश्रय देना वह बिलकुल अस्वीकार कर देती है।

भौतिक शास्त्र के बड़े-बड़े अभ्यासी उसके पीछे पागल हो जाते हैं, तब कहीं उन्हें उसका कुछ दर्शन होता है। एम० ए०, बी० ए०, होनेवाले

रात-दिन पढ़ते हैं, उसपर पैसा खर्च करते हैं, शरीर सुखाते हैं। इस प्रकार प्रयत्न करनेवालों में से कुछ ही लोग पहली बार में उत्तीर्ण होते हैं। उत्तीर्ण न होनेवाले निराश न होकर बार-बार प्रयत्न करते हैं और उत्तीर्ण होने पर ही शांति से बैठते हैं। और अन्त में—?

गीतामृत का पान करने के लिए तो इन प्रयत्नों की अपेक्षा बहुत अधिक प्रयत्न की आवश्यकता होनी चाहिए और है ही। परंतु उस अमृत-पान की गरज कितनों को है ? गरज है तो कितने लोग जी-तोड़कर प्रयत्न करने को तैयार होते हैं ? हम जानते हैं कि, जैसे मैंने बताया है, उस दृष्टि से, गीता-भक्ति करनेवालों की संख्या नहीं के बराबर है, तो भी सब लोग यह कबूल करते हैं कि गीता सारे उपनिषदों का दोहन है। किसी भी हिन्दू को उसके ज्ञान से रहित नहीं होना चाहिए; किन्तु आजकल धर्ममात्र की कीमत घट गई है। उसके कारणों में जाने का यह अवसर नहीं है। मैंने तो, यह गीता-पदार्थ-कोश प्रकाशित हो रहा है, इस निमित्त से जिज्ञासुओं का ध्यान गीतारूपी रत्न की तरफ खींचने और उसका सदुपयोग कैसे हो सकता है, यह बताने का प्रयत्न इस निवेदन में किया है, वह सफल हो।

सेगांव वर्धा
२४-९-३६

मो० क० गांधी

दो शब्द

गीता के शब्दों की (पदों का) अक्षरानुक्रमणिका, उनका स्थल-निर्देश और उनका अर्थकोश गांधीजी ने सन् १९२२-२३ में यरवदा जेल में तैयार किया। जेल की पढ़ाई और साहित्य-प्रवृत्ति के सम्बन्ध में गांधीजी ने लिखा है :

"जबसे मैंने संसार में प्रवेश किया तबसे मुझे लगा कि सामान्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए मुझे पढ़ना चाहिए; किंतु मुझे जीवन में पहले से ही तूफान और संकट दिखाई दिये। इसलिए साहित्य में रस लेने को अधिक समय न मिला। सन् १८९४ के बाद कुछ पढ़ने-पढ़ाने का समय मुझे मिला तो वह केवल दक्षिण अफ्रीका की जेलों में ही। मुझे पढ़ने का शौक पैदा हुआ, इतना ही नहीं, बल्कि अपना संस्कृत का ज्ञान पूरा करने और तमिल, हिंदी तथा उर्दू का अभ्यास करने को मेरा मन हुआ। दक्षिण अफ्रीका की जेलों में मेरी पढ़ने की अभिरुचि तीव्र हुई थी। इसलिए दक्षिण अफ्रीका के अपने आखिरी कारावास के समय मुझे समय से पहले छोड़ दिया गया तब मुझे दुःख हुआ।

"इसलिए हिन्दुस्तान में जब ऐसा अवसर आया तब मैंने आनंदपूर्वक उसका स्वागत किया। मैंने यरवदा में अभ्यास का एक नियमित क्रम बना लिया, जिसे पूरा करने के लिए ६ वर्ष काफी न थे।

"जर्जरित शरीरवाला ५४ वर्ष का बूढ़ा होते हुए भी मैंने २४ वर्ष के तरुण के समान उत्साहपूर्वक अभ्यास शुरू किया। मैं अपने समय के एक-एक क्षण का हिसाब रखता और चाहता था कि छूटने पर मैं उर्दू और तमिल का अच्छा अभ्यासी होकर और संस्कृत का अच्छा ज्ञान लेकर ही बाहर निकलूं। संस्कृत के मूल ग्रंथ पढ़ने की मेरी कामना पूरी हो जाती, किंतु ऐसा होने का संयोग न था। दुर्भाग्य से मैं बीमार पड़ गया। उसके परिणामस्वरूप मैं छूटा और मेरे अभ्यास के रंग में भंग हो गया।"

फिर भी गांधीजी ने अनेक भाषाओं की छोटी-बड़ी डेढ़ सौ मिलाकर

किताबें तो पढ़ ही डालीं। इनमें महाभारत, गीता और उपनिषदों का अभ्यास तो था ही। वह लिखते हैं :

"जिन पुस्तकों के विना मेरा काम चल ही नहीं सकता था वे महाभारत, रामायण और भागवत थीं। वेद को मूल में देखने की इच्छा उपनिषद् से सतेज हुई। उसकी उत्कट कल्पनाओं से अपार आनंद हुआ और उसकी आध्यात्मिकता से मेरी आत्मा शांत हुई।"

इस पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने यह गीता-पदार्थ-कोश भी तैयार किया। इसके संवंध में उन्होंने लिखा है :

"जेल में किये गए अपने अभ्यास की इस समालोचना को पूरा करने से पहले मैं विद्यार्थी पाठक को नियमित कार्य करने की उपयोगिता के संवंध में तथा शुष्क वस्तुओं को रसपूर्ण बनाने की रीति के संवंध में दो शब्द कह दूं। मेरे अपने अभ्यास और नित्यप्रति के उपयोग के लिए मुझे गीता की एक शब्दानुक्रमणिका तैयार करनी थी। शब्द और उनके संवंध लिखने और दो-दो बार उनको क्रम से लगाने का काम वहुत रसपूर्ण नहीं है। मेरी धारणा थी कि अपने कारावास के समय मैं यह काम करूं, तो भी इस काम के लिए वहुत समय देना मुझे रुचिकर न था। मेरा समय-पत्रक भरा हुआ था। इससे रोज केवल बीस मिनट इस काम में देने का मैंने निश्चय किया। इस कार्य में इतना थोड़ा समय देने से यह बेगार-जैसा नहीं मालूम होता था। उलटे, रोज उसका समय होने की मैं राह देखता। जब उसकी दूसरी वार की अनुक्रमणिका तैयार करने का समय आया तव तो मैं उसमें तल्लीन होने लगा। जिज्ञासु स्वयं इस वात का अनुभव कर देखें। जिन शब्दों का अनुक्रम मुझे ठीक करना था, उनके पहले अक्षरों का अक्षरानुक्रम मैंने तैयार किया, किंतु प्रत्येक अक्षर के शब्दों को आंतरिक अक्षरानुक्रम में किस रीति से लगायें, यह प्रश्न मेरे लिए जटिल हो गया। मैंने कभी शब्दकोश तैयार नहीं किया था। इससे मुझे स्वतंत्र रूप से काम करने की रीति खोजनी पड़ी और जव मैंने वह खोज ली तब मेरे आनंद का पार नहीं रहा। वचपन में जो आनंद गोली और कंचे के खेल में आता उससे भी अधिक आनंद मुझे इस अनुक्रमणिका को लगाने के खेल से मिला। यह रीति सुघड़, तेज़ और भूल होने ही न

पाये, ऐसी थी। यह सारा काम पूरा करते मुझे अठारह महीने लगे। आज अब इस शब्दानुक्रम में देखकर मैं तत्काल जान सकता हूं कि गीता-जी में आया हुआ कोई भी शब्द कहां और कितनी वार प्रयुक्त हुआ है। इसमें दूसरा भी अभिप्राय रहा है। यदि मैं कभी गीता के संवंध में अपने विचार लिखने में समर्थ हुआ तो इस शब्दानुक्रम और इन विचारों को पाठकों के समक्ष रखना भी चाहता हूं।"

ऐसी वात नहीं है कि गीता का पदानुक्रम इसके पहले किसी ने तैयार न किया हो। थोड़ी-बहुत पूर्णता वाले ऐसे गीता-पद-कोश चार-पांच तो हैं ही, किंतु गांधीजी को अपने विनोद के लिए और जेल की सहूलियत के लिए इस प्रकार का कोश स्वतंत्र रूप से तैयार करना था। गांधीजी का मानस प्रत्येक क्षेत्र में शास्त्रीय रीति से काम करता है। गीता के अभ्यास की सुविधा के लिए उन्होंने एक वार अनेक भाषान्तरों के हरेक श्लोक के अनुवाद इकट्ठे करके टाइप कराये थे। इसे अंग्रेजी में 'कॉन्कोर्डन्स' (सादृश्य) कहते हैं। इसका उद्देश्य अक्षरानुक्रम से यह बताना होता है कि अमुक ग्रंथ में अथवा अमुक लेखक की तमाम रचनाओं में अमुक शब्द कहां-कहां और कितनी वार आया है। गांधीजी ने इसमें हरेक पद का अर्थ भी देकर इसकी उपयोगिता बढ़ा दी है। इसलिए पद केवल पद-कोश न रहकर अर्थ-कोश भी हो गया है और इसलिए इसको 'गीता-पदार्थ-कोश' नाम दिया गया है। इस पदार्थ-कोश में उन्होंने पहले संस्कृत कोशों में दिये हुए अर्थ ही लिखे थे। वाद में जब उन्होंने गीता के अपने अर्थ को स्पष्ट करने के लिए अनासक्तियोग लिखा तब उसमें दिये हुए अर्थ भी इस पदार्थ-कोश में जोड़ दिये गए। ऑर्डिनेन्स राज की धांधली के दिनों में यह संवंधित कोश खो गया। इसलिए अभी-अभी दो-तीन मित्रों ने गांधीजी के मूल हस्तलिखित पद से फिर मेहनत करके यह तैयार किया है और आज यह पाठकों के हाथ में दिया जा रहा है।

यह कोश जैसा बना है, उससे गांधीजी को पूर्ण संतोष नहीं है। उनकी इच्छा थी कि अर्थ देना ही है तो प्रत्येक महत्त्व के शब्द का अलग-अलग भाष्यकारों ने और गीता के नये-पुराने अभ्यासियों ने अलग-अलग जो अर्थ किया है, वह सव व्यवस्थित रीति से दें। इससे भाष्यार्थ का तुलनात्मक

अभ्यास सुलभ हो जाता।

यह तो अर्थ-भेद की दृष्टि हुई। दूसरी रीति से भी अर्थकोश को शास्त्र-शुद्ध करने के लिए शब्दों का धात्वर्थ देकर उसके बाद गीता-युगतक इन शब्दों के अर्थ में कैसे अंतर पड़ता गया और गीता ने इन शब्दों का खास क्या अर्थ किया है, यह बताना चाहिए। उसके बाद तत्त्वज्ञान के विकास का अनुसरण करके भाष्यकारों को यह अर्थ क्यों बदलना पड़ा, यह भी थोड़े में बताना चाहिए। इस रीति से अर्थ-विकास की सीढ़ियों अथवा प्रवाह को बताकर गीता के लिए पर्याप्त 'सेमेन्टिकस्' (शब्दार्थ-शास्त्र) बनाना चाहिए। जैसा मनुष्यों का विकास होता है, वैसे मनुष्य-जाति में प्रयुक्त महान् शब्दों के अर्थ में भी विकास होता जाता है। शब्द भी वस्तुतः सगुण पुरुष ही हैं।

इस अर्थ-विकास के संबंध में अनासक्तियोग की प्रस्तावना में गांधीजी ने लिखा है : "मनुष्य की भांति महावाक्यों के अर्थ का विकास भी होता ही रहता है। भाषाओं के इतिहास की जांच कीजिए तो मालूम होगा कि अनेक महान् शब्दों के अर्थ नित्य नये होते रहे हैं...गीताकार ने महा-शब्दों का व्यापक अर्थ करके अपनी भाषा का भी व्यापक अर्थ करना हमें सिखाया है।"

आगे चलकर वह लिखते हैं : "गीता एक महान् धर्मकाव्य है। उसमें जितने गहरे उतरेंगे, उतने ही नये और सुंदर अर्थ उसमें से मिलेंगे... गीता में आये हुए महाशब्दों का अर्थ युग-युग में बदलता और विस्तृत होता रहेगा। गीता का मूल मंत्र कभी नहीं बदल सकता। वह मंत्र जिस रीति से साधा जा सके, उस रीति से जिज्ञासु चाहे जो अर्थ कर सकता है।"

गांधीजी की इच्छा के अनुसार ऐसा व्यापक और शास्त्रशुद्ध संपूर्ण गीता-पदार्थ-कोश जब तैयार होगा, तब होगा। इस समय तो हम उनकी बारह वर्ष पहले की प्रवृत्ति का फल गीताभ्यासियों के आगे रखते हैं।

सरस्वती-पूजन
२४-९-३६

—दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

गीता-पदार्थ-कोश

अ

अकर्तारम्—४-१३, १३-२९ अकर्ता; अकर्ता रूप में

अकर्म—४-१६, १८ कर्मशून्यत, अकर्म

अकर्मकृत्—३-५ कर्म किये विना

अकर्मण:—३-८ कर्म न करने से; ३-८ कर्मं न करने वाले की, कर्म बिना; ४-१७ कर्म-शून्यता का, अकर्म का

अकर्मणि—२-४७ कर्मशून्यता में, कर्म न करने के विषय में; ४-१८ अकर्म में

अकल्मषम्—६-२७ पापरहित हुए को, निष्पाप को

अकार:—१०-३३ अकार; 'अ' यह अक्षर

अकार्यम्—१८-३१ न करने योग्य

अकीर्तिकरम्—२-२ लांछन लगानेवाला, अपयश देनेवाला

अकीर्तिम्—२-३४ अपकीर्ति, निंदा

अकीर्ति:—२-३४ अयश, अपकीर्ति

अकुर्वत—१-१ किया

अकुशलम्—१८-१० दुःखकर, असुविधाजनक

अकृतबुद्धित्वात्—१८-१६ असंस्कृत बुद्धि के कारण

अकृतात्मान:—१५-११ संस्कार-रहित लोग, जिन्होंने आत्मशुद्धि नहीं की है ऐसे लोग

अकृतेन—३-१८ न करने से

अकृत्स्नविद:—३-२९ अज्ञानी मंदबुद्धि लोगों को, अधकचरे ज्ञान वालों को

अक्रिय:—६-१ क्रियाओं का न करनेवाला

अक्रोध:—१६-२ क्रोध रहित होना

अक्लेद्य:—२-२४ जो भिगोया न जा सके ऐसा

अक्षय (य्य) म्—५-२१ अविनाशी अक्षय्य (जिसे नष्ट न किया जा सके)

अक्षय:—१०-३३ नाशरहित अविनाशी

अक्षरसमुद्भवम्—३-१५ (अवि-नाशी) परमात्मा से उत्पन्न हुआ; शाश्वत ब्रह्म (अक्षर) से उत्पन्न हुआ

अक्षरम्—८-३ ११; ११-१८,

३७; १२-१, ३ अक्षर, अविनाशी; १०-२५ ॐ कार, 'ॐ' यह अक्षर
अक्षरः—८-२१ अविनाशी; १५-१६, १६ अक्षर (पुरुष)
अक्षराणाम्—१०-३३ अक्षरों में वर्णों में
अक्षरात्—१५-१८ अक्षर से
अखिलम्—४-३३ पूरा, निःशेष; ७-२९ अखिल; १५-१२ सारे, समूचे
अगतासून्—२-११ जिनके प्राण नहीं गये हैं उनको, जीवितों को
अग्निः—४-३७; ८-२४; ९-१६; ११-३९; १८-४८ अग्नि
अग्नौ—१५-१२ अग्नि में
अग्रे—१८-३७, ३८, ३९ आरंभ में
अघम्—३-१३ पाप को
अघायुः—३-१६ पापी जीवनवाला
अङ्गानि—२-५८ अंगों (को), गात्रों (को)
अचरम्—१३-१५ स्थावर, स्थिर
अचलप्रतिष्ठम्—२-७० अचल स्थितिवाले को, जिसकी मर्यादा निश्चल है उसे, अचल प्रतिष्ठावाले को
अचलम्—६-१३; १२-३ अचल
अचलः—२-२४ अचल
अचला—२-५३ स्थिर (बुद्धि)
अचलाम्—७-२१ दृढ़
अचलेन—८-१०, अचल, निश्चल
अचापलम्—१६-२ अचांचल्य, अचंचलता, दृढता
अचिन्त्यरूपम्—८-९ विचार में न आ सके ऐसे रूपवाला, अचिन्त्य
अचिन्त्यम्—१२-३ अचिन्त्य
अचिन्त्यः—२-२५, जिसका चिन्तन न किया जा सके ऐसा, मन के लिए अगम्य
अचिरेण—४-३९ तुरत, विना विलंब के
अचेतसः—३-३२; १५-११; १७-६ अविवेकी, ज्ञानहीन, मूढ़
अच्छेद्यः—२-२४ जो छेदा न जा सके ऐसा
अच्युत—१-२१, ११-४२; १८-७३ हे अच्युत, कृष्ण
अजस्रम्—१६-१९ निरंतर, वारंवार
अजम्—२-२१; ७-२५, १०-३, १२ अजन्मा, जन्मरहित
अजः—२-२०; ४-६ अजन्मा, जन्मरहित
अजानता—११-४१ अनजाने, भूल में
अजानन्तः—७-२४; ९-११; १३-२५ न जानेवाले
अज्ञः—४-४० अज्ञानी
अज्ञानजम्—१०-११ अज्ञान से

उत्पन्न हुआ, अज्ञान रूप; १४-८ अज्ञानमूलक

अज्ञानविमोहिता:—१६-१५ अज्ञान से अति मूढ़ हुआ

अज्ञानसंभूतम्—४-४२ अज्ञान से उत्पन्न हुआ

अज्ञानसंमोहः—१८-७२ अज्ञानजन्य मोह

अज्ञानम्—५-१६; १३-११; १४-१६, १७; १६-४ अज्ञान

अज्ञानाम्—३-२६ अज्ञानियों की

अज्ञानेन—५-१५ अज्ञान-अविद्या से

अणीयांसम्—८-९ छोटा, अत्यन्त सूक्ष्म

अणोः—८-९ अणु से

अतत्त्वार्थवत्—१८-२२ तत्त्वरहित, रहस्यहीन, मूल स्वरूप से विपरीत (तुलना करो १८-३२)

अतन्द्रितः—३-२३ आलस्य रहित (होकर)

अतपस्काय—१८-६७ तपश्चर्या-रहित को, असंयमी को, जो तपस्वी नहीं है उसे

अतः—९-२४; १५-१८ इसलिए, इस कारण से; १३-११ इससे, इनसे

अतः परम्—२-१२ इससे आगे; १२-८ इस लोक से, इस जन्म के बाद

अतितरन्ति—१३-२५ तर जाते हैं

अतिनीचम्—६-११ बहुत नीचा

अतिमानिता—१६-३ अति अभिमान

अतिरिच्यते—२-३४ अधिक है, बढ़ जाती है

अतिवर्तते—६-४४; १४-२१ लांघ जाता है, तर जाता है

अतिस्वप्नशीलस्य—६-१६ अधिक सोनेवाले को

अतीतः—१४-२१; १५-१८ लांघ गया हुआ, ···को तर जाने वाला, ···से पर

अतीत्य—१४-२० लांघकर; पार करके

अतीन्द्रियम्—६-२१ इंद्रियों से अतीत,—पर, जिसका अनुभव न हो सके ऐसा

अतीव—१२-२० बहुत

अत्यद्भुतम्—१८-७७ अति आश्चर्यकारक, अद्भुत

अत्यन्तम्—६-२८ अनंत

अत्यर्थम्—७-१७ बहुत

अत्यश्नतः—६-१६ बहुत खानेवाले को, ठूंस-ठूंसकर खानेवाले को

अत्यागिनाम्—१८-१२ अत्यागी को, त्याग न करनेवाले को

अत्युच्छितम्—६-११ बहुत ऊंचा

अत्येति—८-२८…के उस पार जाता है, उल्लंघन कर जाता है

अन्न—१-४, २३; ४-१६; ८-२, ४,५; १८-१४ यहां; ४-१६; ८-५; १०-७ इस विषय में

अथ—१-२०; २-३३; ३-३६ अब; १-२६; ११-५; १८-५८ और; २-२६; १२-९ ११ यदि; ३-३६; ११-४० फिर

अथवा—६-४२; १०-४२; ११-४२ अथवा

अथो—४-३५ इसलिए, उसके बाद

अदक्षिणम्—१७-१३ विना दक्षिणा के, विना त्याग के (यज्ञ के)

अदम्भित्वम्—१३-७ अदंभित्व, दम्भ न प्रकट करना

अदाह्यः—२-२४ जो जल न सके

अदृष्टपूर्वम्—११-४५ पहले न देखा हुआ

अदृष्टपूर्वाणि—११-६ पहले देखने में न आये हुए

अदेशकाले—१७-२२ अयोग्य देश और काल में

अद्भुतम्—११-२०; १८-७४,७६; अद्भुत, आश्चर्यकारक, अलौकिक

अद्य—४-३; ११-७; १६-१३ आज

अद्रोहः—१६-३ किसी का बुरा न करना, अद्रोह

अद्वेष्टा—१२-१३ द्वेष न करनेवाला, निर्वैर

अधमाम्—१६-२० अधम, नीच

अधर्मस्य—४-७ अधर्म का

अधर्मम्—१८-३१, ३२ अधर्म को

अधर्मः—१-४० अधर्म

अधर्माभिभवात्—१-४१ अधर्म की वृद्धि होने से, अधर्म के आक्रमण से

अधः—१४-१८ नीचे, अधोगति (पाते हैं); १५-२, २ नीचे

अधःशाखम्—१५-१ नीचे की ओर शाखावाला, जिसकी शाखा नीचे की ओर है ऐसा

अधिकतरः—१२-५ (प्रमाण में) बहुत अधिक

अधिकम्—६-२२ अधिक

अधिकः—६-४६, ४६, ४६ अधिक, बड़ा

अधिकारः—२-४७ अधिकार

अधिगच्छति—२-६४; ४-३९; ६-१५; २-७१; ५-६, २४; १४-१९; १८-४८; प्राप्त होता है, पाता है

अधिदैवतम्—८-४ / अधिदैवम्—८-१ } अधिदैव, जीवस्वरूप

अधिभूतम्—८-१; ४ नामरूप

मात्र, नाशवान सृष्टि-स्वरूप, अधिभूत

अधियज्ञः—८-२, ४ सब यज्ञ का अभिमानी विष्णु, देह में रहते हुए भी यज्ञ द्वारा शुद्ध हुआ जीवस्वरूप

अधिष्ठानम्—३-४० निवास स्थान, आश्रय, किला; १८-१४ क्षेत्र, शरीर

अधिष्ठाय—४-६ लेकर; १५-९ आश्रय लेकर

अध्यक्षेण—९-१०, नियन्ता द्वारा, अधिकार के नीचे

अध्यात्म चेतसा—३-३० विवेकात्मबुद्धि से, अध्यात्मवृत्ति रखकर

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम्—१३-११ अध्यात्मज्ञान का नित्यत्व, आध्यात्मिक ज्ञान की नित्यता का भान

अध्यात्मनित्याः—१५-५ परमात्मस्वरूप के विचार में निमग्न, आत्मा में नित्यनिमग्न

अध्यात्मविद्या—१०-३२ आत्मज्ञान, अध्यात्मविद्या

अध्यात्मसंज्ञितम्—११-१ आध्यात्मिक, 'अध्यात्म' नाम का

अध्यात्मम्—७-२९ अध्यात्म को, शरीर में स्थित अंतरात्मा को; ८-१, ३ अध्यात्म, प्राणीमात्र में स्वसत्ता से रहनेवाला

अध्येष्यते—१८-७० अभ्यास करेगा

अध्रुवम्—१७-१८ अनिश्चित

अनघ—३-३; १४-६; १५-२० हे पापरहित !

अनन्त—११-३७ हे अनन्त ! अंतरहित

अनन्तबाहुम्—११-१९ अनन्त हाथोंवाले को

अनन्तरम्—१२-१२ बाद में तुरंत, अनन्तर

अनन्तरूप—११-३८ हे अनन्तरूप (कृष्ण)

अनन्तवीर्यम्—११-१९ अपार वीर्य (बल) वाले को

अनन्तवीर्यामितविक्रमः—११-४० अनन्त सामर्थ्य और अमाप बलवाला

अनन्तम्—११-११, ४७ अन्त रहित को

अनन्तरूपम्—११-१६ अनन्त रूपवाले को

अनन्तविजयम्—१-१६ अनन्त-विजय नामक (युधिष्ठिर के) शंख को

अनन्तः—१०-२९ शेषनाग

अनन्ताः—२-४१ अनन्त, अपार

अनन्यचेताः—८-१४ जिसका चित्त और कहीं न हो वह; एकाग्र मनवाला

अनन्यभाक्—९-३० अनन्य निष्ठावाला एकनिष्ठ(होकर)

अनन्यमनसः—९-१३ अनन्य चित्तवाले (होकर), एकनिष्ठा से

अनन्यया—८-२२; ११-५४ अनन्य (भक्ति) से

अनन्येन—(योगेन) १२-६ एक—निष्ठा से

अनन्ययोगेन—१३-१० अनन्य ध्यानपूर्वक, अनन्य योग से

अनन्याः—९-२२ दूसरे को न पूजनेवाले, अनन्य भाव से

अनपेक्षः—१२-१६ इच्छारहित, निःस्पृह

अनपेक्ष्य—१८-२५ विना विचार किये

अनभिष्वङ्गः—१३-९ समता का अभाव, निर्ममत्व

अनभिसंधाय—१७-२५ (फल की) आशा रखे बिना, इच्छा किये बिना

अनभिस्नेहः—२-५७ रागरहित, स्नेहरहित

अनयोः—२-१६ इन ('सत्' और 'असत्) का

अनलः—७-४ अग्नि, तेज (तन्मात्रा)

अनलेन—३-३९ अग्नि से

अनवलोकयन्—६-१३ न देखता हुआ

अनवाप्तम्—३-२२ जो वस्तु न पाई गई हो, न मिली हो, अप्राप्त

अनश्नतः—६-१६ उपवासी को, न खानेवाले को

अनसूयन्तः—३-३१ द्वेष को त्यागनेवाले, निंदा न करनेवाले

अनसूयवे—९-१ द्वेषरहित को, निंदा न करनेवाले को, दोषदर्शन न करनेवाले को

अनसूयः—१८-७१ द्वेषरहित, अनसूयारहित

अनहंकारः—१३-८ अहंकाररहित होना, अहंकार का अभाव, नम्रता

अनहंवादी—१८-२६ अहंतारहित

अनात्मनः—६-६ जिसने आत्मा को नहीं जीता है उसका, अजितेन्द्रिय का

अनादित्वात्—१३-३१ अनादि होने से, अनादिता के कारण

अनादिमत्—१३-१२ अनादि, बिना आदि का

अनादिमध्यान्तम— ११-१९

जिसका आदि, मध्य या अंत न हो उसे; उत्पत्ति, स्थिति और नाश से रहित को

अनादिम्—१०-३ आदिरहित, सनातन अनादिरूप

अनादी—१३-१९ अनादि (द्विव.)

अनामयम्—२-५१ निष्कलंक आमय-रोगरहित, निर्दोष; १४-६ आरोग्यकर, उपद्रव-रहित

अनारम्भात्—३-४ आरम्भ न करने से

अनार्यजुष्टम्—२-२ श्रेष्ठ पुरुष के अयोग्य, जो क्षुद्र पुरुष को ही शोभा दे, आर्य पुरुष जिसका सेवन न करें ऐसा

अनावृत्तिम्—८-२३, २६ मोक्ष, जहां से पीछे (इस संसार में) लौटकर न आना पड़े

अनाशिनः—२-१८ अविनाशी का, नाशरहित का

अनाश्रितः—६-१ आश्रय लिए विना, इच्छा किये विना

अनिकेतः—१२-१९ विना घर का, जिसका कोई अपना निजी स्थान नहीं है

अनिच्छन्—३-३६ न चाहता हुआ

अनित्यम्—९-३३ अनित्य, क्षणिक

अनित्याः—२-१४ क्षणिक अनित्य

अनिर्देश्यम्—१२-३ अवर्णनीय, शब्दों द्वारा जिसका वर्णन न हो सके ऐसा

अनिर्विण्णचेतसा—६-२३ विना ऊबे

अनिष्टम्—१८-१२ अशुभ, दुःख-कर

अनीश्वरम्—१६-८ ईश्वररहित

अनुकम्पार्थम्—१०-११ दया करके, दया करने के लिए

अनुचिन्तयन्—८-८ चिन्तन करता हुआ, एकाग्र होनेवाला

अनुतिष्ठन्ति—३-३१, ३२ अनु-करण करते हैं, अंगीकार करते हैं

अनुत्तमम्—७-२४ अनुपम, सर्वोत्तम

अनुत्तमम्—७-१८ जिसकी अपेक्षा दूसरी अधिक उत्तम न हो, ऐसी सर्वोत्तम (गति)

अनुद्विग्नमनाः—२-५६ उद्वेगरहित मनवाला

अनुद्वेगकरम्—१७-१५ जो दुःख न दे ऐसा

अनुपकारिणे—१७-२० उपकार न करनेवाले को—न माननेवाले को (बदला मिलने की आशा विना)

अनुपश्यति—१३-३०; १४-१९ (वह) देखता है
अनुपश्यन्ति—१५-१० (वे) देखते हैं
अनुपश्यामि—१-३१ (मैं) देखता हूं
अनुप्रपन्ना:—९-२१ आश्रय लेनेवाले—करनेवाले
अनुबन्धम्—१८-२५ कर्मों के परिणाम को, भविष्य में होनेवाले शुभ या अशुभ को
अनुबन्धे—१८-३९ परिणाम में, आखिर में, अंत में
अनुमन्ता—१३-२२ अनुमति देनेवाला
अनुरज्यते—११-३६ अनुराग—प्रीति करता है
अनुवर्तते—३-२१ (वह) अनुसरण करता है
अनुवर्तन्ते—३-२३; ४-११ (वे लोग) अनुसरण करते हैं, उनके नीचे (अधीन) रहते हैं
अनुवर्तयति—३-१६ अनुसरण करता है, चलाता है
अनुविधीयते—२-६७ पीछे दौड़ा जाता है, पिरोया जाता है
अनुशासितारम्—८-९ नियन्ता—शास्ता—ईश्वर को
अनुशुश्रुम—१-४४ सुनते आये हैं
अनुशोचन्ति—२-११ शोक करते हैं
अनुशोचितुम्—२-२५ शोक करने को
अनुषज्जते—६-४ आसक्त होता है; १८-१० लीन होता है, प्रीति करता है,
अनुसंततानि—१५-२ फैले हुए, छाये हुए, पसरे हुए (हैं)
अनुस्मर—८-७ स्मरण कर, स्मरण रख
अनुस्मरन्—८-१३ चिन्तन करता हुआ, स्मरण करता हुआ
अनुस्मरेत्—८-९ ठीक स्मरण करता है
अनेकचित्तविभ्रान्ता:— १६-१६ अनेक भ्रान्तियों में पड़े हुए, अनेक प्रकार के चित्त के संकल्पों से भ्रांत हुए
अनेकजन्मसंसिद्धिः—६-४५ अनेक जन्म के प्रयत्नों से शुद्ध हुआ, सिद्धि पाया हुआ
अनेक दिव्याभरणम्— ११-१० अनेक दिव्य आभूषणवाला
अनेकधा—११-१३ अनेक रीति से
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रम्— ११-१६ अनेक हाथ, उदर, मुख और नेत्रवाले को
अनेकवक्त्रनयनम्—११-१० अनेक

मुख और आँखोंवाले को
अनेकवर्णम्—११-२४ अनेक रंग वाले को
अनेकाद्भुतदर्शनम्— ११-१० अनेक अद्भुत दर्शनवाला, अति आश्चर्यकारक स्वरूप-वाला
अनेन—३-१०, ११ इस (यज्ञ) द्वारा; ९-१० इस (कारण) से; ११-८ इस (चर्मचक्षु) से
अन्तकाले—२-७२; ८-५ अंत-काल में, मरणकाल में
अन्तगतम्—७-२८ जिसका अंत आ गया है, जो नष्ट हो गया है
अन्तरम्—११-२० अंतर, मध्य-भाग; १३-३४ भेद
अन्तरात्मना—६-४७ चित्त से, मन लगाकर
अन्तरारामः—५-२४ जिसके अन्तर में शांति है, जिसके अन्तर में सारी क्रीड़ाएं हैं
अन्तरे—५-२७ बीच में
अन्तर्ज्योतिः—५-२४ जिसे अंतर्ज्ञान हुआ है, अन्तर में प्रकाशवान
अन्तवत्—७-२३ नाशवान, अंत-वाला
अन्तवन्तः—२-१८ नाशवान, अंतवाले
अन्तम्—११-१६ अंत को
अन्तः—१०-१९, २०, ३२, ४०; १५-३ अंत; १३-१५ अंदर; २-१६ निर्णय, अंत
अन्तःशरीरस्थम्—१७-६ अंतः-करण में रहनेवालों को, शरीर के अंतर में रहनेवाले को
अन्तःसुखः—५-२४ जिसे अंतर का आनंद है
अन्तःस्थानि—८-२२ भीतर स्थित, अंदर रहे हुए, अंतर्गत
अन्तिके—१३-१५ नजदीक, समीप में
अन्ते—७-१९ अंत में, आखिर में; ८-६ अंत में, मरणकाल में
अन्नम्—१५-१४ अन्न
अन्नसंभवः—३-१४ अन्न की उत्पत्ति
अन्नात्—३-१४ अन्न से
अन्यत्—२-३१, ४२; ७-२, ७; ११-७; १६-८ दूसरा कोई, दूसरा
अन्यत्र—३-९ दूसरे, दूसरे से, अतिरिक्त (कर्म) से
अन्यथा—१३-११ उल्टा, विपरीत
अन्यदेवताभक्ताः—९-२३ अन्य-देवता को भजनेवाले
अन्यदेवताः—७-२० दूसरे देव-ताओं को

अन्यथा—८-२६ दूसरे से, दूसरे मार्ग से

अन्यम्—१४-१९ और किसी को, अन्य को, दूसरे को

अन्यः—२-२९, २९; ६-३९; ८-२०; ११-४३; १५-१७; १६-१५; १८-६९ दूसरा; ४-३१ दूसरा, परलोक

अन्यान्—११-३४ दूसरों को

अन्यानि—२-२२ दूसरे

अन्याम्—७-५ दूसरी, ऊंची

अन्यायेन—१६-१२ अनीति से अन्यायपूर्वक

अन्ये—१-९; ४-२६; ९-१५; १७-४ दूसरे; १३-२४, २५ कुछ, कोई

अन्येन—११-४७, ४८ दूसरे के द्वारा

अन्येभ्यः—१३-२५ दूसरों के पास से

अन्वशोचः—२-११ (तू) शोक किया करता है

अन्विच्छ—२-४९ ले, खोज

अन्विताः—९-२३; १७-१ युक्त, वाले, (श्रद्धा) पूर्वक

अपनुद्यात्—२-८ टाले, दूर कर सके।

अपरम्—६-२२ दूसरे किसी को, ४-४ इधर का, दूसरा

अपरस्परसंभुतम्—१६-८ स्त्री (अपर) पुरुष (पर) के संबंध से उत्पन्न, नरमादा के संबंध से उत्पन्न, परस्पर संबंध—कार्यकारण भावरहित

अपरा—७-५, दूसरी, निम्न प्रकार की

अपराजितः—१-१७ अजेय, न हारे ऐसा

अपराणि—२-२२ दूसरे

अपरान्—१६-१४ दूसरों को

अपरिग्रहः—६-१० संग्रहरहित, अपरिग्रही

अपरिमेयाम्—१६-११ अमाप

अपरिहार्ये—२-२७ अनिवार्य (विषय में)

अपरे—४-२५, २७, २८, २९, ३० कुछ, कोई; १३-२४; १८-३ दूसरे

अपर्याप्तम्—१-१० अपूर्ण, अनंत

अपलायनम्—१८-४ पीछे न हटना, भाग न जाना, अडिग रहना

अपश्यत्—१-२६; ११-१३ देखा

अपहृतचेतसाम्—२-४४ जिनकी बुद्धि मारी गई है उनकी, अविवेकियों की

अपहृतज्ञानाः—७-१५ जिनका ज्ञान नष्ट हो गया है वे

अपात्रेभ्यः—१७-२२ अपात्रों को

अपानम्—४-२९ अपान वायु को
अपाने—४-२९ अपान वायु में
अपावृतम्—२-३२ खुला हुआ, उघड़ा हुआ
अपि—१-२७ इत्यादि, से, फिर भी, तो भी
अपुनरावृत्तिम्—५-१७ फिर देह धारण न करना, मोक्ष
अपैशुनम्—१६-२ निन्दा न करना, चुगली न खाना, अपैशुन
अपोहनम्—१५-१५ अभाव, दूर होना
अप्रकाशः—१४-१३ अंधकार, अज्ञान, विवेकशून्यता
अप्रतिमप्रभावः—११-४३ अनुपमेय प्रभाववाला, जिसकी सामर्थ्य की जोड़ नहीं
अप्रतिष्ठम्—१६-८ बिना आधार का
अप्रतिष्ठः—६-३८ आधाररहित, योग से भ्रष्ट हुआ
अप्रतीकारम्—१-४६ प्रतिकार न करनेवाले को, सामने न होनेवाले को
अप्रदाय—३-१२ बिना दिये
अप्रमेयम्—११-१७, ४२ अमाप, प्रमाण से बाहर
अप्रमेयस्य—२-१८ अमाप का
अप्रवृत्तिः—१४-१३ प्रवृत्ति का अभाव, मंदता
अप्राप्य—६-३७; ९-३; १६-२० न पाकर (न पाने से), न पाते हुए
अप्रियम्—५-२० अप्रिय, अनिष्ट वस्तु
अप्सु—७-८ पानी में
अफलप्रेप्सुना—१८-२३ फलेच्छा-रहित (पुरुष) के द्वारा
अफलाकाङ्क्षिभिः—१७-११, १७ जिन्हें फल की इच्छा नहीं उनके द्वारा, फलेच्छा का त्याग करके
अबुद्धयः—७-२४ बुद्धिहीन, अज्ञानी, मूर्ख लोग
अब्रवीत्—१-२, २७; बोला; ४-१ कहा
अभक्ताय—१८-६७ जो भक्त नहीं है उसको—उसके लिए
अभयम्—१०-४; १६-१ अभय, निर्भयता
अभवत्—१-१३ था, हुआ
अभावयतः—२-६६ ध्यान-रहित को, जिसे भक्ति नहीं उसे
अभावः—२-१६ नाश, अभाव; १०-४ मृत्यु
अभाषत—११-१४ बोला

अभिक्रमनाशः—२-४० आरंभ का नाश
अभिजनवान्—१६-१५ कुलीन
अभिजातस्य—१६-३, ४ (लेकर) जन्मे हुए का
अभिजात—१६-५ (लेकर) जन्मा हुआ
अभिजानन्ति—९-२४ (वे) पहचानते हैं, जानते हैं
अभिजनाति—४-१४; ७-१३, २५; १८-५५ (वह) अच्छी तरह जानता है, पहचानता है
अभिजायते—२-६२; ६-४१; १३-२३ उत्पन्न होता है, जन्मता है
अभितः—५-२६ सर्वत्र, सब स्थितियों में, जीते जी और मरने के बाद
अभिधास्यति—१८-६८ कहेगा, देगा
अभिधीयते—१३-१; १७-२७; १८-११ कहलाता है
अभिनन्दति—२-५७ हर्षित होता है
अभिप्रवृत्तः—४-२० तल्लीन हुआ, पूरी तरह प्रवृत्त हुआ
अभिभवति—१-४० आक्रमण करता है, डुबाये देता है
अभिभूय—१४-१० पराजय करके, दवाकर
अभिमानः—१६-४ अभिमान, गर्व
अभिमुखाः—११-२८ तरफ मुंह वाले, तरफ (होकर), अभिमुख
अभिरक्षन्तु—१-११ बराबर रक्षण करो
अभिरतः—१८-४५ निष्ठावाला, गुंथा हुआ, रत (रहकर)
अभिविज्वलन्ति—११-२८ धधकते हुए, प्रकाशमान
अभिसंधाय—१७-१२ को उद्देश्य करके, के उद्देश्य से
अभिहिता—२-३९ कही, कही हुई हैं
अभ्यधिकः—११-४३ ज्यादा, अधिक
अभ्यर्च्य—१८-४६ संतुष्ट करके, भजकर, पूजा करके
अभ्यसूयकाः—१६-१८ बहुत निंदा करने वाले, दूसरे का उत्कर्ष सहन न करनेवाले
अभ्यसूयति—१८-६७ द्वेष करता है, दोष निकालता है
अभ्यसूयन्तः—३-३२ दोष निकालने वाले
अभ्यहन्यन्त—१-१३ वज उठे, बजे
अभ्यासयोगयुक्तेन—८-८ अभ्यासरूप योग से एकाग्र हुए (चित्त) से, अभ्यास द्वारा

अभ्यासयोगेन—१२-९ चित्त को एक स्वरूप में पिरोने से, अभ्यासयोग से

अभ्यासात्—१२-१२ अभ्यास—अभ्यासमार्ग की अपेक्षा; १८-३६ अभ्याससेवन से

अभ्यासे—१२-१० अभ्यास रखने में

अभ्यासेन—६-३५ अभ्यास से

अभ्युत्थानम्—४-७ वृद्धि, जोर करना, जोर पर आना

अमलान्—१४-१४ निर्मल

अमानित्वम्—१३-७ नम्रता, आत्मस्तुति न करना

अमी—११-२१, २६, २८ ये

अमुत्र—६-४० परलोक में

अमूढ़ाः—१५-५ ज्ञानी पुरुष

अमृतत्वाय—२-१५ मोक्ष के—अमरता के लिए

अमृतस्य—१४-२७ मोक्ष का; अविनाशी का, अमृत का

अमृतम्—९-१९; १३-१२, १४-२० अमरता, मोक्ष १०-१८ अमृत के समान मधुर वचन

अमृतोद्भवम्—१०-२७ अमृत में से उत्पन्न, अमृतमंथन के समय निकला हुआ

अमृतोपमम्—१८-३७ ३८ अमृत की उपमा के लायक, अमृत-जैसा

अमेध्यम्—१७-१० यज्ञ के लिए अयोग्य, अपवित्र, अभक्ष्य

अम्बुवेगाः—११-२८ जलप्रवाह, नदियों की मोटी धार

अम्भसा—५-१० पानी से

अम्भसि—२-६७ पानी में

अयज्ञस्य—४-३१ यज्ञ न करने वाले को (के लिए)

अयतिः—६-३७ जो पूरा प्रयत्न न कर सका हो, यत्न में मंद

अयथावत्—१८-३१ अयोग्य रीति से, जो यथायोग्य न हो

अयनेषु—१-११ मार्गों में, नियुक्त स्थान में

अयशः—१०-५ अपकीर्ति, अपयश

अयम्—२-१९, २०, २०, २४, २४, २४, २५, २५, २५, ३०, ५८; ३-९, ३६; ४-३ ३१, ४०; ६-२१, ३३; ७-२५; ८-१९; ११-१; १३-३१; १५-९; १७-३ यह

अयुक्तस्य—२-६६, जिसे समत्व न हो उसे

अयुक्तः—५-१२ अयोगी, अस्थिर-चित्त; १८-२८, चंचल असावधान, अव्यवस्थित

अयोगतः—५-६ कर्मयोग के बिना

अरतिः—१३-१० अप्रीति, (सम्मिलित होने की) अरुचि

अवतिष्ठति—१४-२३ स्थिर रहता है

अवतिष्ठते—६-१८ स्थिर होता है

अवध्यः—२-३० अवध्य, जो न मारा जा सके

अवनिपालसंघैः—११-२६ राजाओं के समुदाय सहित

अवरम्—२-४९ नीचे का, तुच्छ

अवशम्—९-८ पराधीन, असहाय

अवशः—३-५; ६-४४; ८-१९; १८-६०; पराधीन, परवश, असहाय

अवशिष्यते—७-२ बाकी रहता है

अवष्टभ्य—९-८ आश्रय लेकर; १६-९ पकड़े रखकर

अवसादयेत्—६-५ नाश करे, अधःपात करे

अवस्थातुम्—१-३० खड़ा—स्थिर—रहना

अवस्थितम्—१५-११ रहे हुए को

अवस्थितः—९-४; १३-३२; प्रतिष्ठित, के आश्रित रहा हुआ

अवस्थितान्—१-२२, २७ खड़े हुओं को

अवस्थिताः—१-११, ३३; २-६; ११-३२; रहे हुए, खड़े हुए, खड़ा किये हुए

अवहासार्थम्—११-४२ मस्खरी के लिए, विनोद के लिए

अवाच्यवादान्—२-३६ न बोलने योग्य बोल

अवाप्तव्यम्—३-२२ प्राप्त करने-को, प्राप्त करने योग्य

अवाप्तुम्—६-३६ प्राप्त होना, साधना

अवाप्नोति—१५-८; १६-२३; १८-५६ प्राप्त करता है

अवाप्य—२-८ प्राप्त करके

अवाप्यते—१२-५ प्राप्त की जाती है

अवाप्स्यथ—३-११ प्राप्त होओगे

अवाप्स्यसि—२-३८, ५३; १२-१०; प्राप्त करेगा; २-२३ प्राप्त होगा

अविकम्पेन—१०-७ अचल, अविचल

अविकार्यः—२-२५ जो विकार को न प्राप्त हो

अविज्ञेयम्—१३-१५ जो न जाना जाय ऐसा

अविद्वांसः—३-२३ अज्ञानी

अविधिपूर्वकम्—९-२३; १६-१७; विधिरहित, अज्ञानपूर्वक, विना विधि के

अविनश्यन्तम्—१३-२७ अविनाशी को

अविनाशि—२-१७ नाशरहित, अविनाशी

अशक्त:—१२-११ अशक्त, असमर्थ
अशमः—१४-१२ अशांति
अशस्त्रम्—१-४६ शस्त्रहीन को
अशान्तस्य—२-६६ अशांत का, जिसे शांति न हो उसे
अशाश्वतम्—८-१५ अनित्य, अशाश्वत
अशास्त्रविहितम्—१७-५ शास्त्र-निषिद्ध, शास्त्रीय विधिरहित
अशुचिव्रता:—१६-१० अमंगल आचारवाले, अशुभ निश्चयों-वाले
अशुचि:—१८-२७ अपवित्र, मैला
अशुचौ—१८-१६ अपवित्र—अशुभ—में
अशुभात्—४-१६; ९-१ अशुभ—पाप—में से, अकल्याण में से
अशुभान्—१६-१९ पापों को, अमंगल को
अशुश्रूषवे—१८-६७ जो सुनने की इच्छा नहीं करता उसे
अशेषत:—६-२४, ३९; ७-२ पूर्ण रूप से, पूरी तरह से; १८-११ सर्वथा
अशेषेण—४-३५; १०-१६; १८-२९, ६३ नि:शेष, पूर्ण रीति से
अशोच्यान्—२-११ न शोक करने योग्य को
अशोष्य:—२-२४ जो न सूख सके
अश्नन्—५-८ खाता हुआ
अश्नन्ति—९-२० (वे) भोगते हैं, सेवन करते हैं
अश्नामि—९-२६ (मैं) सेवन करता हूं
अश्नासि—९-२७ (तू) खाता है
अश्नुते—३-४; ५-२१; ६-२८; (वह) अनुभव करता है १३-१२; १४-२० प्राप्त होता है
अश्रद्दधान:—४-४० श्रद्धारहित
अश्रद्धधाना:—९-३ श्रद्धाहीन
अश्रद्धया—१७-२८ श्रद्धा के बिना
अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्—२-१ आंसू से जिसकी आंख भरकर व्याकुल हो गई है उसे, अश्रुपूर्ण व्याकुल नेत्रवाले को
अश्रौषम्—१८-७४ (मैंने) सुना
अश्वत्थम्—१५-१, ३ अश्वत्थ को, अश्वत्थ वृक्ष को, आनेवाले क्षण तक न टिक सके ऐसे (क्षण-भंगुर) को
अश्वत्थ:—१०-२६ पीपल, अश्वत्थ वृक्ष
अश्वत्थामा—१-८ द्रोणाचार्य का पुत्र
अश्वानाम्—१०-२७ घोड़ों में
अश्विनौ—११-६, २२ (दो) अश्विनीकुमार

अष्टधा—७-४ आठ प्रकार की, आठ प्रकार के

असक्तबुद्धिः—१८-४९ अनासक्त बुद्धिवाला, जिसने आसक्ति खींच ली है

असक्तम्—९-९ १३-१४ आसक्तिरहित

असक्तः—३-७, १९, १९, २५ . फलेच्छारहित, संगरहित

असक्तात्मा—५-२१ जिसका मन आसक्त नहीं

असक्तिः—१३-९ संगरहित होना

असंगशस्त्रेण—१५-३ असंगरूपी शस्त्र से

असतः—२-१६ असत् का

असत्—९-१९; ११-३७; १३-१२; १७-२८ असत्

असत्कृतम्—१७-२२ सत्कार किये बिना, मान किए विना

असत्कृतः—११-४२अपमान किया हुआ, अपमानित

असत्यम्—१६-८ असत्य

असद्ग्राहान्—१६-१० अशुभ निश्चयों को, दुष्ट इच्छाओं को

असपत्नम्—२-८ शत्रुरहित, निष्कंटक

असमर्थः—१२-१०अशक्त,असमर्थ

असंन्यस्तसंकल्पः—६-२ जिसने संकल्पों का त्याग नहीं किया वह

असंमूढः—५-२०; १०-३; १५-१९ मोहरहित, ज्ञानी, जिसका मोह नष्ट हो गया है

असंमोहः—१०-४ मोहरहितता, अमूढ़ता

असंयतात्मना—६-३६ जिसने संयम नहीं रखा उससे, जिसका मन अपने वश में नहीं है उससे

असंशयम्—६-३५; ७-१; ८-७ वेशक, निश्चयपूर्वक

असंशयः—१८-६८ निःशंक

असि—४-३, ३६; ८-२; १०-१७; ११-३८, ४०, ४२, ४३, ५२, ५३; १२-१०, ११; १६-५; १८-६४, ६५ (तू) है

असितः—१०-१३ एक ऋषि का नाम

असिद्धौ—४-२२ निष्फलता में

असुखम्—९-३३ सुखरहित

असृष्टान्नम्—१७-१३ विना अन्नदान का, जिसमें अन्न की उत्पत्ति नहीं

असौ—११-२६; १६-१४ यह

अस्ति—२-४०, ४२, ६६; ३-२२; ४-३१, ४०; ६-१६; ७-७; ८-५; ९-२९; १०-१८, १९, ३९, ४०; ११-४३; १६-१३. १५; १८-४०; (वे) हैं; ६-१६ मिलता है, साध्य है

अस्तु—२-४७; ३-१०; ११-३१, ३६, ४० होवे
अस्थिरम्—६-२६ अस्थिर
अस्मदीयैः—११-२६ हमारे (संबंधियों) के साथ
अस्माकम्—१-७, १० हमारा
अस्मात्—१-३६ इस (पाप) से
अस्मान्—१-३६ हमें
अस्माभिः—१-३९ हमसे
अस्मि—७-८, ९, १०, ११, ११; १०-२१, २२, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१, ३३, ३६, ३७, ३८; ११-३२, ४५, ५१; १५-१८; १६-१५; १८-५५, ७३ (मैं) हूं
अस्मिन्—१-२२; २-१३; ३-३; ८-२; १३-२२; १४-११; १६-६ इसमें
अस्य—२-१७, ४०, ५९, ६५, ६७; ३-१८, ३४, ४०; ६-३९; ९-३; १७, ११-१८, ३८, ४३, ५२; १३-२१; १५-३ इसका
अस्याम्—२-७२ इसमें
अस्वर्ग्यम्—२-२ स्वर्ग से विमुख रखनेवाला
अहत्वा—२-५ न मारकर
अहरागमे—८-१८, १९ (ब्रह्मा-का) दिवस शुरू होते हुए निकलते हुए
अहम्—१-२२, २३; २-४, ७, १२; ३-२, २३, २४, २७; ४-१, ५, ७, ११; ६-३० ३३, ३४; ७-२, ६, ८, १०, ११, १२, १७, २१, २५, २६; ८-४, १४; ९-४, ७, १६, १७, १९, २२, २४, २६, २९; १०-१, २, ८, ११, १७, २०, २०, २१, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४२; ११-२३, ४२, ४४, ४६, ४८, ५३, ५४; १२-७; १४-३, ४, २७; १५-१३, १४, १५, १८; १६-१४, १९; १८-६६, ७०, ७४, ७५ मैं
अहंकारविमूढात्मा—३-२७ अहं-कार से मूढ हुआ मनुष्य
अहंकारम्—१६-१८; १८-५३, ५९ अहंकार को
अहंकारः—७-४; १३-५ शरीर में रही हुई अहंता, अहंपना, जो गुण न हो उसका आरोपण, प्रकृति के मूल-तत्त्वों में से एक
अहंकारात्—१८-५८ अहंकार से,

अहंकार के वश होकर
अहंकृतः—१८-१७ मैं कर्त्ता हूं ऐसे अहंकार का (भाव)
अहः—८-१७, २४ दिवस
अहिताः—२-३६; १६-६ शत्रु
अहिंसा—१०-५; १३-७; १६-२; १७-१४ मन, वचन, काया से किसी को पीड़ा न देना, अहिंसा
अहैतुकम्—१८-२२ हेतुरहित, रहस्य से परे
अहो—१-४५ अहो, अरे
अहोरात्रविदः—८-१७ रात और दिवस जाननेवाले
अंशः—१५-७ भाग, अवयव, अंश
अंशुमान्—१०-२१ किरणोंवाला, चमचमाता

आ

आकाशस्थितः—९-६ आकाश में रहा हुआ
आकाशम्—१३-३२ आकाश
आख्यातम्—१८-६३ कहा गया है, कहा है
आख्याहि—११-३१ (तू) कह
आगच्छेत्—३-३४ आवे, होवे
आगताः—४-१०; १४-२ आए हुए, प्राप्त हुए
आगमापायिनः—२-१४ आनेजानेवाले, जो आते हैं और जाते हैं
आचरतः—४-२३ (कर्म) करनेवाले का
आचरति—३-२१; १६-२२ आचरण में लाता है, आचरण करता है
आचरन्—३-१९ आचरण करता हुआ, (कर्म) करता हुआ
आचारः—१६-७ आचरण, सदाचार, आचार
आचार्य—१-३ हे आचार्य
आचार्यम्—१-२ आचार्यको, आचार्य के पास
आचार्यान्—१-२६ आचार्यों को
आचार्याः—१-३४ आचार्य
आचार्योपासनम्—१३-७ गुरुसेवा
आज्यम्—९-१६ घी, आहुति
आढ्यः—१६-१५ धनवान, श्रीमंत
आततायिनः—१-३६ आततायियों को (शास्त्रकार उनके छः प्रकार गिनाते हैं : जलानेवाला, विष देनेवाला, खूनी तथा स्त्री, क्षेत्र और धन हरण करनेवाला)
आतिष्ठ—४-४२ आचरण कर, धारण कर

आत्थ—११-३ (तू) कहता है

आत्मकारणात्—३-१३ अपने लिए

आत्मतृप्तः—३-१७ आत्मा में तृप्त, संतुष्ट

आत्मनः—४-४२; ५-१६; ६-५, ६, ११, १९; ८-१२; १०-१८; १६-२१, २२; १७-१९; १८-३९ आत्मा का, अपना

आत्मना—२-२५; ३-४३; ६-५, ६, २०; १०-१५; १३-२४, २८ आत्मा से—द्वारा; अपने से—द्वारा

आत्मनि—२-५५; ३-१७; ६-१८, २० आत्मा में, ४-३५, ३८; ६-२६ २९; १३-२४; १५-११ अपने बारे में, अपने अंदर; ५-२१ अंतर में

आत्मपरदेहेषु—१६-१८ अपने और पराये शरीर में

आत्मबुद्धिप्रसादजम्— १८-३७ आत्मविषयक बुद्धि के प्रसाद से उत्पन्न, आत्मज्ञान-जनित प्रसन्नता से उत्पन्न हुआ

आत्मभावस्थः—१०-११ (उनके) हृदय में स्थित, अंतःकरण में रहकर

आत्ममायया—४-६ अपनी माया से, मेरी माया के बल से

आत्मयोगात्—११-४७ अपने योगबल से, मेरी शक्ति से

आत्मरतिः—३-१७ आत्ममग्न, आत्मा में रमनेवाला

आत्मवन्तम्—४-४१ आत्मवान को, आत्मनिष्ठ को, आत्मदर्शी को

आत्मवश्यैः—२-६४ आत्मा के वश में रही हुई (इन्द्रियों) से, आत्मा के अधीन रखकर

आत्मवान्—२-४५ आत्मस्वरूप में स्थित, आत्मपरायण

आत्मविनिग्रहः—१३-७; १७-१६ मनोनिग्रह, आत्मसंयम

आत्मविभूतयः—१०-१६, १९ अपनी विभूतियां

आत्मविशुद्धये—६-१२ आत्मशुद्धि के लिए

आत्मशुद्धये—५-११ आत्मशुद्धि के लिए

आत्मसंभाविताः—१६-१७ आत्मश्लाघा करनेवाले, अपने को बड़ा माननेवाले

आत्मसंयमयोगाग्नौ—४-२७ आत्मसंयमरूप योगाग्नि में

आत्मसंस्थम्—६-२५ आत्मा में स्थिर

आत्मा—६-५, ६; ७-१८; ९-५; १०-२०; १३-२२ आत्मा
आत्मानम्—३-४३; ४-७; ६-५, १०, १५, २०, २८, २९; ९-३४; १०-१५; ११-३, ४; १३-२४, २८, २९; १८-१६, ५१ आत्मा को, अपने को
आत्मौपम्येन—६-३२ अपने साथ तुलना करके, अपने-जैसा मानकर
आत्यन्तिकम्—६-२१ अनन्त, परम
आदत्ते—५-१५ ग्रहण करता है, ओढ़ता है
आदर्शः—३-३८ दर्पण
आदिकर्त्रे—११-३७ आदिकर्त्ता को, सिरज़नहार को
आदित्यगतम्—१५-१२ आदित्य में (सूर्य में) स्थित
आदित्यवत्—५-१६ सूर्य के-जैसा, सूर्य की तरह
आदित्यवर्णम्—८-९ सूर्य के समान तेजवाले को
आदित्यानाम्—१०-२१आदित्यों-में
आदित्यान्—११-६ आदित्यों को
आदिदेवम्—१०-१२ आदिदेव को, देवों में प्रथम को
आदिदेवः—११-३८ देवों में प्रथम
आदिम्—११-१६ आदि को
आदिः—१०-२ उत्पत्तिकारण आदिकारण; १०-२०, ३२; १५-३ आदि आरम्भ
आदौ—३-४१ प्रथम; ४-४ पहले
आद्यन्तवन्तः—५-२२ आदि और अंतवाले
आद्यम्—८-२८; ११-३१, ४७; १५-४ प्रथम, आदिकारणरूप आदि में विद्यमान
आधत्स्व—१२-८ लगा, चिपका, पिरो
आधाय—५-१० अर्पण करके; ८-१२ धारण करके, स्थापित करके
आधिपत्यम्—२-८ मुखियापन, प्रभुत्व
आपन्नम्—७-२४ प्राप्त हुए को
आपन्नाः—१६-२० प्राप्त हुए, प्राप्त होकर
आपः—२-२३, ७० पानी; ७-४ पानी, रस, जलतन्मात्रा
आपूर्य—११-३० पूरा करके, भर करके
आपूर्यमाणम्—२-७० चारों ओर से पूर्ण होते हुए—भरते हुए (को)
आप्तुम्—५-६; १२-९ पाने—प्राप्त करने (की)

आप्नुयाम्—३-२ (मैं) प्राप्त करूं, पाऊं
आप्नुवन्ति—८-१५ (वे) प्राप्त करते हैं
आप्नोति—२-७०; ३-१९; ४-२१; ५-१२; १८-४७, ५० प्राप्त करता है
आब्रह्मभुवनात्—८-१६ ब्रह्मलोक तक (के)
आयुधानाम्—१०-२८ शस्त्रों में, हथियारों में
आयु:सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धना:—१७-८ आयुष्य, उत्साह (सत्त्व), बल, आरोग्य, आनन्द (सुख) और रुचि बढ़ानेवाले
आरभते—३-७ आरंभ करता है
आरभ्यते—१८-२५ आरंभ किया जाता है, शुरू किया जाता है
आरम्भ:—१४-१२ (कर्मों का) आरम्भ
आरुरुक्षो:—६-३ ऊपर चढ़ने की, प्राप्त करने की—इच्छावाले को, साधन करने वाले को, उत्थान चाहनेवाले को
आर्जवम्—१३-७; १६-१; १७-१४; १८-४२ सरलता
आर्त्त:—७-१६ (रोगादि के भय से) दुखी
आवयो:—१८-७० हम दोनों का
आवर्तते—८-२६ पीछे फिरता है
आवर्तिन:—८-१६ पीछे लौटनेवाले
आविश्य—१५-१३, १७ प्रवेश करके
आविष्टम्—२-१ घिरे हुए को, दीन बने हुए को
आविष्ट:—१-२८ घिरा हुआ, दीन बना हुआ
आवृत्तम्—३-३८, ३९; ५-१५ ढका हुआ
आवृत्त:—३-३८ ढका हुआ
आवृता—१८-३२ ढकी हुई, घिरी हुई
आवृता:—१८-४८ ढके हुए, घिरे हुए
आवृत्तिम्—८-२३ पीछे लौटना, पुनर्जन्म
आवृत्य—३-४०; १३-१३; १४-९ ढांककर, व्याप्त (आवृत) कर
आवेशितचेतसाम्—१२-७ जिनका चित्त पिरोया हुआ है उनका करके, लगाकर, एकाग्र करके
आव्रियते—३-३८ ढका जाता है, घिरा रहता है
आशयात्—१५-८ स्थान में से, आसपास के मंडल में से
आशापाशशतै:—१६-१२ आशा-

कहते हैं ४-३
आहो—१७-१ अथवा

इ

इक्ष्वाकवे—४-१ मनुपुत्र इक्ष्वाकु को
इङ्गते—६-१९; १४-२३ हिलता है
इच्छ—१२-९ इच्छा रख
इच्छति—७-२१ इच्छा करता है
इच्छन्तः—८-११ इच्छा करते हुए, प्राप्ति की इच्छा से,
इच्छसि—११-७; १८-६०, ६३ (तू) इच्छा करता है
इच्छा—१३-६ इच्छा
इच्छाद्वेषसमुत्थन—७-२७ इच्छा और द्वेष से उत्पन्न हुए (...के द्वारा)
इच्छामि—१-३५; ११-३१, ४६; १८-६ (मैं) इच्छा करता हूं
इज्यते—१७-११, १२ अनुष्ठान किया जाता है, यज्ञ किया जाता है
इज्यया—११-५३ यज्ञ से—के द्वारा
इतरः—३-२१ अन्य, दूसरे
इतः—७-५ इससे (इसकी अपेक्षा); १४-१ इस संसार से—इस देह को छोड़ने के बाद
इति—१-३५, ४४ इत्यादि ऐसा; लिए, उससे १५-२० यह; १७-२० ऐसा (मान-कर)
इदम्—१-१०, २१, २८; २-१, २, १०; ३-३१, ३८; ७-२, ५; ७-७ १३; ८-२२, २८; ९-१ २, ४; १०-४२; ११-१९, २०, ४१, ४७, ४९, ५१, ५२; १२-२०; १३-१; १४-२; १५-२०; १६-१३, २१; १८-४६, ६७, ६८ यह २-१७ यह (जगत्)
इदानीम्—११-५१; २८-३६ अब
इन्द्रियकर्माणि—४-२७ इन्द्रिय-कर्मों को
इन्द्रियगोचराः—१३-५ इन्द्रियों के विषय
इन्द्रियग्रामम्—६-२४; १२-४ इन्द्रियों के समुदाय को, समस्त इन्द्रियों को
इन्द्रियस्य—३-३४, ३४ इन्द्रिय का
इन्द्रियाग्निषु—४-२६ इन्द्रियरूपी अग्नि में
इन्द्रियाणाम्—२-८, ६७ इन्द्रियों का; १०-२२ इन्द्रियों में
इन्द्रियाणि—२-६०, ६१, ६८; ३-४०, ४२; ५-९; १३-५ इन्द्रियां (पांच

ई

ईदृक्—११-४९ ऐसा
ईदृशम्—२-३२; ६-४२ ऐसा इस प्रकार का
ईशम्—११-१५, ४४ नियंता को, ईश को, ईश्वर को
ईश्वरभावः—१८-४३ प्रभुता, राज्यकर्त्तापन
ईश्वरम्—१३-२८ ईश्वर को
ईश्वरः—४-६ स्वामी; १५-८ जीवरूप वना हुआ यह मेरा अंशरूपी ईश्वर; १५-१७; १८-६१ ईश्वर, परमात्मा; १६-१४ ईश्वर, सर्वसम्पन्न
ईहते—(वे) इच्छा करते हैं
ईहन्ते—१६-१२ (वे) इच्छा करते हैं

उ

उक्तम्—११-१, ४१; १२-२०; १३-१८; १५-२० कहा हुआ उक्त, कहा गया
उक्तः—१-२४; ८-२१; १३-२२ कहा गया, कहा हुआ
उक्ताः—२-१८ कहे गये हैं, कहा है
उक्त्वा—१-४७; २-९; ११-९, २१, ५० कहकर, बोलकर
उग्रकर्माणः—१६-९ घोर कर्म करनेवाले, भयानक काम करनेवाले
उग्ररूपः—११-३१ भयंकर रूपवाला, उग्ररूप
उग्रम्—११-२० उग्र
उग्राः—११-३० उग्र
उग्रैः—११-४८ उग्र (तपों) से
उच्चैः—१-१२ ऊंचे स्वर से
उच्चैःश्रवसम्—१०-२७ उच्चैःश्रवा नाम का जो इन्द्र का घोड़ा है, उसे
उच्छिष्टम्—१७-१० जूठन
उच्छोषणम्—२-८ चूस लेनेवाले
उच्यते—२-२५, ४८, ५५, ५६; ३-६, ४०; ६-३, ४, ८, १८; ८-१, ३; १३-१२, १७, २०; १४-२५; १५-१६; १७-१४, १५, १६, २७, २८; १८-२३, २५, २६, २८ कहाता है, कहा जाता है
उत—१-४०; १४-९, ११ सचमुच भी
उत्क्रामति—१५-८ छोड़ता है, त्यागता है
उत्क्रामन्तम्—१५-१० (देह) छोड़ते हुए को, (शरीर का) त्याग करते हुए को
उत्तमविदाम्—१४-१४ ज्ञानियों का
उत्तमम्—४-३; ६-२७; ९-२; १४-१, १८-६ उत्तम

उत्तमः—१५-१७, १८ उत्तम
उत्तमाङ्गैः—११-१७ मस्तकों से, मस्तकों-सहित
उत्तमौजाः—१-६ एक राजा का नाम
उत्तरायणम्—८-२४ उत्तरायण
उत्तिष्ठ—२-३, ३७; ४-४२; ११-३३ खड़ा हो, उठ
उत्थिता—११-१२ प्रकट हुई, प्रकाशित हुई
उत्सन्नकुलधर्माणाम्— १-४४ जिनके कुलधर्म का नाश हुआ है उनका
उत्सादनार्थम्—१७-१९ विनाश के लिए, नाश के हेतु
उत्साद्यन्ते—१-४३ नाश को प्राप्त होते हैं, नष्ट हो जाते हैं
उत्सीदेयुः—३-२४ नष्ट हो जायं, भ्रष्ट हो जायं
उत्सृजामि—९-१९ बरसाता हूं, गिरने देता हूं
उत्सृज्य—१६-२३; १७-१ त्यागकर, छोड़कर
उदपाने—२-४६ कुएं में, तालाब में
उदाराः—७-१८ उदार, सुन्दर, अच्छे
उदासीनवत्—९-९; १४-२३ उदासीन-जैसा
उदासीनः—१२-१६ तटस्थ, उदासीन
उदाहृतम्—१३-६; १७-१९, २२ कहा है, कहा हुआ है; १८-२२, २४, ३९ कहलाया है, कहाता है
उदाहृतः—१५-१७ कहा हुआ, कहाता है
उदाहृत्य—१७-२४ उच्चारण करके
उद्दिश्य—१७-२१ उद्देश्य करके—रखकर
उद्देशतः—१०-४० दृष्टान्तरूप, सारांश में
उद्धरेत्—६-५ उद्धार करे
उद्भवः—१०-३४ उत्पत्ति, उत्पत्तिकारण
उद्यताः—१-४५ तैयार
उद्यम्य—१-२० चढ़ाकर, उठाकर
उद्विजते—१२-१५, उद्वेग—संताप—क्षोभ पाता है
उद्विजेत्—५-२० संताप पाये, दुःख माने, दुखी हो
उन्मिषन्—५-९ आंख खोलते
उपजायते—२-६२, ६५; १४-११ उत्पन्न होता है, का उद्भव होता है
उपजायन्ते—१४-२ उत्पन्न होते हैं
उपजुह्वति—४-२५ होम करते

हैं, यज्ञ करते हैं
उपदेक्ष्यन्ति—४-३४ उपदेश देंगे, समझावेंगे
उपद्रष्टा—१३-२२ पास में रह-कर देखने वाला, साक्षी, सर्व-साक्षी
उपधारय—७-६; ९-६ जान
उपपद्यते—२-३; १८-७ उचित है, शोभा देता है, योग्य है; ६-३९ मिल सकता है; १३-१८ योग्य बनता है
उपपन्नम्—२-३२ आया हुआ, प्राप्त हुआ
उपमा—६-१९ उपमा, तुलना
उपयान्ति—१०-१० पाते हैं
उपरतम्—२-३५ रुका हुआ, पीछे हटा हुआ
उपरमते—६-२० स्थिर होता है, शांत हो जाता है
उपरमेत्—६-२५ स्थिर हो, शांत हो जाय
उपलभ्यते—१५-३ उपलब्ध होता है, जाना जा सकता है, देखने में आता है
उपलिप्यते—१३-३२, लिप्त होता है, लिपटता है
उपविश्य—६-१२ बैठकर
उपसंगम्य—१-२ पास जाकर
उपसेवते—१५-९ भोगता है, सेवन करता है
उपहन्याम्—३-२४ नाश करूं
उपायतः—६-३६ उपाय के द्वारा
उपाविशत्—१-४७ बैठ गया
उपाश्रिताः—४-१०; १६-११ आश्रय लेनेवाले
उपाश्रित्य—१४-२; १८-५७ आश्रय लेकर
उपासते—९-१४, १५; १२-२, ६; १३-२५ पूजते हैं, उपा-सना करते हैं
उपेताः—१२-२ से युक्त, युक्त हुए
उपेतः—६-३७ से युक्त, युक्त हुआ
उपेत्य—८-१५, १६ पहुंचकर, पाकर
उपैति—६-२७; ८-१०, २८ पास जाता है, प्राप्त होता है
उपैष्यसि—९-२८ (तू) प्राप्त होगा
उभयविभ्रष्टः—६-३८ दोनों (कर्म और योग-मार्ग) से गया हुआ (गिरा हुआ)
उभयोः—१-२१, २४; २-१० १६; ५-४ दो की, दोनों की; १-२७ दोनों में
उभे—२-५० दोनों
उभौ—२-१९; ५-२; १३-१९ दोनों

उरगान्—११-१५ सर्पों को
उल्वेन—३-३८ जेर से
उवाच—१-१, २५; २-१, १०; ३-१० बोला
उशना—१०-३७ इस नाम के प्राचीन कवि शुक्राचार्य
उषित्वा—६-४१ रहकर

ऊ

ऊष्मपाः—११-२२ गरम ही पीने वाले पितर
ऊर्जितम्—१०-४१ प्रभावशाली
ऊर्ध्वमूलम्—१५-५ ऊंचे मूलवाला
ऊर्ध्वम्—१४-१८; १५-२ ऊंचे, ऊपर; १२-८ पीछे, उपरान्त

ऋ

ऋक्—९-१७ ऋग्वेद, ऋग्वेद का मंत्र (ऋचा)
ऋच्छति—२-७२; ५-२९ जाता है, पाता है
ऋतम्—१०-१४ सत्य
ऋतूनाम्—१०-३५ ऋतुओं में
ऋते—११-३२ बिना
ऋद्धम्—२-८ समृद्ध, धन-धान्यसंपन्न
ऋषयः—५-२५; १०-१३ ऋषि-गण
ऋषिभिः—१३-४ ऋषियों ने, ऋषियों के द्वारा
ऋषीन्—११-१५ ऋषियों को

ए

एकत्वम्—६-३१ एकत्व (को)
एकत्वेन—९-१५ एकरूप से, ब्रह्म के सिवा दूसरा कुछ नहीं है, ऐसा जानकर
एकभक्तिः—७-१७ एक की (मेरी) ही भक्ति करनेवाला, एकनिष्ठ भक्त
एकम्—३-२; १०-२५; १३-५ एक; ५-१, ४, ५; १८-२०, ६६ एक को
एकया—८-२६ एक से (ज्ञान-मार्ग से)
एकस्थम्—११-७, १३; १३-३० एक ठिकाने स्थित, एक रूप में स्थित
एकस्मिन्—१८-२२ एक में
एकः—११-४२; १३-३३ एक, अकेला
एका—२-४१ एक, एकरूप
एकाकी—६-१० एकाकी, अकेला
एकाक्षरम्—८-१३ एकाक्षरी
एकाग्रम्—६-१२ एकाग्र
एकाग्रेण—१८-७२ एकाग्र (चित्त) से

एकान्तम्—६-१६ केवल, बिल्कुल
एकांशेन—१०-४२ एक अंश—भाग—से
एकेन—११-२० अकेले के द्वारा
एके—१८-३ कई एक, कितने ही
एतत्—२-३ ६; ३-३२; ४-३, ४; ६-२६, ३९, ४२; १०-१४; ११-३ ३५; १२-११; १३-१, ६, ११, १८; १५-२०; १६-२१; १७-१६, २६; १८-६३, ७२, ७५ यह
एतद्योनीनि—७-६ ये (दोनों प्रकृतियां) जिनकी उत्पत्ति का कारण हैं वे भूत
एतयोः—५-१ इन (दो) में से
एतस्य—६-३३ इसकी, उसकी
एतानि—१४-१२, १३; १५-८; १८-६, १३ ये
एतान्—१-२२, २५, ३५, ३६; १४-२०, २१, २६, इनको
एताम्—१-३; ७-१४; १०-७; १६-९ इसको
एतावत—१६-११ इतना मात्र, 'भोग ही सर्वस्व है' ऐसा (निश्चय करनेवाले)
एति—४-९; ८-६; ११-५५ जाता है, प्राप्त होता है
एते—१-२३, ३८; २-१५; ४-३०; ७-१८; ११-३३ १८-१५ ये, ८-२६, २७ ये दो
एतेन—३-६९; १०-४२ इससे, इसके द्वारा
एतेषाम्—१-१० इन (लोगों) का
एतैः—१-४३; ३-४०; १६-२२ इनके द्वारा
एधांसि—४-३७ ईंधन, लकड़ियां
एनम्—२-१९, २१, २३, २५, ४-४२; ६-२७; ११-५०; १५-३, ११ इसको, इनको
एनाम्—२-७२ इसको
एभिः—७-१३; १८-४० इनके द्वारा, इनसे
एभ्यः—३-१२ इनको ७-१३ इनसे
एव—१-१, ६, ८ इत्यादि, और, वैसे ही, भी, ही
एवम्—१-२४ इत्यादि, ऐसे, इस प्रकार; २-२५, २६ ऐसा; २-३८ ऐसा करने से
एवंरूपः—११-४८ ऐसे रूपवाला
एवंविधः—११-५३, ५४ इस भांति का, इस प्रकार का
एषः—३-१०, ३७, ४०; १०-४०; १८-५९ यह, ये
एषा—२-३९, ७२; ७-१४ यह
एषाम्—१-४२ इनके
एष्यति—१८-६८ आयेगा, प्राप्त होगा

एष्यसि—८-७; ९-३४; १८-६५ (तू) आयेगा, पायेगा

ऐ

ऐकान्तिकस्य—१४-२७ उत्तम

२६, २९; ३-३७, ४१; —परम—अखंड, एकरस-(का)

ऐश्वरम्—९-५; ११-३, ८, ९ ईश्वरीय

ऐरावतम्—१०-२७ ऐरावत हाथी (को)

ओ

ओजसा—१५-१३ तेज से, बल से; शक्ति से

ओषधीः—१५-१३ अनाज को, वनस्पतियों को

ओम्—८-१३ प्रणव, ओंकार; १७-२३, २४ ओम्

ओंकारः—९-१७ प्रणव

औ

औषधम्—९-१६ (यज्ञ की) वनस्पति

क

कच्चित्—६-३८; १८-७२ क्या यह सच है? कुछ भी, क्या

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्ष-विदाहिनः—१७-९ कड़वे, खट्टे, खारे; बहुत उष्ण, तीखे, रूखे, जलन पैदा करनेवाले

कतरत्—२-६ (दो में से) कौन-सा, क्या

कथम्—१-३७, ३९; २-४, २१; ४-४; ८-२; १०-१७; १४-२१ क्यों, कैसे

कथय—१०-१८ (तू) कह

कथयतः—१८-७५ कहनेवाले (से)

कथयन्तः—१०-९ कथन करते हुए, कीर्तन करते हुए

कथयिष्यन्ति—२-३४ (वे) कहेंगे

कथयिष्यमि—१०-१९ (मैं) कहूंगा

कदाचन—२-४७; १८-६७ कभी भी

कदाचित्—२-२० कभी-कभी

कन्दर्पः—१०-२८ कामदेव

कपिध्वजः—१-२० जिसकी ध्वजा पर वानर (हनुमान) है वह, अर्जुन

कपिलः—१०-२६ कपिल मुनि

कम्—२-२१ किसको

कमलपत्राक्ष—११-२ कमल-पत्र-जैसी आंखवाले हे कृष्ण

कमलासनस्थम्—११-१५ कमल के आसन पर बैठे हुए (ब्रह्मा) को, कमलासन पर विराजनेवाले को

करणम्—१८-१४, १८ साधन, इन्द्रिय (५ कर्मेन्द्रियां, ५ ज्ञानेन्द्रियां, मन तथा बुद्धि)

करिष्यति—३-३३ करेगा, करे

करिष्यसि—२-३३; १८-६० (तू) करेगा

करिष्ये—१८-७३ (मैं) करूंगा

करुणः—१२-१३ दयावान

करोति—४-२०; ५-१०; ६-१; १३-३१ (वह) करता है

करोमि—५-८ (मैं) करता हूं

करोषि—९-२७ (तू) करता है करे

कर्णम्—११-३४ कर्ण को

कर्णः—१-८ कुन्ती का पुत्र कर्ण

कर्त्तव्यम्—३-२२ करने योग्य, करने का

कर्तव्यानि—१८-६ करनेयोग्य, करने चाहिए

कर्त्ता—३-२४, २७; १८-१४, १८, १९, २६, २७, २८ करनेवाला, कर्त्ता

कर्तारम्—४-१३; १४-१९; १८-१६ कर्त्ता को, करनेवाले को

कर्तुम्—१-४५; २-१७; ३-२०; ९-२; १२-११; १६-२४; १८-६० करने को

कर्तृत्वम्—५-१४ कर्त्तापन

कर्म—२-४९; ३-५, ८, ९, १५, १९, २४; ४-९, १५, १६, १८, २१, २३, ३३; ५-११; ६-१, ३; ७-२९; ८-१; १६-२४; १७-२७; १८-३, ५, ८, ९, १०, १५,१८, १९, २३, २४, २५, ४३, ४४, ४७, ४८ कर्म

कर्मचोदना—१८-१८ कर्म की प्रेरणा

कर्मजम् २-११ कर्म से उत्पन्न हुए (को)

कर्मजा—४-१२ कर्मजन्य, कर्म से उत्पन्न हुई

कर्मजान्—४-३२ (उनको) कर्म से उत्पन्न हुए (जात)

कर्मणः—३-१ कर्म से कर्म की अपेक्षा १३-९ कर्म से, कर्म के सिवा; ४-१७; १४-१६; १८-७, १२ कर्म का—की

कर्मणा—३-२०; १८-६० कर्म-से, कर्म द्वारा

कर्मणाम्—३-४; ४-१२; ५-१; १४,१२; १८-२ कर्मों का

कर्मणि—२-४७; ३-१, २२, २३, २५; ४-१८, २०; १४-९; १७-२६; १८-४५ कर्म में, कर्म के सम्बन्ध में

कर्मफलत्यागः— १२-१२ कर्म के फल का त्याग

कर्मफलत्यागी—१८-११ कर्म के-फल का त्याग करने वाला

कर्मफलप्रेप्सुः—१८-२७ कर्म-फलेच्छु, कर्म-फल की इच्छा-वाला

कर्मफलसंयोगम्—५-१४ कर्म और फल की सन्धि—मेल

कर्मफलहेतुः—२-४७ कर्म के फल में हेतु (इच्छा) रखनेवाला

कर्मफलम्—५-१२; ६-१ कर्म के फल को

कर्मफलासङ्गम्—४-२० कर्म के फल के संबंध में आसक्ति को, कर्मफलासक्ति

कर्मफले—४-१४ कर्म के फल के सम्बन्ध में

कर्मबन्धनः—३-९ कर्म के बन्धन-वाला

कर्मबन्धनम्—२-३९ कर्म के बन्धन को

कर्मबन्धनै—९-२८ कर्मबन्धनों से

कर्मभिः—३-३१; ४-२४ कर्मों से, कर्मों द्वारा

कर्मयोगम्—३-७ निष्काम कर्म को, कर्मयोग को

कर्मयोगः—५-२, २ कर्मों का योग, कर्मयोग

कर्मयोगेन—३-३; १३-२४ कर्मयोग द्वारा

कर्मसङ्गिनाम्—३-३६ जो कर्मों में आसक्त हैं ऐसे मनुष्यों की, कर्म में आसक्तिवालों की

कर्मसङ्गिषु—१४-१५ कर्मकांडियों में, कर्मसंगी लोगों में

कर्मसङ्गेन—१४-७ कर्म के पाश से, कर्म के संग से—आसक्ति से

कर्मसमुद्भवः—३-१४ कर्म से जिसकी उत्पति होती है वह, कर्म से होता है

कर्मसंग्रहः—१८-१८ कर्म की वस्तु, कर्म के अंग

कर्मसंज्ञितः—८-३ कर्मसंज्ञा से युक्त, कर्म कहलाता है

कर्मसंन्यासात्—५-२ कर्मत्याग की अपेक्षा

कर्मसु—२-५०; ६-४, १७; ९-९ कर्मों से

कर्माणि—२-४८; ३-२७, ३०; ४-१४, ४१; ५-१०, १४; ९-९; १२-६, १०; १३-२९; १८-६, ११, ४१ कर्म (सम्पूर्ण श्रेष्ठ कर्म) कर्मों को

कर्मानुबन्धीनि—१५-२ कर्मों के वन्धन उत्पन्न करनेवाले
कर्मिभ्यः—६-४६ कर्मठों की अपेक्षा, कर्मकांडियों की अपेक्षा
कर्मेन्द्रियाणि—३-६ कर्म करने-वाली इन्द्रियों को, कर्मेन्द्रियों को
कर्मेन्द्रियैः—३-७ कर्म करनेवाली इन्द्रियों द्वारा
कर्षति—१५-७ खींचता है, आकर्षित करता है
कर्षयन्तः—१७-६ क्षीण करते हुए, कष्ट देते हुए
कलयताम्—१०-३० गिनती करनेवालों में, गिननेवालो में
कलेवरम्—८-५, ६ शरीर को, देह को
कल्पक्षये—९-७ प्रलयकाल में, कल्प के अंत में
कल्पते—२-१५; १४-२६; १८-५३ के योग्य होता है
कल्पादौ—९-७ उत्पत्तिकाल में: कल्प के आरम्भ में
कल्याणकृत्—६-४० पुण्यवान, कल्याणमार्गपर चलनेवाला
कवयः—४-१४; १८-२ विद्वान पुरुष, ज्ञानी लोग
कविम्—८-९ सर्वज्ञ को
कविः—१०-३७ कवि
कवीनाम्—१०-३७ कवियों में
कश्चन—३-१८; ६-२; ७-२६; ८-२७ कोई भी
कश्चित्—२-१७, २९; ३-५, १८; ६-४०; ७-३; १८-६९ कोई, कोई एक
कश्मलम्—२-२ मोह, मलिनता
कस्मात्—११-३७ किससे, कैसे, क्यों
कस्यचित्—५-१५ किसी का (भी)
कः—८-२; ११-३१; १६-१५ कौन
का—१-३६; २-२८, ५४; १७-१ क्या, कैसी
काङ्क्षति—५-३; १४-२२; १८-५४ इच्छा करता है १२-१७ आशाएं बांधता है
काङ्क्षन्तः—४-१२ चाहते हुए
काङ्क्षितम्—१-३३ इच्छित
काङ्क्षे—१-३२ (मैं) इच्छा करता हूं, चाहता हूं
कामकामाः—९-२१ कामी, फल की इच्छा करनेवाले
कामकामी—२-७० विषयेच्छु, कामवाला, फल चाहनेवाला
कामकारतः—१६-२३ स्वेच्छा से अपनी इच्छा से
कामकारेण—५-१२ कामनाद्वारा, कामनावाला होकर
कामक्रोधपरायणाः—१६-१२ काम-

क्रोध में फंसे हुए

कामक्रोधवियुक्तानाम्—५-२६ जिन्होंने काम और क्रोध त्याग दिये हैं उनका

कामक्रोधोद्भवम्—५-२३ काम और क्रोध से उत्पन्न

कामधुक्—१०-२८ मनचाही वस्तु देनेवाली गाय, कामधेनु

कामभोगार्थम्—१६-१२ विषय-भोग के लिए

कामभोगेषु—१६-१६ विषय भोगों में

कामम्—१६-१०, १८; १८-५३ विषयभोगेच्छा को, काम को

कामरागबलान्विता:—१७-५ विषयेच्छा और भोगाभिलाषा के बल से युक्त काम और राग के बल से प्रेरित

कामरागविवर्जितम्—७-११ काम और राग से रहित

कामरूपम्—३-४३ कामरूप को

कामरूपेण—३-३९ कामरूप से

कामसंकल्पवर्जिताः — ४-१९ कामना और संकल्परहित

कामहतुकम्—१६-८ विषय-भोग जिसका हेतु है ऐसा

काम्—६-३७ कैसी, कौनसी

कामः—२-६२; १६-२१ कामना; ३-३७; ७-११ काम

कामात्—२-६२ कामना से

कामात्मानः—२-४३ कामनावाले पुरुष

कामान्—२-५५, ७१; ६-२४; ७-२२ कामनाओं को

कामाः—२-७० कामनाएँ, संसार के भोग

कामेप्सुना—१८-२४ फलभोगार्थी से, भोग की इच्छा रखनेवाले से

कामैः—७-२० विषयों से, कामनाओं से

कामोपभोगपरमाः— १६-११ विषयभोगों को उत्तम वस्तु माननेवाले, विषगभोग में मस्त हुए, कर्मों के परम भोगी

काम्यानाम्—१८-२ कामनावाले, कामना से उत्पन्न

कायक्लेशभयात्—१८-८ काया-के कष्ट के भय से

कायशिरोग्रीवम्—६-१३ शरीर, सिर और गर्दन

कायम्—११-४४ शरीर को

कायेन ५-११ शरीर से—के द्वारा कारणम् ६-३; १३-२१ साधना, हेतु, कारण

कारणानि—१८-१३ कारण

कारयन्—५-१३ करवाता हुआ

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः— २-७ मोहसे जिसका स्वभाव दूषित

कुरुक्षेत्रे—१-१ (कर्मक्षेत्र)—देह-में), जहां पांडव-कौरवों के मध्य युद्ध हुआ था उस क्षेत्र में, कुरुक्षेत्र में
कुरुते—३-२१; ४-३७ करता है
कुरुनन्दन—२-४१; ६-४३ १४-१३ हे कुरुनंदन (अर्जुन)
कुरुप्रवीर—११-४८ हे कुरुओं में श्रेष्ठ—महान् वीर
कुरुवृद्धः—१-१२ कुरुओं में वृद्ध (भीष्म)
कुरुश्रेष्ठ—१०-१९ हे कुरुओं में उत्तम (अर्जुन)
कुरुष्व—९-२७ कर
कुरुसत्तम्—४-३१ हे कुरुओं में श्रेष्ठ (अर्जुन)
कुरून्—१-२५ कौरवों को
कुर्यात्—३-२५ करे
कुर्याम्—३-२४ (मैं) करूं
कुर्वन्—४-२१; ५-७, १३; १२-१०; १८-४७ करता हुआ
कुर्वन्ति—३-२५; ५-११ (वे) करते हैं
कुर्वाणः—१८-५६ करता हुआ
कुलक्षयकृतम्—१-३८, ३९ कुल के नाश से उत्पन्न
कुलक्षये—१-४० कुल के नाश से, कुलनाश होने से
कुलघ्नानाम्—१-४२, ४३ कुल-घातकों के
कुलधर्माः—१-४०, ४३ कुल के धर्म
कुलम्—१-४० कुल को
कुलस्य—१-४२ कुल का
कुलस्त्रियः—१-४१ कुल की स्त्रियां, कुलीन स्त्रियां
कुले—६-४२ कुटुम्ब में, कुल में
कुशले—१८-१० सुखकर कल्याणकारी, सहल
कुसुमाकरः—१०-३५ वसंत ऋतु
कूटस्थम्—१२-३ सर्वदा एकरूप, धीर
कूटस्थः—६-८; १५-१६ निर्विकारी, अकम्पवान, अविचल, स्थिर
कूर्मः—२-५८ कछुवा
कृतकृत्य,—१५-२० कृतार्थ
कृतनिश्चयः—२-३७ जिसने निश्चय किया है वह, निश्चय करके
कृतम्—४-१५; १७-२८; १८-२३ किया हुआ
कृताञ्जलिः—११-१४ ३५ जिसने हाथ जोड़े हैं वह, हाथ जोड़कर
कृतान्ते—१८-१३ जिसमें सर्व कर्म की समाप्ति है उसमें (शंकर), (सांख्य) सिद्धांत में सांख्यशास्त्र में

कृतेन—३-१८ करने से, कर्म से, कर्म करने से

कृत्वा—२-३८; ४-२२; ५-२७; ६-१२,२५; ११-३५; १८-८, ६८ करके

कृत्स्नकर्मकृत्—४-१८ सब कर्म करनेवाला, संपूर्ण कर्म करनेवाला

कृत्स्नवत्—१८-२२ पूर्ण-जैसा

कृत्स्नवित्—३-२९ सर्वज्ञ, ज्ञानी

कृत्स्नस्य—७-६ संपूर्ण (जगत) का

कृत्स्नम्—१-४०; ७-२९; ९-८; १०-४२; ११-७; १३; १३-३३ समस्त

कृपणाः—२-४९ दान, पामर, अज्ञानी, दया के पात्र

कृपया—१-२७ २-१ करुणा से व्याकुलता से, खेद से

कृपः—१-८ कृपाचार्य

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यम्—१८-४४ खेती, गोरक्षा और व्यापार

कृष्ण—१-२८, ३२, ४१; ५-१; ६-३४, ३७, ३९; ११-४१; १७-१ हे कृष्ण

कृष्णम्—११-३५ कृष्ण को

कृष्णः—८-२५ कृष्ण पक्ष; १८-७८ कृष्ण

कृष्णात्—१८-७५ कृष्ण के पास से

के—१२-१ कौन, कौन-से

केचित्—११-२१, २७; १३-२४ कई एक, कुछ

केन—३-३६ किससे

केनचित्—१२-१९ जिस किसी से

केवलम्—४-२१; १८-१६ केवल, मात्र

केवलैः—५-११ मात्र, केवल (से)

केशव—१-३१; २-५४; ३-१; १०-१४ हे केशव

केशवस्य—११-३५ केशव का

केशवार्जुनयोः—१८-७६ केशव और अर्जुन का, केशव और अर्जुन के बीच का

केशिनिषूदन—१८-१ केशीदैत्य का नाश करनेवाले हे कृष्ण

केषु—१०-१७ किन में,

कैः—१-२२ किनके साथ; ४-२१ किन (चिह्नों) द्वारा, कैसे, किन-किनके द्वारा

कौन्तेय—२-१४, ३७, ६०; ३-९ ३९; ५-२२; ६-३५; ७-८; ८-६, १६; ९-७, १०, २३, २७, ३१; १३-१, ३१; १४-४, ७; १६-२०, २२; १८-४८, ५०, ६०, हे कुन्तीपुत्र, अर्जुन

कौन्तेयः—१-२७ कुन्तीपुत्र, अर्जुन

कौमारम्—२-१३ कुमारावस्था

[illegible] कुशलता

क्रतुः—९-१६ यज्ञ का संकल्प

क्रियते—१७-१८, १९; १८-९, २४ किया जाता है
क्रियन्ते—१७-२५ किये जाते हैं
क्रियमाणानि—३-२७; १३-२९ किये जाते हुए, किये हुए
क्रियाभिः—११-४८ क्रियाओं से
क्रियाविशेषबहुलाम्—२-४३ अनेक प्रकार के कर्मों को फैलाने वाली, बहुत-सी क्रियाओं के विस्तारवाली
क्रूरान्—१६-१९ क्रूरों को
क्रोधम्—१६-१८; १८-५३ क्रोध को क्रोधः—२-६२; ३-३७; १६-४, २१ क्रोध
क्रोधात्—२-६३ क्रोध से
क्लेदयन्ति—२-२३ भिगोती हैं
क्लेशः—१२-५ कष्ट
क्लैब्यम्—२-३ नपुंसकता, नामर्दी, कायरता
क्वचित्—१८-१२ कभी भी, कभी
क्षणम्—३-५ क्षणभर
क्षत्रियस्य—२-३१ क्षत्रिय का
क्षत्रियाः—२-३२ क्षत्रिय लोग
क्षमा—१०-४, ३४; १६-३ दुःख देनेवालेपर अक्रोध, बल होते हुए सहिष्णुता, क्षमा
क्षमी—१२-१३ क्षमावान
क्षयम्—१८-२५ शक्ति का नाश, हानि को
क्षयाय—१६-९ नाश के लिए
क्षरम्—१५-१८ क्षर को (क्षर से)
क्षरः—८-४; १५-१६ नाशवान्
क्षात्रम्—१८-४३ क्षत्रिय का
क्षान्तिः—१३-७; १८-४२ क्षमा
क्षामये—११-४२ क्षमा कराता (चाहता) हूं, क्षमा के लिए विनती करता हूं
क्षिपामि—१६-१९ फेंकता हूं, डालता हूं
क्षिप्रम्—४-१२; ९-३१ तुरंत
क्षीणकल्मषाः—५-२५ जिनके पाप नष्ट हो गये हैं
क्षीणे—९-२१ (पुण्य) क्षीण होने पर, क्षय होनेपर
क्षुद्रम्—२-३ तुच्छ, पामर
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः—१३-२ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ (के भेद) का; १३-३४ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के बीच का
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्—१३-२६ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ यानी प्रकृति और पुरुष के संयोग से
क्षेत्रज्ञम्—१३-२ क्षेत्र के जानने-वाले को
क्षेत्रज्ञः—१३-१ क्षेत्र को जाननेवाला
क्षेत्रम्—१३-१, ३, ६, १८, ३३ शरीर
क्षेत्री—१३-१३ क्षेत्र में रहनेवाला, क्षेत्रज्ञ

क्षेमतरम्—१-४६ बहुत कल्याण-कारक

ख

खम्—७-४ आकाश (तन्मात्रा)
खे—७-८ आकाश में

ग

गच्छ—१८-६२ जा
गच्छति—६-३७, ४० जाता है, प्राप्त करता है
गच्छन्—५-८ चलते हुए
गच्छन्ति—२-५१; ५-१७; ८-२४; १४-१८; १५-५ जाते हैं, प्राप्त करते हैं
गजेन्द्राणाम्—१०-२७ गजेन्द्रों में उत्तम हाथियों में
गतरसम्—१७-१० जिसमें से रस वह गया हो वह, बहुत पका हुआ, रसहीन
गतव्यथः—१२-१६ भयरहित चितारहित
गतसंगस्य—४-२३ संगरहित का, आसक्तिरहित का
गतसंदेहः—१८-७३ संशयरहित हुआ
गतः—११-५१ गया हुआ; पाया हुआ
गतागतम्—९-२१ गमन-आगमन को, जन्म-मरण के फेर को, आवागमन को
गतासून्—२-११ मरे हुओं को
गताः—८-१५ प्राप्त हुए; १४-१ प्राप्त हो गये हैं; १५-४ गये हुए
गतिम्—६-३७, ४५; ७-१८; ८-१३, २१; ९-३२; १३-२८; १६-२०, २२, २३ गति को
गतिः—४-१७; ९-१८; १२-५ गति
गती—८-२६ (दो) गति, मार्ग
गत्वा—१४-१५; १५-६ जाकर, प्राप्त होकर
गदिनम्—११-१७, ४६ गदाधारी को
गन्तव्यम्—४-२४ प्राप्त करने योग्य
गन्तासि—२-५२ (तू) जायगा, प्राप्त करेगा
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा—११-२२ गन्धर्व, यक्ष, असुर और सिद्धों के समुदाय—संघ
गन्धर्वाणाम्—१०-२६ गंधर्वों में
गन्धः—७-९ गंध, वास
गन्धान्—१५-८ गधों को
गम्यते—५-५ प्राप्त किया जाता है
गरीयसे—११-३७ महान को, बहुत बड़े को
गरीयः—२-६ अधिक श्रेष्ठ (बहुत बड़ा)
गरीयान्—११-४३ श्रेष्ठ, बहुत बड़े

गर्भम्—१४-३ गर्भ को
गर्भः—३-३८ गर्भ
गवि—५-१८ गाय में, गाय के संबंध में
गहना—४-१७ गंभीर, विचित्र; गूढ़
गाण्डीवम्—१-३० गांडीव धनुष
गात्राणि—१-२८ अंग, गात्र
गायत्री—१०-३५ इस नाम का एक वैदिक छंद
गाम्—१५-१३ पृथ्वी को
गिराम्—१०-२५ वाणियों में, वचनों में
गीतम्—१३-४ गाया गया है, गाया हुआ
गुडाकेश—१०-२०; ११-७ हे निद्रा को जीतनेवाले अर्जुन
गुडाकेशः—२-९ अर्जुन
गुडाकेशेन—१-२४ अर्जुनद्वारा
गुणकर्मविभागयोः—३-२८ गुण तथा कर्म के विभागों का
गुणकर्मविभागवशः—४-१३ गुण और कर्म के विभाग के अनुसार
गुणकर्मसु—३-२९ इन्द्रियोंके कर्म में, गुणों के कामों में
गुणतः—१८-२९ गुण के अनुसार
गुणप्रवृद्धाः—१५-२ गुणों द्वारा बढ़ी हुई, गुणों के स्पर्श द्वारा वृद्धि को प्राप्त हुई
गुणभेदतः—१८-१९ गुणों के भेदों से
गुणभोक्तृ—१३-१४ गुणों का भोक्ता
गुणमयी—७-१४ गुणयुक्त, (तीन) गुणवाली
गुणमयैः—७-१३ गुणयुक्त
गुणसंगः—१३-२१ गुणों का स्पर्श, गुणसंग
गुणसंमूढाः—३-२९ गुणों से मोहित
गुणसंख्याने—१८-१९ गुणसंख्या के (कपिल के सांख्य) शास्त्र में, गुणों की गणना में, सांख्यशास्त्र में
गुणातीतः—१४-२५ गुणों को लांघ जानेवाला, गुणातीत
गुणान्—१३-१९, २१; १४-२०, २१, २६ गुणों को
गुणान्वितम्—१५-१० गुणयुक्त को
गुणाः—३-२८; १४-५, २३ गुण
गुणेषु—३-२८ गुणों के संबंध में
गुणेभ्यः—१४-१९ गुणों से, तीनों गुणों के सिवा
गुणैः—३-५, २७; १४-२३ (सत्त्वादि तीन) गुणों से; १३-२३ गुणों के साथ; १८-४० ४१ गुणों के द्वारा (से)
गुरुणा—६-२२ बड़े भारी (दुःख)से
गुरुः—११-४३ गुरु
गुरून्—२-५ गुरुओं को, गुरुजनों को
गुह्यतमम्—९-१; १५-२० सबसे

अधिक गुह्य, गुह्यसे गुह्य

गुह्यतरम्—१८-६३ बहुत गुह्य

गुह्यम्—११-१; १८-६८, ७५ गुप्त वस्तु, रहस्य, गुह्य

गुह्यात्—१८-६३ गुह्य से

गुह्यानाम्—१०-३८ गुह्य (रखने की) बातों में

गृणन्ति—११-२१ उच्चारण करते हैं

गृह्णन्—५-९ पकड़ता हुआ, लेता हुआ

गृह्णाति—२-२२ ग्रहण करता है, धारण करता है

गृहीत्वा—१५-८; १६-१० लेकर, ग्रहण करके

गृह्यते—६-२५ निरुद्ध होता है, वश में किया जा सकता है

गेहे—६-४१ घर में

गोविन्द—१-३२ (हे) गोविन्द

गोविन्दम्—२-९ गोविन्द को

ग्रसमानः—११-३० ग्रास करते हुए, खा डालते हुए

ग्रसिष्णु—१३-१६ संहार करनेवाला, भक्षण करनेवाला

ग्लानिः—४-७ ग्लानि, मंदता

घ

घातयति—२-२१ मरवाता है, हनन करवाता है

घोरम्—११-४९; १७-५ भयंकर, घोर, विकराल

घोरे—३-१ क्रूर (कर्म) में; घोर (कर्म) करने के संबंध में

घोषः—१-१९ आवाज, नाद

घ्नतः—१-३५, मारनेवालों को मारने पर

घ्राणम्—१५-९ नाक

च

च—१-१ इत्यादि; और, भी, वैसे ही, (कितनी ही बार पादपूरणार्थ भी प्रयुक्त होता है)

चक्रहस्तम्—११-४६ जिसके हाथमें चक्र है उसे

चक्रम्—३-१६ प्रवृत्ति, चक्र

चक्रिणम्—११-१७ चक्रधारी (कृष्ण) को

चक्षुः—५-२७ दृष्टि को; ११-८; १५-९ दृष्टि, आँख

चंचलत्वात्—६-३३ चंचलता के कारण

चंचलम्—६-२६, ३४ चंचल, अस्थिर

चतुर्भुजेन—११-४६ चार हाथवाले से

चतुर्विधम्—१५-१४ चार प्रकारका (खाद्य, पेय, चोष्य, लेह्य)

चतुर्विधाः—७-१६ चार प्रकार के

चत्वारः—१०-६ चार (सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार)
चन्द्रमसि—१५-१२ चन्द्रमा में
चमूम्—१-३ सेना को
चरताम्—२-६७ (विषयों में) भटकती हुई (इन्द्रियों के)
चरति—२-७१ फिरता है, विचरता है; ३-३६ करता है, आचरण करता है
चरन्ति—८-११ (वे) आचरण करते हैं
चरन्—२-६४ फिरते हुए, (इंद्रियों-का) व्यापार चलाते हुए
चरम्—१३-१५ जंगम, गतिमान
चराचरम्—१०-३९ स्थावर-जंगम (भूत सृष्टि)
चराचरस्य—११-४३ जंगम (चर) और स्थावर (अचर) का
चलति—६-२१ चलता है, चलायमान होता है
चलम्—६-३५; १७-१८ चंचल अस्थिर
चलितमानसः—६-३७ चंचल मन-वाला
चातुर्वर्ण्यम्—४-१३ चार वर्ण की योजना, चार वर्ण
चान्द्रमसम्—८-२५ चन्द्रमा की
चापम्—१-४७ धनुष को
चिकीर्षुः—३-२५ करने की इच्छा करते हुए
चित्तम्—६-१८, २०; १२-९ चित्त, मन
चित्ररथः—१०-२६ गन्धर्वों का नायक चित्ररथ
चिन्तयन्तः—९-२२ चिंतन करते हुए—करनेवाले
चिन्तयेत्—६-२५ चिंतन करे
चिन्ताम्—१६-११ चिंता को
चिन्त्यः—१०-१७ चिंतन करने-योग्य
चिरात्—१२-७ मुद्दत बाद, देर करके
चिरेण—५-६ लंबी मुद्दत में, बहुत देर बाद
चूर्णितैः—११-२७ चूर चूर हुए
चेकितानः—१-५ राजा का नाम
चेत्—२-३३; ३-१, २४; ४-३६; ९-३०; १८-५८ जो
चेतना—१०-२२; १३-६ प्राण-शक्ति, बुद्धि-शक्ति, प्राणादिका व्यापार, अंतःकरणवृत्ति, चेतना, चेतनशक्ति
चेतसा—८-८; १८-५७, ७२ चित्त से, मन से
चेष्टते—३-३३ चलता है, बरतता है, चेष्टा करता है
चेष्टाः—१८-१४ क्रियाएं

चैलाजिनकुशोत्तरम्—६-११ जिसकी सतहपर दर्भ, मृगचर्म और वस्त्र बिछा हुआ है, दर्भ, मृगचर्म और वस्त्र एक के ऊपर एक बिछा हुआ (आसन)

च्यवन्ति—९-२४ चूते हैं, गिरते हैं

छ

छन्दसाम्—१०-३५ छंदों में

छन्दांसि—१५-१ वेद

छन्दोभिः—१३-४ मंत्रों से, छंदों से—में

छलयताम्—१०-३६ छलनेवालों का, जुआरियों का, छल (कपट) करनेवालों का

छित्त्वा—४-४२; १५-३ छेदकर, नाश करके

छिन्दन्ति—२-२३ छेद करते हैं, नष्ट करते हैं

छिन्नद्वैधा—५-२५ जिनकी द्विधा वृत्ति नष्ट हो गई है, संशय रहित हुए, जिनकी शंकाएं मिट गई हैं वे

छिन्नसंशयः—१८-१० जिसका संशय नष्ट हो गया है वह, संशयरहित हुआ

छिन्नाभ्रम्—६-३८ बिखरे हुए बादल

छेत्ता—६-३९ छेद डालनेवाला, दूर करनेवाला

छेत्तुम्—६-३९ दूर करने के लिए

ज

जगतः—७-६; ८-२६; ९-१७; १६-९ जगत का

जगत्—७-५, १३; ९-४, १०; १०-४२; ११-७, १३, ३०; १५-१२; १६-८ जगत

जगत्पते—१०-१५ हे जगत के स्वामी

जगन्निवास—११-२५, ३७, ४५ जगत के आश्रयरूप, हे जगन्निवास

जघन्यगुणवृत्तिस्थाः—१४-१८ नीच गुणावलंबी, ओछे गुणवाले (तामसी)

जनकादयः—३-२० जनक इत्यादि

जनयेत्—३-२६ उत्पन्न करना चाहिए, उत्पन्न करे

जनसंसदि—१३-१० (प्राकृत) लोगों में, जनसमूह में

जनः—३-२१ लोग

जनाधिपाः—२-१२ राजा लोग

जनानाम्—७-२८ लोगों का

जनार्दन—१-३६, ३९ ४४; ३-१; १०-१८; ११-५१ हे कृष्ण (सर्ववृत्तियों के नाशकर्त्ता)

जना:—७-१६; ८-१७ २४; ६-२२; १६-७; १७-४, ५ लोग

जन्तव:—५-१५ प्राणी, लोग

जन्म—२-२७; ४-४, ६; ६-४२; ८-१५, १६ जन्म

जन्मकर्मफलप्रदाम्—२-४३ जन्म-मरणरूपी कर्म के फल देनेवाली

जन्मनाम्—७-१९ जन्मों का

जन्मनि—१६-२०, २० जन्म में

जन्मबन्धविनिर्मुक्ता:—२-५१ जन्म-बंधन से मुक्त हुए

जन्ममृत्युजरादु:खै:—१४-२० जन्म, मृत्यु और बुढ़ापे के दु:खों से

जन्ममृत्युजराव्याधिदु:खदोषानुदर्शनम्—१३-१८ जन्म, मरण, जरा, व्याधि और दु:ख-जैसे दोषों का निरंतर भान

जन्मानि—४-५ जन्म

जपयज्ञ:—१०-२५ जपनामक यज्ञ

जयद्रथम्—११-३४ जयद्रथ राजा को

जय —१०-३६ जीत, जय

जयाजयौ—२-३८ हार-जीत, जय और पराजय

जयेम—२-६ (हम) जीतें

जयेयु:—२-६ (वे) जीतें

जरा—२-१३ बुढ़ापा

जरामरणमोक्षाय—७-२९ वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त होने के लिए

जहाति—२-५० त्यागता है, तजता है

जहि—३-४३; ११-३४ त्याग, हनन कर, संहार कर, मार

जागर्ति—२-६९ (वह) जागता है

जाग्रत:—६-१६ जागनेवाले का (को)

जाग्रति—२-६९ (वे) जागते हैं

जातस्य—२-२७ जन्म लिये हुए की

जाता:—१०-६ जन्मे हुए, उत्पन्न

जातिधर्मा:—१-४३ जातिधर्म

जातु—२-१२; ३-५, २३ कभी भी, किसी भी समय

जानन्—८-२७ जानता हुआ, जाननेवाला

जानाति—१५-१९ (जो) जानता है

जाने—११-२५ (मैं) जानता हूं

जायते—१-२९, ४१; २-२०; १४-१५ (वह) होता है, उत्पन्न होता है, जन्म लेता है

जायन्ते—१४-१२, १३ (वे) उत्पन्न होते हैं,—उनका उदय होता है

जाह्नवी—१०-३१ गंगा नदी
जिगीषताम्—१०-३८ जय चाहनेवालों की
जिघ्रन—५-८ सूंघता हुआ
जिजीविषामः—२-६ (हम) जीने की इच्छा रखते हैं
जिज्ञासुः—६-४४; ७-१६ जानने-की इच्छावाला आत्म-ज्ञान की इच्छावाला
जितसङ्गदोषाः—१५-५ जिन्होंने संगदोष जीत लिया है, जिन्होंने आसक्ति से होने-वाले दोषों को दूर कर दिया है वे
जितः—५-१९- ६-६ जीता हुआ
जितात्मनः—७-६ जितेन्द्रिय का, जिसने अपना मन जीता है उसका (को)
जितात्मा—१८-४९ जितेन्द्रिय, जिसने मन को जीता है वह
जित्वा—२-३७; ११-३३ जीतकर
जितेन्द्रियः—५-७ जिसने इन्द्रियों को जीता है वह
जीर्णानि—२-२२,२२ जीर्ण, पुराने
जीवंति—३-१६ (वह) जीता है, जीवित है
जीवनम्—७-९ आयुष्य, जीवन
जीवभूतः—१५-७ जीवरूप में, जीवात्मा
जीवभूताम्—७—५ जीवरूप को या जीवात्मा को
जीवलोके—१५-७ संसार में, जीव-लोक में
जीवितेन—१-३२ जीवन से
जुहोषि—९-२७ (तू हवन में) होम करता है
जुह्वति—४-२६, २७, २९, ३० (वे) हवन करते हैं
जेतासि—११-३४ (तू) जीतेगा
जोषयेत्—३-२६ लगावे, प्रेरित करे, (कर्मों का) सेवन करावे
ज्ञातव्यम्—७-२ जानने का, जानने-योग्य
ज्ञातुम्—११-५४ जानने के लिए
ज्ञातेन—१०-४२ जानने से, जानकर
ज्ञात्वा—४-१५, १६, ३२, ३५; ५-२९; ७-२; ९-१; १३-१२; १४-१; १६-२४; १८-५५ जानकर
ज्ञानगम्यम्—१३-१७ जो ज्ञान से जाना जाय, ज्ञान से प्राप्त किया जाय
ज्ञानचक्षुषः—१५-१० ज्ञानचक्षु-वाले, दिव्य चक्षु, ज्ञानी
ज्ञानचक्षुषा—१३-३४ ज्ञानरूपी आंखों से, ज्ञानचक्षु से
ज्ञानतपसा—४-१० ज्ञानरूपी तप से

ज्ञानदीपिते—४-२७ ज्ञान से प्रदीप्त किये हुए (में)
ज्ञानदीपेन—१०-११ ज्ञानरूपी दीये से
ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः—५-१७ ज्ञान-के द्वारा जिनका पाप नष्ट हो गया है—धुल गया है वे
ज्ञानप्लवेन—४-३६ ज्ञानरूपी नावद्वारा
ज्ञानयज्ञः—४-३३ (परमेश्वर जिसका विषय है) ज्ञानरूपी यज्ञ
ज्ञानयज्ञेन—९-१५; १८-७० ज्ञानयज्ञ से, ज्ञान के द्वारा
ज्ञानयोगव्यवस्थितिः—१६-१ ज्ञान और योग के संबंध में दृढ़ता—निष्ठा
ज्ञानयोगेन—३-३ ज्ञानयोगसे
ज्ञानवताम्—१०-३८ ज्ञान-वानों का
ज्ञानवान्—३-३३; ७-१९ ज्ञानी
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा—६-८ शास्त्र-ज्ञान और अनुभवज्ञान से जिसका मन तृप्त (शांत) हो गया है
ज्ञानविज्ञाननाशनम्—३-४१ ज्ञान और अनुभव का नाश करने-वाला
ज्ञानसङ्गेन—१४-६ ज्ञान के साथ, ज्ञान के संबंध में
ज्ञानसंछिन्नसंशयम्—४-४१ ज्ञान-द्वारा जिसके संशयों का नाश हो गया है, ज्ञान से जिसने संशयों को वेध डाला है
ज्ञानस्य—१८-५० ज्ञान की
ज्ञानम्—३-३९; ४०; ४-३४, ३९; ५-१५, १६; ७-२; ९-१; १०-४, ३८; १२-१२; १३-२, ११, १७, १८; १४-१, २, ९, ११, १७; १५-१५; १८-१८, १९, २०, २१, ४२, ६३ ज्ञान; १२-१२ ज्ञानमार्ग
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम्—४-१९ ज्ञानरूपी अग्नि से जिसके कर्म जल गये हैं उसको
ज्ञानाग्निः—४-३७ ज्ञानरूपी अग्नि
ज्ञानात्—१२-१२ ज्ञान से—की अपेक्षा, ज्ञानमार्ग की अपेक्षा
ज्ञानानाम्—१४-१ ज्ञानों में
ज्ञानावस्थितचेतसः—४-२३ जिस-का चित्त ज्ञान में सुस्थित हो गया है, जिसका चित्त ज्ञानमय है
ज्ञानासिना—४-४२ आत्मज्ञान-रूपी तलवार से
ज्ञानिनः—४-३४ ज्ञानी लोग; ३-३९; ७-१७ ज्ञानी का

ज्ञानिभ्यः—६-४६ (सांख्य) ज्ञानियों की अपेक्षा

ज्ञानी—७-१६, १७, १८ ज्ञानी

ज्ञाने—४-३३ ज्ञान में

ज्ञानेन—४-३८; ५-१६ ज्ञान से

ज्ञास्यसि—७-१ (तू) जानेगा, पहचानेगा

ज्ञेयम्—१-३९; १३-१२, १६, १७, १८; १८-१८ जानना चाहिए, जानने योग्य विषय, ज्ञेय (विषय)

ज्ञेयः—५-३; ८-२ जानने योग्य,

ज्यायसी—३-१ अधिक अच्छी, श्रेष्ठ

ज्यायः—३-८ अधिक अच्छा

ज्योतिषाम्—१०-२१; १३-१७ प्रकाश करनेवालों में, ज्योतियों में

ज्योतिः—८-२४; १३-१७; ज्योति, ज्वाला, प्रकाश; ८-, २५ ज्योति को (चन्द्रलोक को)

ज्वलद्भिः—११-३० जलते हुए धधकते हुए (से)

ज्वलनम्—११-२९ अग्नि को, ज्वाला को

झ

झषाणाम्—१०-३१ मत्स्यों में, मछलियों में

त

तत्—१-१०, ४६ इत्यादि वह, उसे; ३-१ तो ३-२; ४-१६ लिए, इसलिए; १७-२५ वह (ब्रह्म का नाम); १८-२० से २५ तक, ३७ से ४० तक, ६० वह

ततम्—२-१७; ८-२२; ९-४ व्याप्त; ११-३८; १८-४६ प्रसृत (फैला हुआ)

ततः—१-१३ उसके उपरान्त; २-३३; ११-४; १२-९, ११ तो; २-३६; ६-२२; १६-२०; उससे, उसकी अपेक्षा; १-१४; २-३८; ११-९, १४; १३-२८; १५-४; १६-२२; १८-५५ पीछे, तब; ६-२६, ४३, ४५; १३-३० वहां से, ७-२२ उसके द्वारा; ११-४०, १८-६४ इससे, इसलिए, १४-३ उससे, उसमें से

तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्—१३-११ तत्त्वज्ञान के प्रयोजन का दर्शन, आत्मदर्शन

तत्त्वतः—४-९; ७-३; १०-७; १८-५५ यथार्थ स्वरूप से, यथार्थ रूप में; ६-२१

मूल वस्तु से

तत्त्वदर्शिनः—४-३४ तत्त्व को जानने वाले

तत्त्वदर्शिभिः—२-१६ तत्त्व को जाननेवालों से, ज्ञानियों द्वारा

तत्त्ववित्—३-२८; ५-८ रहस्य जाननेवाला, तत्त्वज्ञ

तत्त्वम्—१८-१ रहस्य

तत्त्वेन—६-२४; ११-५४ यथा-वत्, मूल स्वरूप में

तत्परम्—११-३७ उन (दोनों) से पर

तत्परः—४-३९ उसके (ज्ञान के) पीछे लगा हुआ, ईश्वर-परायण

तत्परायणाः—५-१७ वह (आत्मा) ही जिनका निवासस्थान है वे, उसे ही सर्वस्व मानने-वाले, तत्परायण पुरुष

तत्प्रसादात्—१८-६२ उसकी दया से, उसकी कृपा द्वारा

तत्र—१-२६; २-१३; २८; ६-१२, ४३; ८-१८, २४, २५; ११-१३; १४-६; १८-४, १६, ७८ वहां उसमें, उसके संबंध में

तथा—१-८ इत्यादि—और, वैसे ही; २-१, १३, २२; ३-२५, ३८; ४-३७; ६-६; ११-२८, २९, ४६, ५०; १२-३२, ३३; १४-१५; १८-५०, ६३ वैसे, उसी प्रकार; ११-५० भले, (ऐसा हो); १५-३ यथार्थ, जैसा है वैसा

तथापि—२-२६ तो भी

तदनन्तरम्—१८-५५ उसके (मौत के) बाद, तदनन्तर

तदर्थम्—३-९ उसके निमित्त, यज्ञ के निमित्त

तदर्थीयम्—१७-२७ उसी निमित्त से, 'तत्' के निमित्त किये हुए (कर्म)

तदा—१-२, २१; २-५२, ५३, ५५; ४-७; ६-४, १८; ११-१३; १३-३०; १४-११, १४ उस समय, तब

तदात्मानः—५-१७ वही जिनकी आत्मा है वे, तन्मय हुए

तद्बुद्धयः—५-१७ उसमें (ब्रह्म में) ही जिनकी बुद्धि है वे, उसका (ईश्वर का) ध्यान करनेवाले

तद्भावभावितः—८-६ उसी स्व-रूप में एकरूप हुआ, उस स्वरूप का चिंतन करनेवाला

तद्वत्—२-७० उस प्रकार, ऐसे

तद्विदः—१३-१ उसे (क्षेत्र और

क्षेत्रज्ञ को) जाननेवाले, तत्त्व-ज्ञानी

तनुम्—७-२१; ९-११ देह को, मूर्ति को, स्वरूप को

तन्निष्ठाः—५-१७ उसी में जिनकी निष्ठा है ऐसे, उसमें स्थिर रहनेवाले

तपन्तम्—११-१९ तपाते हुए को, तपानेवाले को

तपसा—११-५३ तप से, तप द्वारा

तपसि—१७-२७ तप में, तप के विषय में

तपस्यसि—९-२७ (तू) तप करता है (—करे)

तपस्विभ्यः—६-४६ कृच्छ्र-चांद्रायणादि विविध प्रकार के तप करनेवालों की अपेक्षा, तपस्वियों की अपेक्षा

तपस्विषु—७-९ तपस्वियों में

तपः—७-९; १०-५; १६-१; १७-५, ७, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २८; १८-५, ४२ तप

तपःसु—८-२८ तपों में

तपामि—९-१९ तपता हूं, धूप देता हूं

तपोभिः—११-४८ तपों से

तपोयज्ञाः—४-२८ तपरूपी यज्ञ करनेवाले

तप्तम्—१७-१७, २८ तपा हुआ, किया हुआ

तप्यन्ते—१७-५ तपते हैं

तम्—२-१, १०; ४-१९; ६-२, २३, ४३; ७-२०; ८-६, १०, २१, २३; ९-२१; १०-१०; १३-१; १५-१, ४; १७-१२; १८-४६, ६२ उसे

तमसः—८-९; १३-१७ अंधकार से, अज्ञान से, अज्ञानरूपी अंधकार से १४-१६ तमोगुण का; १४-१७ तमोगुण से

तमसा—१८-३२ तमोगुण द्वारा, अंधकार से

तमसि—१४-१३, १५ अंधेरे में, तमोगुण में

तमः—१०-११; १४-५, ८, ९, १०; १७-१ अज्ञान-रूपी अंधकार, तमोगुण

तमोद्वारैः—१६-२२ नरक के द्वारों से (मुक्त)

तथा—२-४४; ७-२२ उसके द्वारा

तयोः—३-३४ उन दो का ५-२ उन दो में

तरन्ति—७-१४ (वे) तर जाते हैं

तेन—३-३८; ४-२४; ५-१५; ६-४४; ११-१, ४६; १७-२३; १८-७० उसके द्वारा, उससे

तेषाम्—५-१६; ७-१७, २३; ६-२२, उनका, उनमें १०-१०, ११; १२-१, ५, ७; १७-१, ७ उनकी

तेषु—२-६२, ६५; ५-२२; ७-१२; ९-४, ६, २९; १६-७ उनमें, उनके संबंध में

तैः—३-१२; ५-१९; ७-२० उनसे, उनके द्वारा

तोयम्—६-२६ जल

तौ—२-१९; ३-३४ वे (दो)

त्यक्तजीविताः—१-९ जो जीवन की आशा त्याग किये बैठे हैं, वे प्राण देनेवाले

त्यक्तसर्वपरिग्रहः—४-२१ जिसने संग्रहमात्र छोड़ दिया है वह

त्यक्तुम्—१८-११ छोड़ने के लिए, (कर्म) छोड़ने के लिए

त्यक्त्वा—१-३३; २-३, ४८, ५१; ४-९, २०; ५-१०, ११, १२; ६-२४; १८-६, ९, ५१ छोड़कर, तजकर, त्यागकर

त्यजति—८-६ (वह) तजता है, छोड़ता है

त्यजन्—८-१३ छोड़ता हुआ

त्यजेत्—१६-२१; १८-४८ छोड़ना चाहिए, त्याग करना चाहिए; १८-८ (जो) त्याग करे, छोड़े

त्यागफलम्—१८-८ त्यागफल को

त्यागम्—१८-२, ८ त्याग

त्यागस्य—१८-१ त्याग का

त्यागः—१६-२; १८-४, ९ त्याग

त्यागात्—१२-१२ (कर्मफल के) त्याग से

त्यागी—१८-१०, ११ त्यागी

त्यागे—१८-४ त्याग में, त्याग के संबंध में

त्याज्यम्—१८-३, ५ त्याग करने योग्य, छोड़ना चाहिए

त्रयम्—१६-२१ तीन को

त्रयीधर्मम्—९-२१ वेदविहित यज्ञादि सकाम कर्मों को, वेदोक्त धर्म को

त्रायते—२-४० रक्षण करता है, उद्धार करता है, बचा लेता है

त्रिधा—१८-१९ तीन प्रकार के

त्रिभिः—७-१३; १६-२२; १८-४० तीन द्वारा

त्रिविधम्—१६-२१; १७-१७; १८-१२, २९, ३६ तीन प्रकार का, तिगुना

त्रिविधः—१७-७, २३; १८-४, १८ तीन प्रकार के

त्रिविधा—१७-२; १८-१८ तीन प्रकार की
त्रिषु—३-२२ तीन में
त्रीन्—१४-२०, २१ तीन को
त्रैगुण्यविषयाः—२-४५ तीन गुण जिनके विषय हैं ऐसे
त्रैलोक्यराज्यस्य—१-३५ तीनों लोक के राज्य का
त्रैविद्याः—९-२० तीनों वेद जानने वाले, तीनों वेदों के कर्म करनेवाले
त्वक्—१-३० चमड़ी
त्वत्तः—११-२ तेरे पास से
त्वत्प्रसादात्—१८-७३ तेरी कृपा से
त्वत्समः—११-४३ तेरे जैसा
त्वदन्यः—६-३९ तेरे सिवा दूसरा
त्वदन्येन—११-४७, ४८ तेरे सिवा दूसरे से
त्वम्—२-११, १२, २६, २७, ३०, ३३, ३५; ३-८, ४१; ४-४, ५, १५; १०-१५, १६, ४१; १८-३, ४, १८, ३३, ३४, ३७, ३८, ३९, ४०, ४३, ४९, ५८ तू
त्वया—६-३३; ११-१, २०, ३८; १८-७२ तेरे द्वारा, तुझसे
त्वयि—२-३ तुझमें
त्वरमाणाः—११-२७ उतावली करते हुए, उतावले होकर, वेगपूर्वक
त्वा—२-२, ११, २१, २२, ३२; १८-६६ तुझे
त्वाम्—२-७; २७, ३५; १०-१३, १७; ११-१६, १७, १९, २१, २२, २४, २६, ३२, ४२, ४४, ४६; १२-१; १८-५९ तुझे

द

दक्षः—१२-१६ कार्यकुशल, सावधान
दक्षिणायनम्—८-२५ दक्षिण मार्ग, दक्षिणायन
दण्डः—१०-३८ दंड, राजदंड
दत्तम्—१७-२८ दिया हुआ, दान
दत्तान्—३-१२ दिये हुए (को)
ददामि—१०-१०; ११-८ (मैं) देता हूं
ददासि—९-२७ (तू) दान करता है
दधामि—१४-३ मैं धरता हूं, मैं रखता हूं
दध्मुः—१-१८ उन्होंने बजाये, फूंके
दध्मौ—१-१२, १५ उसने बजाया, फूंका
दमयताम्—१०-३८ दण्ड देनेवालों का, राज्य करनेवालों का
दमः—१०-४; १६-१; १८-४२ बाह्यनिग्रह, इन्द्रियनिग्रह, दम

दम्भमानमदान्विताः—१६-१० दंभ, मान और मद से युक्त, दंभी, मानी और मदांध
दम्भः—१६-४ दंभ, ढोंग
दम्भार्थम्—१७-१२ दंभ के लिए, दंभ से
दम्भाहंकारसंयुक्ताः—१७-५ दंभ और अहंकार से युक्त, दंभ और अहंकारवाले
दंभेन—१६-१७; १७-१८ दंभ से, दंभपूर्वक
दया—१६-२ दया
दर्पम्—१६-१८; १८-५३ दर्प, घमंड
दर्पः—१६-४ गर्व, दूसरों का तिरस्कार करने की वृत्ति
दर्शनकाङ्क्षिणः—११-५२ दर्शन करने को उत्सुक, दर्शन की इच्छावाले, दर्शनार्थी
दर्शय—११-४, ४५ दर्शन कराओ, दिखाओ
दर्शयामास—११-९, ५० दिखाया
दर्शितम्—११-४७ दिखाया, दिखाया हुआ
दश—१३-५ दस
दशनान्तरेषु—११-२७ दांतों के बीच, दांतों के दराज में
दहति—२-२३ (वह) जलाता है
दंष्ट्राकरालानि—११-२५, २७, डाढ़ों से भयंकर, विकराल डाढ़ोंवाले
दाक्ष्यम्—१८-४३ चतुराई, कार्यकुशलता, दक्षता
दातव्यम्—१७-२० देने योग्य है, देना चाहिए
दानक्रियाः—१७-२५ दान की क्रियाएं, दानरूपी क्रियाएं
दानवाः—१०-१४ दानव
दानम्—१०-५; १६-१; १७-७, २०, २१, २२; १८-५, ४३ दान
दाने—१७-२७ दान में, दान के संबंध में
दानेन—११-५३ दान से
दानेषु—८-२८ दानों में
दानैः—११-४८ दानों द्वारा
दास्यन्ते—३-१२ (वे) देंगे
दास्यामि—१६-१५ (मैं) दान करूंगा
दिवि—९-२०; १८-४० स्वर्ग में; ११-१२ आकाश में
दिव्यगन्धानुलेपनम्—११-११ दिव्य गंध जिन्हें चुपड़े गये हैं ऐसा, दिव्य सुगंध लेपवाले को
दिव्यम्—४-९; ८-८, १०; १०-१२; ११-८ अप्राकृत, ईश्वरीय, दिव्य
दिव्यमाल्याम्बरधरम्—११-११

दिव्य पुष्प और वस्त्र धारण करनेवालों को

दिव्यान्—९-२०; ११-१५ दिव्य

दिव्यानाम्—१०-४० दिव्य (विभूतियों) का

दिव्यानि—११-५ दिव्य (रूप)

दिव्यानेकोद्यतायुधम्—११-१० अनेक उठाये हुए दिव्य शस्त्रों-वाला

दिव्याः—१०-१६, १९ दिव्य

दिव्यौ—१-१४ (दो) दिव्य

दिशः—६-१३; ११-२०, २५,३६ दिशाएं, दिशाओं को; ११-३६ (सब) दिशाओं में, इधर-उधर

दीपः—६-१९ दीया

दीप्तम्—११-२४ प्रदीप्त हुए को, जगमगाते हुए को

दीप्तविशालनेत्रम्—११-२४ बड़ी तेजस्वी आंखवाले को

दीप्तहुताशवक्त्रम्—११-१९ जिस-का मुख सुलगती (धधकती) अग्निरूप है उसे, प्रज्वलित अग्नि के समान मुखवाले को

दीप्तानलार्कद्युतिम्—११-१७ सुल-गती अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशवाले को

दीप्तिमन्तम्—११-१७ प्रकाशवाले को जगमगाती ज्योति-वाले को

दीयते—१७-२०, २१, २२ दिया जाता है, देने में आता है

दीर्घसूत्री—१८-२८ काम को लंबा करनेवाला, दीर्घसूत्री

दुरत्यया—७-१४ कठिनाई से तरी जानेवाली, पार होने में कठिन

दुरासदम्—३-४३ जो कठिनाई से जीता जा सके उसको, दुर्जय को

दुर्गतिम्—६-४० खराब गति को

दुर्निग्रहम्—६-३५ कठिनाई से निरोध किया जा सकनेवाला

दुर्निरीक्ष्यम्—११-१७ न देखे जा सकनेवालों को, कठिनाई से देखे जा सकनेवाले को

दुर्बुद्धेः—१-२३ दुर्बुद्धि (का) (खोटी बुद्धिवाले दुर्योधन का)

दुर्मतिः—१८-१६ मूर्ख, दुर्मति

दुर्मेधाः—१८-३५ दुर्मति, दुर्बुद्धि

दुर्योधनः—१-२ दुर्योधन राजा

दुर्लभतरम्—६-४२ अधिक दुर्लभ, बहुत दुर्लभ

दुष्कृताम्—४-८ पापकारियों का, दुष्टों का

दुष्कृतिनः—७-१५ पापी, दुराचारी

दुष्टासु—१-४१ दूषित हुई (स्त्रियों) में, दूषित होने पर

दुष्पूरम्—१६-१० तृप्त न होने-वाली, किसी प्रकार भी पूर्ण न होनेवाली

दुष्पूरेण—३-३९ तृप्त न किये जा सकनेवाले—संतुष्ट न किये जा सकनेवाले (कामरूपी अनल द्वारा)

दुष्प्रापः—६-३६ प्राप्त करने में कठिन, अशक्य (जैसा)

दुःखतरम्—२-३६ अधिक दुःख-कारक

दुःखम्—५-६; १२-५; कठिनाई से, कष्ट से ६-३२; १०-४; १३-६; १४-१६ दुःख, दुःख को; १८-८ दुःखकारक

दुःखयोनयः—५-२२ दुःख के मूल

दुःखशोकामयप्रदाः—१७-९ दुःख शोक और रोग (आमय) उत्पन्न करनेवाले

दुःखसंयोगवियोगम्—६-२३ दुःख के समागम का वियोग, दुःख के प्रसंग से रहित (स्थिति) को

दुःखहा—६-१७ दुःख का नाश करनेवाला, दुःखभंजन

दुःखान्तम्—१८-३६ दुःख के अंत को

दुःखालयम्—८-१५दुःख का घर

दुःखेन—६-२२ दुःख से

दुःखेषु—२-५६ दुःखों में

दूरस्थम्—१३-१५ दूर रहा हुआ

दूरेण—२-४९ बहुत, अधिक

दृढ़निश्चयः—१२-१४ दृढ़निश्चय-वाला

दृढ़म्—६-३४; १८-६४ अतिशय, बहुत

दृढ़व्रताः—७-२८ अडिग व्रतवाले, ९-१४ दृढ़ निश्चयवाले

दृढ़ेन—१५-३ बलवान, मजबूत (द्वारा)

दृष्टपूर्वम्—११-४७ पहले देखा हुआ

दृष्टवान्—११-५२, ५३ (तूने) देखा है

दृष्टः—२-१६ देखा हुआ, जाना हुआ

दृष्टिम्—१६-९ दृष्टि को अभिप्राय को

दृष्ट्वा—१-२, २०, २८; २-५९; ११-२०, २३, २४, २५, ४५, ४९, ५१ देखकर

देव—११-१५, ४४, ४५ हे देव

देवताः—४-१२ देवों को, देवताओं को

देवदत्तम्—१-१५ अर्जुन के देवदत्त नामक शंख (को)

देवदेव—१०-१५ हे देवों के देव

देवदेवस्य—११-१३ देवों के देव का

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम्—१७-१४ देव, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानी की पूजा

देवभोगान्—९-२० देव-योग्य भोगों को

देवम्—११-११, १४ ईश्वर को,

देव को

देवयजः—७-२३ देवों की पूजा करनेवाले

देवर्षि—१०-१३ देवर्षि (नारद)

देवर्षीणाम्—१०-२६ देवर्षियों में

देवलः—१०-१३ देवल नामक ऋषि

देववर—११-३१ हे देवों में श्रेष्ठ

देवव्रताः—६-२५ (इंद्रादि) देवताओं का पूजन करनेवाले

देवान् ३-११; ७-२३; ११-१५; १७-४ देवों को; ६-२५ देवों को, देवलोक को

देवानाम्—१०-२, २२ देवों का, देवों में

देवाः— ३-११, १२; १०-१४; ११-५२ देव

देवेश—११-२५, ३७, ४५ हे देवों के ईश्वर

देवेषु—१८-४० देवों में

देशे—६-११ स्थान में; १७-२० (योग्य) देश में

देहभृत्—१४-१४ देहधारी

देहभृता—१८-११ देहधारी से

देहभृताम्—८-४ देहधारियों का

देहम्—४-६; ८-१३; १५-१४ देह को, शरीर को

देहवद्भिः—१२-५ देहधारियों द्वारा

देहसमुद्भवान्—१४-२० देह से उत्पन्न हुए (गुणों) को, देह के संग से उत्पन्न होनेवाले (गुणों) को

देहान्तरप्राप्तिः—२-१३ अन्य देह की प्राप्ति

देहाः—२-१८ देह

देहिनम्—३-४० देही को; १४-५, ७ देहधारी—जीव (जीवात्मा) को

देहिनः—२-१३, ५६ देहधारी का—को

देहिनाम्—१७-२ मनुष्यों की, देहधारियों की

देही—२-२२, ३०; ५-१३ आत्मा; १४-२० देहधारी

देहे—२-१३ ३०; ८-२, ४; ११-७, १५; १३-२२, ३२; १४-५, ११ देह में, देह के संबंध में

दैत्यानाम्—१०-३० दिति के वंशजों में, दैत्यों में

दैवम्—४-२५ देवताओं के निमित्त किया हुआ, देवताओं के पूजनरूप (यज्ञ); १८-१४ दैव, अदृष्ट

दैवः—१६-६ दैवी

दैवी—७-१४; १६-५ ईश्वरीय, दैवी

दैवीम्—९-१३; १६-३, ५ दैवी को

दोषम्—१-३८,३९ दोष को
दोषवत्—१८-३ दूषित, दोषवाला
दोषेण—१८-४८ दोष से
दोषैः—१-४३ दोषों से
द्यावापृथिव्योः—११-२० आकाश और पृथ्वी का, आकाश और पृथ्वी के बीच का
द्यूतम्—१०-३६ जुआ को
द्रक्ष्यसि—४-३५ (तू) देखेगा
द्रवन्ति—११-२८, ३६ (वे) पीछे हटते हैं, भागते हैं
द्रव्यमयात्—४-३३ द्रव्यवाले (यज्ञ) की अपेक्षा
द्रव्ययज्ञाः—४-२८ द्रव्य द्वारा यज्ञ करनेवाले, यज्ञ के लिए द्रव्य देनेवाले
द्रष्टा—१४-१९ देखने वाला, साक्षी, ज्ञानी
द्रष्टुम्—११-३, ४, ७, ८, ४६, ४८, ५३, ५४ देखने के लिए, दर्शन करने को
द्रुपदपुत्रेण—१-३ द्रुपद के पुत्र (धृष्टद्युम्न) द्वारा
द्रुपदः—१-४, १८ द्रुपद राजा
द्रोणम्—२-४; ११-३४ द्रोणाचार्य को
द्रोणः—११-२६ द्रोणाचार्य
द्रौपदेयाः—१-६, १८ द्रौपदी के पुत्र
द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता—७-२८ द्वन्द्वमोहरहित, द्वन्द्व के मोह से मुक्त
द्वन्द्वमोहेन—७-२७ सुखदुःखादि द्वन्द्वों के मोह से
द्वन्द्वः—१०-३३ द्वन्द्व (समास)
द्वन्द्वातीतः—४-२२ सुख-दुःखादि द्वन्द्वों से परे
द्वारम्—१६-२१ द्वार, दरवाजा
द्विजोत्तम—१-७ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ (द्रोणाचार्य)
द्विविधा—३-३ दो प्रकार की
द्विषतः—१६-१९ द्वेष करनेवालों को, द्वेषी (लोगों को)
द्वेषः—१३-६ द्वेष
द्वेष्टि—२-५७; ५-३; १२-१७; १८-१० (वह) द्वेष करता है; १४-२२ (वह) दुःख मानता है
द्वेष्यः—९-२९ द्वेषपात्र, अप्रिय
द्वौ—१५-१६; १६-६ दो

ध

धनञ्जयः—१-१५; १०-३७; ११-१४ अर्जुन
धनम्—१६-१३ धन
धनमानमदान्विताः—१६-१७ धन, मान और मद से युक्त, धन और मान के मद में मस्त
धनञ्जय—२-४८, ४९; ४-४१; ७-७; ९-९; १२-९; १८-२९, ७२ हे अर्जुन

धनानि—१-३३ धन, संपत्ति
धनुर्धरः—१८-७८ धनुर्धारी
धनुः—१-२० धनुष (को)
धर्मकामार्थान्—१८-३४ धर्म, काम और अर्थ को
धर्मक्षेत्रे—१-१ धर्मक्षेत्र में, धर्मक्षेत्ररूप (कुरुक्षेत्र) में
धर्मम्—१८-३१, ३२ धर्म को
धर्मसंमूढचेताः—२-७ धर्म (कर्तव्य) के विषय में जिसका मन मूढ़ हुआ है ऐसा
धर्मसंस्थापनार्थाय—४-८ धर्म की सुस्थापना के लिए, धर्म का पुनरुद्धार करने के लिए
धर्मस्य—२-४०; ४-७, ९-३; १४-२७ धर्म का
धर्मात्मा—९-३१ धर्मवान् धर्मात्मा
धर्माविरुद्धः—७-११ धर्म से अविरुद्ध, धर्म का अविरोधी
धर्मे—१-४० धर्म में
धर्म्यम्—२-३३ धर्मप्राप्त, धर्म्य; ९-२; १८-७० धर्मवाला, धार्मिक, पवित्र, धर्म्य, धर्मानुकूल
धर्म्यात्—२-३१ धार्मिक (युद्ध) से
धर्म्यामृतम्—१२-२० धर्मरूपी अमृत को, पवित्र अमृतरूप ज्ञान को
धाता—९-१७ धारण करनेवाला; १०-३३ रक्षण करनेवाला
धातारम्—८-९ विधाता को, पालनहार को
धाम—८-२१; १०-१२; ११-३८; १५-६ स्थान, धाम
धारयते—१८-३३, ३४ (वह) धारण करता है चलाता है
धारयन्—५-९ मानता हुआ, भावना रखकर ६-१३, रखता हुआ, रखकर
धारयामि—१५-१३ (मैं) धारण करता हूं
धार्तराष्ट्रस्य—१-२३ धृतराष्ट्र-पुत्र—दुर्योधन—का
धार्तराष्ट्राणाम्—१-१९ धृतराष्ट्र के पुत्रों के, कौरवों के
धार्तराष्ट्रान्—१-२०, ३६, ३७ धृतराष्ट्र के पुत्रों को कौरवों को
धार्तराष्ट्राः—१-४६; २-६ धृतराष्ट्र के पुत्र, कौरव
धार्यते—७-५ धारण किया जाता है
धिष्ठितम्—१३-१७ अधिष्ठित, रहा हुआ
धीमता—१-३ बुद्धिमान (द्वारा)
धीमताम्—६-४२ बुद्धिमानों का, ज्ञानवानों का
धीरम्—२-१५ स्थिरबुद्धि को, ज्ञानी को

धीरः—२-१३; १४-२४ ज्ञानी, बुद्धिमान पुरुष, धीर
धूमः—८-२५ धुंआ
धूमेन—३-३८; १८-४८ धुएं से
धृतराष्ट्रस्य—११-२६ धृतराष्ट्र का
धृतराष्ट्रः—१-१ दुर्योधनादि का अंधा पिता
धृतिगृहीतया—६-२५ दृढ़ हुई, धृतियुक्त, अडिग (द्वारा)
धृतिम्—११-२४ धीरज (को)
धृतिः—१०-३४; १३-६; १६-३; १८-३३, ३४, ३५, ४३ धीरज, धैर्य, धृति
धृतेः—१८-२९ धीरज का, धृति का
धृत्या—१८-३३, ३४ धैर्य से, धृति से; १८-५१ दृढ़तापूर्वक
धृत्युत्साहसमन्वितः—१८-२६ धृति—दृढ़ता और उत्साह वाला
धृष्टकेतुः—१-५ राजा का नाम
धृष्टद्युम्नः—१-१७ द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न
धेनूनाम्—१०-२८ गायों में
ध्यानयोगपरः—१८-५२ ध्यान-योग से परायण
ध्यानम्—१२-१२ ध्यान, ध्यानमार्ग
ध्यानात्—१२-१२ ध्यान की अपेक्षा, ध्यानमार्ग की अपेक्षा
ध्यानेन—१३-२४ ध्यान से
ध्यायतः—२-६२ ध्यान धरनेवाले का, चिंतन करनेवाले का
ध्यायन्तः—१२-६ ध्यान करते हुए
ध्रुवम्—२-२७; १२-३ स्थिर, निश्चयपूर्वक, अचल
ध्रुवः—२-२७ स्थिर, अनिवार्य, निश्चित
ध्रुवा—१८-७८ अचल, अविचल, निश्चित

न

न—१-३० इत्यादि; नहीं
नकुलः—१-१६ नकुल
नक्षत्राणाम्—१०-२१ नक्षत्रों में
नदीनाम्—११-२८ नदियों की
नभः—१-१९ आकाश को
नभःस्पृशम्—११-२४ आकाश को छूनेवाले को, आकाश को स्पर्श करनेवाले (को)
नमस्कुरु—९-३४; १८-६५ (तू) नमस्कार कर, नमन कर
नमस्यन्तः—९-१४ नमन करते हुए
नमस्यन्ति—११-३६ (वे) नमन करते हैं, नमस्कार करते हैं
नमः—९-३४; ११-३१, ३५, ३९, ४०; १८-६५ वंदन, नमस्कार
नमेरन्—११-३७ (वे) नमस्कार करें

नयेत्—६-२६ (वह) लावे, ले जाय
नरकस्य—१६-२१ नरक का
नरकाय—१-४२ नरक के लिए, नरक की तरफ (ले जाता है)
नरके—१-४४; १६-१६ नरक में
नरपुङ्गवः—१-५ पुरुषों में श्रेष्ठ
नरलोकवीराः—११-२८ राजा, मनुष्यलोक में श्रेष्ठ-वीर, लोकनायक
नरः—२-२२; ५-२३; १२-१९; १६-२२; १८-१५, ४५, ७१ पुरुष, मनुष्य
नराणाम्—१०-२७ मनुष्यों में
नराधमान्—१६-१९ अधम लोगों को, नीचों को
नराधमाः—७-१५ अधम मनुष्य
नराधिपम्—१०-२७ राजा को
नरैः—१७-१७ पुरुषों से मनुष्यों द्वारा
नवद्वारे—५-१३ नवद्वारवाले (नगररूपी शरीर) में, (दो कान, दो नाक, दो आंख, मुंह, गुदा और उपस्थ इन नौ द्वारोंवाले)
नवानि—२-२२ नए
नश्यति—६-३८ (वह) नष्ट होता है
नश्यत्सु—८-२० नाश होते हुए, नाश होने पर भी
नष्टः—४-२; १८-७३ नाश को पहुंचा हुआ, नाश को प्राप्त
नष्टात्मानः—१६-९ नष्ट बुद्धि-वाले लोग, दुष्ट
नष्टान्—३-३२ नाश पाये हुओं को
नष्टे—१-४० नष्ट होने पर—से
नः—१-३२, ३३, ३६; २-६ हमारा, हमारे लिए, हमें, हमको
नातिमानिता—१६-३ निरभि-मानपन
नागानाम्—१०-२९ नागों में
नानाभावान्—१८-२१ जुदे-जुदे (विभक्त) भावों को
नानावर्णाकृतीनि—११-५ जुदे-जुदे रंग और आकार के—वाले
नानाविधानि—११-५ जुदे-जुदे प्रकार के
नानाशस्त्रप्रहरणाः—१-९ नाना प्रकार के शस्त्र धारण करने-वाले नाना प्रकार के शस्त्रास्त्रवाले
नान्यगामिना—८-८ अन्य कहीं न दौड़ते हुए, और कहीं न दौड़ने देकर
नामयज्ञैः—१६-१७ केवल नाम मात्र के यज्ञ द्वारा
नायकाः—१-७ नायक लोग

नारदः—१०-१३,२६ देवर्षि नारद

नारीणाम्—१०-३४ स्त्रियों में, नारी जाति के नामों में

नावम्—२-६७ वाहन को, नौका को

नाशनम्—१६-२१ नाश करनेवाला

नाशयामि—१०-११ (मैं) नाश करता हूं

नाशाय—११-२९ नाश के लिए—अभिप्राय से

नाशितम्—५-१६ नाश किया हुआ, नष्ट

नासाभ्यान्तरचारणौ—५-२७ नाक के अंदर चलते हुए, नासिका के द्वारा चलते हुए (जाते-आते)

नासिकाग्रम्—६-१३ नाक की नोक को, नासिकाग्र को

निगच्छति—९-३१; १८-३६ पाता है, प्राप्त करता है

निगृहीतानि—२-६८ खींच ली हुई, वश में की हुई

निगृह्णामि—९-१९ (मैं) पकड़ रखता हूं, रोके रखता हूं

निग्रहम्—६-३४ विरोध, अंकुश, वश में करना

निग्रहः—३-३३ काबू में रखना, बलात्कार

नित्यजातम्—२-२६ नित्य जन्म लेनेवाले को

नित्यतृप्तः—४-२० हमेशा संतुष्ट, सदा संतुष्ट

नित्यम्—२-२१ नित्य; २-२६, ३०; ३-१५, ३१; ९-६; १०-९; ११-५२; १३-९; १८-५२ हमेशा

नित्ययुक्तस्य—८-१४ निरंतर समाहित का, नित्ययुक्त का (को)

नित्ययुक्तः—७-१७ निरंतर समाहित, नित्य समभावी

नित्ययुक्ताः—९-१४; १२-२ नित्य ध्यान धरनेवाले

नित्यवैरिणा—३-३९ सनातन शत्रु से, नित्य के शत्रु द्वारा

नित्यशः—८-१४ हमेशा, निरंतर,

नित्यसत्त्वस्थः—२-४५ हमेशा सात्त्विक, वृत्तिवाला, नित्य सत्यवस्तु में स्थित

नित्य संन्यासी—५-३ सदा ही संन्यासी

नित्यस्य—२-१८ नित्य का, नित्य रहनेवाले का

नित्यः—२-२०, २४ नित्य

नित्याभियुक्तानाम्—९-२२ निरंतर समाहित चित्तवालों का, नित्य मेरे में ही रत रहे हुओं का

निद्रालस्यप्रमादोत्थम्—१८-३९ निद्रा, आलस्य, और प्रमाद में से उत्पन्न हुआ
निधनम्—३-३५ अंत, मौत
निधानम्—९-१८ भंडार; ११-१८, ३८ आधार, आश्रय-स्थान
निन्दन्तः—२-३६ निंदा करते हुए
निवद्धः—१८-६० वंधा हुआ
निवध्नन्ति—४-४१; ९-९; १४-५ (वे) बांधते हैं
निवध्नाति—१४-७, ८ (वह) बांधता है
निवन्धाय—१६-५ वंधन के लिए
निवध्यते—४-२२; ५-१२; १८-१७ (वह) वंधता है, वंधन में पड़ता है
निबोध—१-७; १८-१३, ५० सुन, पहचान, समझ ले
निमित्तमात्रम्—११-३३ केवल निमित्तरूप
निमित्तानि—१-३१ शकुन, चिह्न, लक्षणों को
निमिषन्—५-९ आंख बंद करते हुए—मीचते हुए
नियतम्—१-४४ ठीक, अवश्य; ३-८; १८-९, २३ नियत, जो स्वधर्मानुसार प्राप्त होने के कारण अवश्य करने योग्य है ऐसा, इन्द्रियों को नियम में रखकर किया हुआ (कर्म)
नियतमानसः—६-१५ जिसने अपना मन नियम में रखा है वह
नियतस्य—१८-७ नियत (कर्म) का
नियतात्मभिः—८-२ व्यवस्थित चित्तवालों से, संयमियों द्वारा
नियताहाराः—४-३० आहार को नियम में रखनेवाले
नियताः—७-२० प्रेरित हुए, दौड़ाए हुए
नियमम्—७-२० नियम को, विधि को
नियम्य—३-७, ४१; ६-२६; १८-५१ नियम में, वंश में रखकर
नियोक्ष्यति—१८-५९ जोड़ेगा, प्रेरित करेगा, बलात् घसीट ले जायगा
नियोजयसि—३-१ (तू) प्रेरित करता है, (में) लगाता है
नियोजितः—३-३६ नियुक्त, प्रेरित
निरग्निः—६-१ यज्ञादि के लिए अग्नि न रखनेवाला, अग्नि का त्याग करनेवाला
निरहंकारः—२-७१; १२-१३ अहंकाररहित

निराशीः—३-३०; ४-२१; ६-१० आशारहित, आसक्ति-रहित, वासनारहित (होकर)

निराश्रयः—४-२० आश्रयरहित, जिसे किसी भी प्रकार के आश्रय की लालसा नहीं

निराहारस्य—२-५९ निराहारी का

निरीक्षे—१-२२ (मैं) देखूं, निरखूं

निरुद्धम्—६-२० वृत्तिशून्य हुआ, अंकुश में आया हुआ

निरुध्य—८-१२ रोककर, स्थिर करके

निर्गुणत्वात्—१३-३१ निर्गुण होने से

निर्गुणम्—१३-१४ गुण से रहित

निर्देशः—१७-२३ नाम, वर्णन, अभिधान

निर्दोषम्—५-१९ दोषरहित, निष्कलंक

निर्द्वन्द्वः—२-४५; ५-३ सुख-दुःख, रागद्वेषादिक द्वन्द्वों से रहित; सुखदुःखादि द्वन्द्वों से मुक्त

निर्ममः—२-७१; ३-३०; १२-१३; १८-५३ ममता रहित, ममत्वरहित

निर्मलत्वात्—१४-६ निर्मलता के कारण

निर्मलम्—१४-१६ निर्मल

निर्मानमोहाः—१५-५ मान और मोहरहित

निर्योगक्षेमः—२-४५ अप्राप्त की प्राप्ति (योग) और प्राप्त की रक्षा (क्षेम) की इच्छा से रहित, किसी भी वस्तु को पाने और संभालने की झंझट से मुक्त

निर्वाणपरमाम्—६-१५ मोक्ष देनेवाली, मोक्षरूप परम (शांति) को

निर्विकारः—१८-२६ विकार-रहित, हर्षशोकरहित

निर्वेदम्—२-५२ वैराग्य, उदासीनता (को)

निर्वैरः—११-५५ वैररहित, द्वेषरहित

निवर्तते—२-५९ (वह) निवृत्त होता है, मंद पड़ता है; ८-२५ पीछे फिरता है, पुनर्जन्म पाता है

निवर्तन्ति—१५-४ (वे) वापिस आते हैं

निवर्तन्ते—८-२१; ९-३; १५-६ (वे) पीछे लौटते हैं, फिर जन्म लेते हैं

निवर्तितुम्—१-३९ हटने के लिए बचने के लिए

निवसिष्यसि—१२-८ निवास करेगा
निवातस्थः—६-१९ वायुरहित स्थान में रहा हुआ
निवासः—९-१८ (प्राणियों का) वासस्थान, निवास
निवृत्तानि—१४-२२ नष्ट होने पर, प्राप्त न होने पर निवृत्त होने पर
निवृत्तिम्—१६-७; १८-३० अकर्तव्य, निवृत्ति को
निवेशय—१२-८ प्रवेश करा, धारण कर, लगा
निशा—२-६९ रात्रि
निश्चयम्—१८-४ निश्चय, निर्णय
निश्चयेन—६-२३ दृढ़तापूर्वक, निश्चय से
निश्चरति—६-२६ चलायमान होता, भागता है
निश्चला—२-५३ निश्चल, स्थिर
निश्चितम्—२-७; १८-६ निश्चयपूर्वक, निश्चित, तय
निश्चिताः—१६-११ निश्चयवान निश्चय करनेवाले
निश्चित्य—३-२ तय करके, निश्चयपूर्वक
निष्ठा—३-३; १७-१; १८-५० स्थिति, मार्ग, अवस्था, निष्ठा, गति
निस्त्रैगुण्यः—२-४५ तीनों गुणों से रहित, तीनों गुणों से अलिप्त
निहताः—११-३३ हनन किये हुए, मारे हुए
निहत्य—१-३६ मारकर, हनन करके
निःश्रेयसकरौ—५-२ मोक्षदायक, परमकल्याणकारक
निःस्पृह—२-७१; ६-१८ इच्छा:-रहित
नीतिः—१०-३८ राजनीति, नीति; १८-७८ न्याय, न्यायसंगत बर्ताव, नीति
नु—१-३५; २-३६ मात्र, के द्वारा
नृलोके—११-४८ नरलोक में, मृत्यु-लोक में
नृषु—७-८ लोगों में, पुरुषों में
नैष्कर्म्यसिद्धिम्—१८-४९ निष्कर्म-भाव की प्राप्ति को, नैष्कर्म्य-रूप (परम) सिद्धि को
नैष्कर्म्यम्—३-४ निष्कर्मभाव, कर्मशून्यता
नैष्कृतिकः—१८-२८ परद्रोही, नीच
नैष्ठिकीम्—५-१२ परमनिष्ठा-वाली मोक्षदायिनी (को)
नो—१७-२८ नहीं
न्याय्यम्—१८-१५ नीतियुक्त, न्यायी
न्यासम्—१८-२ त्याग को

प

पक्षिणाम्—१०-३० पक्षियों में
पचन्ति—३-१३ (वे) रांधते हैं, पकाते हैं
पचामि—१५-१४ (मैं) पचाता हूं
पञ्च—१३-५; १८-१३, १५ पांच
पञ्चमम्—१८-१४ पांचवां
पणवानकगोमुखाः—१-१३ ढोल, नगारे और नरसिंहे आदि
पण्डितम्—४-१९ विद्वान, पंडित
पण्डिताः—२-११; ५-४, १८ विद्वान, पंडित
पतङ्गाः—११-२९ पतंग, फतिंगे
पतन्ति—१-४२; १६-१६ (वे) गिरते हैं, (उनकी) अधोगति होती है
पत्रम्—९-२६ पत्ता
पथि—६-३८ मार्ग में
पदम्—२-५१; ८-११; १५-४, ५; १८-५६ स्वरूप, गति, पद, स्थान
पद्मपत्रम्—५-१० कमलपत्र
परतरम्—७-७ उस पार, अधिक ऊंचा, सिवाय
परतः—३-४२ उस पार, अधिक सूक्ष्म
परधर्मः—३-३५ दूसरे का धर्म, पराया धर्म
परधर्मात्—३-३५; १८-४७ दूसरे के धर्म की अपेक्षा, पर—पराये धर्म की अपेक्षा
परम्—२-१२ बाद में, २-५९; १३-३४ परमात्मा को, पर-ब्रह्म को; ३-११; ७-२४; ८-१०, २८; ९-११; १०-१२; ११-१८, ३८, ४७; १३-१२; १८-७५ परम, परम (को); ३-१९ मोक्ष को; ३-४२ सूक्ष्म; ३-४३; १३-१७; १४-१९ पर, उस पार का; ४-४ प्राचीन; ७-१३ ऊंचा श्रेष्ठ; ११-१८ अंतिम, परम; १४-१ भी, अब
परंतप—२-३; ४२, ५, ३३; ७-२७; ९-३; १०-४०; ११-५४; १८-४१ हे शत्रु को जीतनेवाले, अर्जुन शत्रु का नाश करनेवाले अर्जुन
परंतपः—२-९ शत्रु का नाश करने वाले अर्जुन
परमम्—८-३, ८, २१; १०-१, १२; ११-१, ९, १८; १५-६; १८-६४, ६८ उत्तम, परम
परमः—६-३२ उत्तम श्रेष्ठ
परमात्मा—६-७; १३-२२, ३१; १५-१७ ईश्वररूप हुआ आत्मा, ईश्वर, परमात्मा

परमाम्—८-१३, १५, २१; १८-४९ परम (को)
परमेश्वर—११-३ हे परमेश्वर
परमेश्वरम्—१३-२७ परमेश्वर को
परमेष्वासः—१-१-१७ बड़े धनुष-वाला
परम्पराप्राप्तम्—४-२ परंपरा से प्राप्त को
परया—१-२७; १२-२; १७-१७ अतिशय, परम (के द्वारा)
परस्तात्—८-९ उस पार
परस्परम्—३-११; १०-९ अन्योन्य को, एक-दूसरे को
परस्य—१७-१९ दूसरे के, पराये के
परः—४-४० दूसरा; ८-२० पर, उस पार का; ८-२२; १३-२२ परम, उत्तम
परा—३-४२ सूक्ष्म; १८-५० परम (निष्ठा)
पराणि—३-४२ सूक्ष्म
पराम्—४-३९; ६-४५; ७-५; ९-३२; १३-२८; १४-१; १६-२२, २३; १८-५४, ६२, ६८ परम, श्रेष्ठ, ऊंची
परिकीर्तितः—१८-७, २७ कहा गया है
परिक्लिष्टम्—१७-२१ दुःखपूर्वक, दुःख से
परिग्रहम्—१८-५३ बंधनकारक संचय को, परिग्रह को
परिचक्षते—१७-१३, १७ (वे) कहते हैं
परिचर्यात्मकम्—१८-४४ सेवारूप, नौकरी का
परिचिन्तयन्—चिंतन करते हुए
परिज्ञाता—१८-१८ ज्ञाता
परिणामे—१८-३७, ३८ परिणाम में, परिणामस्वरूप
परित्यज्य—१८-६६ त्याग कर
परित्यागः—१८-७ त्याग
परित्राणाय—४-८ परिपालन के लिए रक्षा के लिए
परिदह्यते—१-३० जलता है
परिवेदना—२-२८ दुःख, चिंता
परिपन्थिनौ—३-३४ (दो) चोर, शत्रु, बटमार
परिप्रश्नेन—४-३४ बार-बार प्रश्न करके
परिमार्गितव्यम्—१५-४ अत्यन्त शोधने योग्य, शोध करना चाहिए
परिशुष्यति—१-२९ सूखता है
परिसमाप्यते—४-३३ लय—अंतर्भाव—पाता है, पराकाष्ठा को पहुंचता है
पर्जन्यः ३-१४ वर्षा
पर्जन्यात्—३-१४ वर्षा से

पर्णानि—१५-१ पत्ते

पर्यवतिष्ठते—२-६५ स्थिर हो जाता है

पर्याप्तम्—१-१० परिमित, थोड़ा, पूर्ण, पर्याप्त

पर्युपासते—४-२५; ९-२२; १२-१, ३, २०, (वे) पूजते हैं, उपासना करते हैं, भजते हैं

पर्युषितम्—१७-१० रात की, बासी, रात की बसी हुई

पवताम्—१०-३१ पवित्र करने-वाली—वेगवाली वस्तुओं में

पवनः—१०-३१ पावन करने-वाला, पवन

पवित्रम्—४-३८; ९-२; १७; १०-१२ शुद्ध, पावन करने-वाला, पवित्र

पश्य—१-३, २५; ९-५ ११-५, ६, ७, ८ देख, देखो

पश्यतः—२-६९ देखनेवाले की, ज्ञान की

पश्यति—२-२९; ५-५; ६-३०, ३२; १३-२७, २९; (वह) देखता है; १८-१६ मानता है, समझता है

पश्यन्—५-८; ६-२०; १३-२८ देखता हुआ, पहचानता हुआ

पश्यन्ति—१-३८; १३-२४; १५-१०, ११ (वे) देखते हैं

पश्यामि—१-३१; ६-३३; ११-१५, १६, १७, १९ (मैं) देखता हूं

पश्येत्—४-१८ (वह) देखे

पाञ्चजन्यम्—१-१५ पांचजन्य (नाम के शंख) को

पाण्डव—४-३५; ६-२; ११-५५; १४-२२; १६-५ हे पांडुपुत्र अर्जुन

पाण्डवः—१-१४, २०; ११-१३ पांडु का पुत्र अर्जुन

पाण्डवानाम्—१०-३७ पांडवों का (—में)

पाण्डवानीकम्—१-२ पांडवों की सेना को

पाण्डवाः—१-१ पांडव पांडु के पुत्र

पाण्डुपुत्राणाम्—१-३ पांडुपुत्रों का, पांडवों का

पातकम्—१-३८ पाप (को)

पात्रे—१७-२० योग्य—पात्र—में (सत्पात्र को)

पापकृत्तमः—४-३६ बड़े-से-बड़ा पापी

पापम्—१-३६; ४५; २-३३, ३८; ३-३६; ५-१५; ७-२८ पाप, पाप को

पापयोनयः—९-३२ पापयोनि में जन्म पाये हुए

पापात्—१-३९ पाप से

पापाः—३-१३ पापी लोग
पापेन—५-१० पाप से
पापेभ्यः—४-३६ पापियों से, पापियों की अपेक्षा
पापेषु—६-९ पापियों में, पापियों के बारे में
पाप्मानम्—३-४१ पापरूप को, पापी को
पारुष्यम्—१६-४ कठोर वचन कहना, कठोरता
पार्थ—१-२५ इत्यादि; हे पार्थ, अर्जुन
पार्थः—१-२६; १८-७८ पृथा—कुन्ती का पुत्र, अर्जुन
पार्थस्य—१८-७४ पार्थ का
पार्थाय—११-९ पार्थ के लिए
पावकः—२-२३; १०-२३; १५-६ अग्नि
पावनानि—१८-५ पवित्र करनेवाले
पितरः—१-३४; बड़े लोग इत्यादि; १-४२ पितर लोग
पिता—९-१७; ११-४३, ४४; १४-४ बाप, पिता
पितामहः—१-१२ भीष्म; ९-१७ पितामह
पितामहान्—१-२६ पितामहों को
पितामहाः—१-३४ पितामह लोग, दादा
पितृव्रताः—९-२५ (श्राद्धादि द्वारा) पितरों का पूजन करनेवाले
पितृणाम्—१०-२९ पितरों में
पितॄन्—१-२६ बुजुर्गों को; ९-२५ पितरों को, पितृलोक को
पीडया—१७-१९ दुख—से—देकर, पीड़ा देकर
पुण्यकर्मणाम्—७-२८; १८-७१ पुण्यवानों का, सदाचारी (लोगों) का
पुण्यकृताम्—६-४१ पुण्यवानों के
पुण्यफलम्—८-२८ पुण्य का फल
पुण्यम्—९-२०; १८-७६ पवित्र
पुण्यः—७-९ पवित्र (गंध)
पुण्याः—९-३३ पुण्यवान
पुण्ये—९-२१ पुण्य में ('क्षीणे पुण्ये'—पुण्य क्षीण होने पर)
पुत्रदारगृहादिषु—१३-९ पुत्र, स्त्री और घर आदि में
पुत्रस्य—११-४४ पुत्र का
पुत्रान्—१-२६ पुत्रों को
पुत्राः—१-३४; ११-२६ पुत्र
पुनरावर्तिनः—८-१६ फिर पीछे आनेवाले—पुनः जन्म लेनेवाले
पुनर्जन्म—४-९; ८-१५, १६ पुनर्जन्म
पुनः—४-३५; ८-२६; ९-७, ८, ३३; ११-१६, ३९, ४९, ५०; १६-१३; १८-७७ फिर;

१३-४ पृथक्, अन्य-अन्य प्रकार से

पृथक्त्वेन—९-१५; १८-२१, २९ द्वैतरूप से; १८-२१ जुदा-जुदा (दिखते) होने से; १८-२९ जुदा-जुदा, अलग-अलग, पृथक् भाव से

पृथग्विधम्—१८-१४ नाना प्रकार का, जुदा-जुदा प्रकार का

पृथग्विधान्—१८-२१ नाना प्रकारवालों को

पृथग्विधाः—१०-५ नाना प्रकार के, जुदा-जुदा

पृथिवीपते—१-१८ हे राजा (धृतराष्ट्र)

पृथिवीम्—१-१९ पृथ्वी को

पृथिव्याम्—७-९; १८-४० पृथ्वी में

पृष्ठतः—११-४० पीछे से

पौण्ड्रम्—१-१५ उस नाम के (भीम के) शंख को

पौत्रान्—१-२६ पौत्रों को

पौत्राः—१-३४ पौत्र

पौरुषम्—७-८; १८-२५ पुरुषत्व, पराक्रम, शक्ति

पौर्वदेहिकम्—६-४३ पूर्व के, पिछले शरीर के, पूर्वजन्म के

प्रकाशकम्—१४-६ प्रकाशित करने वाले

प्रकाशयति—५-१६; १३-३३ दिखाता है, प्रकाशित करता है

प्रकाशम्—१४-२२ प्रकाश को

प्रकाशः—७-२५; प्रगट, ज्ञात; १४-११ प्रकाश

प्रकीर्त्या—११-३६ माहात्म्य से, कीर्तन से, माहात्म्य का कीर्तन करने से

प्रकृतिजान्—१३-२१ प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले (गुणों) को

प्रकृतिजैः—३-५; १८-४० प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले के द्वारा

प्रकृतिसंभवान्—१३-१९ प्रकृति-जन्य, प्रकृति से उत्पन्न होने-वाले (को)

प्रकृतिसंभवाः—१४-५ प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले

प्रकृतिस्थ—१३-२१ प्रकृति में स्थित

प्रकृतिस्थानि—१५-७ प्रकृति में स्थित (इंद्रियों को)

प्रकृतिम्—३-३३; ४-६; ७-५; ९-७,८, १२, १३; ११-५१; १३-१९, २३ प्रकृति को, स्वभाव को, मूल स्वभाव को

प्रकृतिः—७-४; ९-१०; १३-२०; १८-५९ प्रकृति, स्वभाव

प्रकृतेः—३-२७, २९, ३३; ९-८ पूर्वजन्म संस्कार—स्वभाव का, प्रकृति का

प्रकृत्या—७-२०; १३-२९ प्रकृति

द्वारा

प्रजनः—१०-२८ प्रजोत्पत्ति करनेवाला

प्रजहाति—२-५५ (वह) तजता है, त्यागता है

प्रजहीहि—३-४१ छोड़ ('मार' इस अर्थ का 'प्रजहि' पाठ भी है)

प्रजानाति—१८-३१ (वह)जानता है, समझता है

प्रजानामि—११-३१ (मैं) जानता हूं

प्रजापतिः—३-१०; ११-३९ ब्रह्मा, प्रजापति

प्रजाः—३-१०, २४ लोगों को, प्रजा को; १०-६ प्रजा, संतति

प्रज्ञा—२-५७, ५८, ६१, ६८ बुद्धि

प्रज्ञाम्—२-६७ बुद्धि को

प्रज्ञावादान्—२-११ पंडिताई के वचन—बोल

प्रणम्य—११-१४, ३५, ४४ प्रणाम करके

प्रणयेन—११-४१ स्नेह से, प्रेम से

प्रणवः—७-८ ओंकार, ॐ

प्रणश्यति—२-६३; ६-३०; ९-३१ (वह) नष्ट होता है

प्रणश्यन्ति—१-४० (वे) नाश को प्राप्त होते हैं

प्रणश्यामि—६-३० (मैं) नाश को प्राप्त होता हूं (परोक्ष—दूर—होता हूं)

प्रणष्टः—१८-७२ नष्ट

प्रणिधाय—११-४४ नीचा करके, नवाकर

प्रणिपातेन—४-३४ नमस्कार द्वारा, विनयपूर्वक, नम्रता-पूर्वक

प्रतपन्ति—११-३० तपता है, तपा रहा है

प्रतापवान्—१-१२ प्रतापी

प्रति—२-४३ तरफ, लिए, के वास्ते

प्रतिजानीहि—९-३१ (तू) निश्चय-पूर्वक जान

प्रतिजाने—१८-६५ (मैं) प्रतिज्ञा करता हूं

प्रतिपद्यते—१४-१४ (वह) पाता है, प्राप्त होता है

प्रतियोत्स्यामि—२-४ (मैं) सामने आऊं, लड़ूं (सामना करूंगा, लड़ूंगा)

प्रतिष्ठा—१४-२७ स्थान, स्थिति

प्रतिष्ठाप्य—६-११ स्थापना करके

प्रतिष्ठितम्—३-१५ प्रतिष्ठित, रहा हुआ

प्रतिष्ठिता—२-५७, ५८, ६१, ६८ स्थिर, प्रतिष्ठित हुई

प्रत्यक्षावगमम्—९-२ प्रत्यक्ष बोध हो ऐसी (—ऐसा), प्रत्यक्ष

अनुभव में आने योग्य
प्रत्यनीकेषु—११-३२ शत्रु की सेना में, प्रतिपक्षियों में
प्रत्यवायः—२-४० अड़चन, विघ्न, विपरीत परिणाम
प्रत्युपकारार्थम्—१७-२१ बदले के लिए, बदले की आशा से
प्रथितः—१५-१८ प्रसिद्ध, प्रख्यात
प्रदध्मतुः—१-१४ बजाए, फूंके
प्रदिष्टम्—८-२८ कहा हुआ
प्रदीप्तम्—११-२९ प्रदीप्त—जलते हुए (अनल में)
प्रदुष्यन्ति—१-४१ दूषिद होती हैं
प्रद्विषन्तः—१६-१८ अत्यंत द्वेष करनेवाले
प्रपद्यते—७-१९ (वह) आश्रय लेता है, पहुंचता है, पाता है
प्रपद्ये—१५-४ (मैं) शरण में जाता हूं, शरण पाता हूं
प्रपद्यन्ते—४-११; ७-१४, १५, २० (वे) आश्रय लेते हैं, भजते हैं, शरण में जाते-आते हैं
प्रपन्नम्—२-७ शरण में आए हुए को
प्रपश्य—११-४९ देख
प्रपश्यद्भिः—१-३९ देखनेवालों (के द्वारा) समझनेवालों (से)
प्रपश्यामि—२-८ (मैं) देखता हूं
प्रपितामहः—११-३९ परदादा, पितामह, ब्रह्मदेव का पिता
प्रभवित—८-१९ (वह) उत्पन्न होता है
प्रभवन्ति—८-१८; १६-९ (वे) उत्पन्न होते हैं
प्रभवम्—१०-२ उत्पत्ति को
प्रभवः—७-६; ९-१८; १०-८ उत्पत्ति का कारण
प्रभविष्णु—१३-१६ उत्पन्न करनेवाला, कर्त्ता
प्रभा—७-८ तेज
प्रभाषेत—२-५४ बोलना चाहिए, बोले
प्रभुः—५-१४; ९-१८, २४ स्वामी, प्रभु
प्रभो—११-४; १४-२१ हे प्रभो
प्रमाणम्—३-२१; १६-२४ प्रमाण
प्रमाथि—६-३४ मथनेवाली, क्षोभकारक
प्रमाथीनि—२-६० मंथन करनेवाली
प्रमादमोहौ—१४-१७ प्रमाद (असावधानी) और मोह
प्रमादः—१४-१३ प्रमाद, असावधानी
प्रमादात्—११-४१ गफलत से, भूल से

प्रमादालस्यनिद्राभिः—१४-८ प्रमाद (कर्तव्य न करना, अकर्तव्य करना), आलस (उत्साह-प्रतिबंध) और निद्रा द्वारा; असावधानी, आलस और निद्रा से (—के पाश से)
प्रमादे—१४-९ कर्तव्यशून्यता में
प्रमुखे—२-६ सामने
प्रमुच्यते—५-३; १०-३ (वह) छूटता है, मुक्त होता है
प्रयच्छति—९-२६ (वह) देता है, अर्पण करता है
प्रयतात्मनः—९-२६ नित्य शुद्ध चित्तवाले पुरुष की प्रयत्नशील मनुष्य की
प्रयत्नात्—६-४५ विशेष प्रयत्न से
प्रयाणकाले—७-३०; ८-२, १० मृत्युसमय में
प्रयाताः—८-२३, २४ गये हुए, मृत
प्रयाति—८-५, १३ (वह) जाता है मरता है
प्रयुक्तः—३-३६ प्रेरा हुआ, प्रेरित किया हुआ
प्रयुज्यते—१७-२६ (वह) प्रयुक्त होता है, का प्रयोग होता है
प्रलपन्—५-९ बोलता हुआ
प्रलयम्—१४-१४, १५ प्रलय मृत्यु, मौत (को)
प्रलयः—७-६; ९-१८ नाश मरण, नाश का कारण
प्रलयान्ताम्—१६-११ मौत के साथ अंत पानेवाली, प्रलय तक जिसका अंत ही नहीं ऐसी
प्रलये—१४-२ प्रलयकाल में
प्रलीनः—१४-१५ मृत्यु-प्राप्त, मृत, मरा हुआ
प्रलीयते—८-१९ (वह) लय होता है, नाश को प्राप्त होता है
प्रलीयन्ते—८-१८ (उनका) प्रलय होता है, (वे) लय होते हैं
प्रवक्ष्यामि—४-१६; ९-१; १३-१२; १४-१ (मैं) कहूंगा, ठीक कहूंगा—
प्रवक्ष्ये—८-११ (मैं) कहूंगा, वर्णन करूंगा
प्रवदताम्—१०-३२ वाद (विवाद) करनेवालों का
प्रवदन्ति—२-४२; ५-४ (वे) कहते हैं, बोलते हैं
प्रवर्तते—५-१४; १०-८ (वह) चलता है, बरतता है, करता हैं
प्रवर्तन्ते—१६-१०; १७-२४ (वे) चलते हैं, बरतते हैं
प्रवर्तितम्—३-१६ चलाये हुए

प्रविभक्तम्—११-१३ जुदा-जुदा विभागों में पड़े हुए, विभक्त हुए
प्रविभक्तानि—१८-४१ भिन्न-भिन्न—जुदा किये हुए
प्रविलीयते—४-२३ (वह) लय—नाश को—प्राप्त होता है
प्रविशन्ति—२-७० (वे) प्रवेश करते हैं
प्रवृत्तः—११-३२ प्रवृत्त हुआ
प्रवृत्तिम्—११-३१; १४-२२; १६-७; १८-३० चेष्टा, व्यापार, राजसी कार्य, प्रवृत्ति को
प्रवृत्तिः—१४-१२ प्रवृत्ति; १५-४ संसार, माया, प्रवृत्ति; १८-४६ उत्पत्ति, व्यापार, प्रवृत्ति
प्रवृत्ते—१-२० प्रवृत्त होने पर, चालू होने पर
प्रवृद्धः—११-३२ वृद्धि पाया हुआ
प्रवृद्धे—१४-१४ वृद्धि पाये हुए में, वृद्धि पाने पर
प्रवेष्टुम्—११-५४ प्रवेश करने के लिए, सायुज्य मुक्ति पाने के लिए
प्रव्यथितम्—११-२०, ४५ भय-भीत हुआ, त्रस्त, व्याकुल
प्रव्यथितान्तरात्मा—११-२४ जिसका आत्मा व्याकुल हुआ है ऐसा
प्रव्यथिताः—११-२३ भयभीत, त्रस्त (हो गये हैं)
प्रशस्ते—१७-२६ श्रेष्ठ, अच्छे
प्रशान्तमनसम्—६-२७ जिसका मन अच्छी प्रकार शांत हुआ है उसे, शांतिचित्त को
प्रशान्तस्य—६-७ शांतचित्त का, संपूर्ण रीति से शांत हुए को
प्रशान्तात्मा—६-१४ जिनका अंतःकरण पूर्ण शांत है ऐसा (पूर्ण शांति से युक्त)
प्रसक्ताः—१६-१६ आसक्त, मस्त हुए
प्रसङ्गेन—१८-३४ प्रसंग के आने पर, असक्ति से (—पूर्वक)
प्रसन्नचेतसः—२-६५ प्रसन्नचित्त-वाले की, प्रसन्नता प्राप्त किये हुए की
प्रसन्नात्मा—१८-५४ प्रसन्नचित्त
प्रसन्नेन—११-४७ प्रसन्न होने-वाले के द्वारा प्रसन्न होकर
प्रसभम्—२-६० बलात्कार से; ११-४१ अनुचित रीति से
प्रसविष्यध्वम्—३-१० (तुम) वृद्धि को प्राप्त होओ
प्रसादये—११-४४ (मैं) प्रसन्न करता हूं, प्रसन्न होने की प्रार्थना

करता हूं
प्रसादम्—२-६४ शांति, प्रसन्नता (को)
प्रसादे—२-६५ प्रसाद में, चित्त, प्रसन्नता से, चित्त प्रसन्न होने पर
प्रसिद्ध्येत्—३-८ (वह) सिद्ध हो, चले
प्रसीद—११-२५, ३१, ४५ (तू) प्रसन्न हो
प्रसृता—१५-४ प्रसृत, प्रसार की हुई
प्रसृताः—१५-२ प्रसृत हैं
प्रहसन्—२-१० हँसते-हँसते
प्रहास्यसि—२-३९ (तू)—से छूटेगा, छोड़ेगा, तोड़ेगा
प्रहृष्यति—११-३६ (वह) हर्ष पाता है
प्रहृष्येत्—५-२० (वह) हर्षित हो, सुख माने
प्रह्लादः—१०-३० भक्त प्रह्लाद
प्राकृतः—१८-२८ पामर, असंस्कारी
प्राक्—५-२३ पहले
प्राञ्जलयः—११-२१ जिनके हाथ जुड़े हैं ऐसे, हाथ जोड़कर, हाथ जोड़े हुए
प्राणकर्माणि—४-२७ प्राणकर्मों को
प्राणम्—४-२९; ८-१०, १२ प्राणवायु को, प्राण को
प्राणान्—१-३३; ४-३० प्राणों को,
प्राणापानगती—४-२९ प्राण और अपान वायु की (दो)गतियों को
प्राणापानसमायुक्तः—१५-१४ प्राण और अपान वायु से युक्त (होकर)
प्रणापानौ—५-२७ प्राण और अपान वायु को
प्राणायामपरायणः—४-२९ प्राणायाम में तत्पर रहनेवाले
प्राणिनाम्—१५-१४ प्राणियों के
प्राणे—४-२९ प्राणवायु में
प्राणेषु—४-३० प्राणों में
प्राधान्यतः—१०-१९ मुख्य रूप से, मुख्य-मुख्य
प्राप्तः—१८-५० प्राप्त
प्राप्नुयात्—१८-७१ (वह) प्राप्त करे
प्राप्नुवन्ति—१२-४ (वे) प्राप्त करते हैं
प्राप्य—२-५७ ७२; ५-२०; ६-४१; ८-२१, २५; ९-३३ प्राप्त करके, पाकर
प्राप्यते—५-५ प्राप्त किया जाता है
प्राप्स्यसि—२-३७; १८-६२ (तू) पायेगा, प्राप्त करेगा
प्राप्स्ये—१६-१३ (मैं) पाऊंगा,

फ

फले—५-१२ फल में
फलेषु—२-४७ फलों में

ब

वत—१-४५ खेददर्शक उद्गार, (कैसी दुःख की वात है !)
बद्धाः—१६-१२, बंधे हुए, फंसे हुए
बध्नाति—१४-६ (वह) बांधता है
बध्यते—४-१४ (वह) बंधता है
बन्धम्—१८-३० वंधन को
बन्धात्—५-३ बंधन से
बन्धु—६-५, ६ भाई, वंधु, सगा, मित्र
बन्धून्—१-२७ भाइयों को वांधवों को
बभूव—२-९ (वह) हुआ
वलम्—१-१० सैन्य; ७-११; १६-१८; १८-५३ वल, पराभव करने की शक्ति
वलवताम्—७-११ वलवानों का
वलवत्—६-३४ पराक्रमी, वलवान
वलवान्—१६-१४ बलवान
बलात्—३-३६ वल से, बलात्कार से
वहवः—१-९; ४-१०; ११-२८ बहु, घने, बहुत
बहिः—५-२७; १३-१५ वाहर
वहुदंष्ट्राकरालम्—११-२३ बहुत-सी विकराल दाढ़ोंवाले, बहुत-सी दाढ़ों के कारण भयंकर
वहुधा—९-१५; १३-४ वहुत प्रकार से, अनेक प्रकार से
वहुना—१०-४२ वहुत अधिक (जानने) से
वहुबाहूरुपादम्—११-२३ वहुत-से हाथ, जांघ और पैरवाला
वहुमतः—२-३५ मान को प्राप्त
वहुलायासम्—१८-२४ बहुत क्लेश उत्पन्न करनेवाला, धांधली-पूर्वक
वहुवक्त्रनेत्रम्—११-२३ वहुत-से मुख और आंखोंवाला
वहुविधाः—४-३२ वहुत प्रकार के
वहुशाखाः—२-४१ वहुत शाखा-वाली
वहूदरम्—११-२३ बड़े पेट वाला
वहूनाम्—७-१९ वहुत
वहूनि—४-५; ११-६ वहुत
वहून—२-२६ वहुत-सों (को); अनेक (को)
वालाः—५-४ अविचारी, विवेक-हीन लोग, अज्ञानी लोग
वाह्यस्पर्शेषु—२-२१ वाहर के पदार्थों के साथ इन्द्रियों के संयोगों में, वाह्य, विषयों में
वाह्यान्—५-२७ वाहर के
बिभर्ति—१५-१७ (वह) धारण करता है, पुष्ट करता है

४-२४, ३१; ५६, १६; ७-२६; ८-१, ३, १३, २४; १०-१२; १३-१२, ३०; १८-५० ब्रह्म, परब्रह्म

ब्रह्मकर्म—१८-४२ ब्राह्मण का कर्म

ब्रह्मकर्मसमाधिना—४-२४ कर्म-मात्र ब्रह्म है जिसे ऐसा निश्चय हो गया है उस पुरुष से, कर्म के साथ जिसने ब्रह्म का मेल वैठा लिया है उसके द्वारा

ब्रह्मचर्यम्—८-११; १७-१४ ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचारिव्रते—६-१४ ब्रह्मचर्य के व्रत में, ब्रह्मचर्य के वारे में

ब्रह्मणः—४-३२ ब्रह्मा के वेद के; ६-३८; ८-१७; ११-३७ ब्रह्मा के; १४-२७; १७-२३ ब्रह्म का

ब्रह्मणा—४-२४ ब्रह्म के द्वारा

ब्रह्मणि—५-१०; १६, २० ब्रह्म में

ब्रह्मनिर्वाणम्—२-७२; ५-२४, २५, २६ ब्रह्मरूप निर्वाण को

ब्रह्मभूतम्—६-२७ ब्रह्ममय होनेवाले को

ब्रह्मभूतः—५-२४; १८-५४ ब्रह्मरूप हुआ, ब्रह्मभाव को प्राप्त हुआ

ब्रह्मभूयाय—१४-२६; १८-५३ ब्रह्मसाक्षात्कार के लिए, ब्रह्मभाव के (प्राप्त करने के) लिए, ब्रह्मरूप बनने के लिए

ब्रह्मयोगयुक्तात्मा—५-२१ ब्रह्म में समाधि के द्वारा ब्रह्म से व्याप्त, ब्रह्मपरायण पुरुष

ब्रह्मवादिनाम्—१७-२४ वेद-वेत्ताओं की, ब्रह्मवादियों की

ब्रह्मवित्—५-२० ब्रह्म को जाननेवाला पुरुष

ब्रह्मविदः—८-२४ ब्रह्मवेत्ता

ब्रह्मसंस्पर्शम्—६-२८ ब्रह्म की प्राप्ति से होनेवाले आत्मानुभव के (सुख को) ब्रह्मप्राप्तिरूप (आनंद को)

ब्रह्मसूत्रपदैः—१३-४ ब्रह्मसूत्रों के पदों द्वारा, ब्रह्मसूचक वाक्यों द्वारा

ब्रह्माग्नौ—४-२४, २५ ब्रह्मरूपी अग्नि में

ब्रह्माणम्—११-१५ ब्रह्मा को, ब्रह्मदेव को

ब्रह्मोद्भवम्—३-१५ प्रकृति से अथवा वेद से उत्पन्न

ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्—१८-४१ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के

ब्राह्मणस्य—२-४६ ब्रह्म के ज्ञाता का, ब्रह्मपरायण का

ब्राह्मणाः—९-३३; १७-२३ ब्राह्मण

ब्राह्मणे—५-१८ ब्राह्मण में,

भवतः ४-४ आपका; १४-१७ (वे दो) उत्पन्न होते हैं

भवति—१-४४; २-६३; ३-१४; ४-७, १२; ६-२, १७, ४२; ७-२३; ९-३१; १४-३, १०, २१; १७-२, ३, ७; १८-१२ (वह) होता है पैदा होता है, उत्पन्न होता है

भवन्तम्—११-३१ आपको

भवन्तः—१-११ आप, आप सब

भवन्ति—३-१४; १०-५; १६-३ (वे) होते हैं, पैदा होते हैं

भवः—१०-४ उद्भव, उत्पत्ति, जन्म

भवान्—१-८; १०-१२; ११-३१ आप

भवाप्ययौ—११-२ उत्पत्ति और नाश (प्रलय)

भवामि—१२-७ (मैं) होता हूं

भविता—२-२०; १८-६९ होने-वाला, (वह) होगा

भविष्यताम्—१०-३४ भविष्य में उत्पन्न होनेवालों का

भविष्यति—१६-१३ (वह) होगा

भविष्यन्ति—११-३२ (वे) होंगे

भविष्याणि—७-२६ इसके बाद होनेवाला

भविष्यामः—२-१२ (हम) होंगे

भवेत्—१-४६; ११-१२ (वह) हो

भस्मसात्—४-३७ भस्मीभूत, भस्मरूप

भारत—१-२४; २-१० हे भारत (भरतकुलोत्पन्न) धृतराष्ट्र; २-१४; इत्यादि; हे भारत अर्जुन

भावना—२-६६ ध्यान, भक्ति

भावम्—७-१५ भाव-स्वभाव को; ७-२४, ८-६; ९-११ स्वरूप को; १८-२० भाव—वस्तु को

भावयतः—३-११ (तुम) पोषण करो

भावयन्तः—३-११ पोषण करके

भावयन्तु—३-११ पोषण करें

भावसमन्विताः—१०-८ भावना-वाले प्रेमयुक्त, भावपूर्वक

भावसंशुद्धिः—१७-१६ अंतःकरण की निर्मलता, भावनाशुद्धि

भावः—२-१६ अस्तित्व, हस्ती; ८-४, २० भाव, तत्त्व, स्व-रूप; १८-१७ भाव, भावना

भावाः—७-१२ भाव, पदार्थ; १०-५ भाव, भावना

भावेषु—१०-१७ पदार्थों में, भावों में, रूपों में

भावैः—७-१३ भावों से, स्वभावों से

भाषसे—२-११ (तू) बोलता है

भाषा—२-५४ लक्षण, व्याख्या

भासयते—१५-६, १२ प्रकाशित

करता है
भासः—११-१२ तेज का, कांति का; ११-३० तेज, प्रकाश
भास्वता—१०-११ प्रकाशमय, उज्ज्वल (ज्ञानद्वीप) से
भाः—११-१२ तेज
भिन्ना—७-४ भेदवाली, भिन्न
भीतभीतः—११-३५ भयभीत हुआ
भीतम्—११-५० भयभीत (अर्जुन) को
भीतानि—११-३६ भयभीत ए
भीताः—११-२१ भयभीत होकर
भीमकर्मा—१-१५ पराक्रमी, भयानक कर्मवाला
भीमाभिरक्षितम्—१-१० भीम द्वारा रक्षित
भीमार्जुनसमाः—१-४ भीम और अर्जुन के समान
भीष्मद्रोणप्रमुखतः—१-२५ भीष्म और द्रोण के सामने
भीष्मम्—१-११; २-४; ११-३४ भीष्म को
भीष्मः—१-८; ११-२६ भीष्म-पितामह
भीष्माभिरक्षितम्—१-१० भीष्म द्वारा रक्षित (सेना)
भुक्त्वा—९-२१ भोगकर
भुङ्क्ते—३-१२; १३-२१ (वह) भोगता है
भुङ्क्ष्व—११-३३ (तू) भोग
भुञ्जते—३-१३ (वे) भोगते हैं, खाते हैं
भुञ्जानम्—१५-१० भोगनेवाले को
भुञ्जीय—२-५ मैं भोगूं
भुवि—१८-६९ पृथ्वी में
भूतगणान्—१७-४ भूतगणों को
भूतग्रामम्—९-८ प्राणियों के समुदाय मात्र को—सारे समुदाय को; १७-६ (पंच) महाभूतों को
भूतग्रामः—८-१९ भूतसमुदाय, प्राणियों का समुदाय
भूतपृथग्भावम्—१३-३० प्राणियों का नानात्व—अनेकत्व जीवों के भिन्न-भिन्न अस्तित्व
भूतप्रकृतिमोक्षम्—१३-३४ प्रकृति के बंधन से प्राणियों की मुक्ति
भूतभर्तृ—१३-१६ प्राणियों का पोषण करनेवाला
भूतभावन—१०-१५ हे प्राणियों को उत्पन्न करनेवाले, जीवों के पिता
भूतभावनः—९-५ भूतों को उत्पन्न करनेवाला
भूतभावोद्भवकरः—८-३ सृष्टि उत्पन्न करनेवाला, प्राणी-मात्र को उत्पन्न करनेवाला

भूतभृत्—९-५ भूतों को धारण करनेवाला, जीवों का भरण करनेवाला

भूतमहेश्वरम्—९-११ भूतों के महेश्वर—स्वामी को, प्राणी-मात्र के महेश्वर (रूप) को

भूतविशेषसंघान्—११-५५ भूत विशेष के समुदाय को, जुदे-जुदे प्रकार के प्राणियों के समुदायों को

भूतसर्गौ—१६-६ प्राणियों की दो सृष्टियां (संपत्)

भूतस्थः—९-५ जीवों में रहा हुआ

भूतम्—१०-३९ भूत, अस्तित्व वाला कोई भी, भूतमात्र

भूतादिम्—९-१३ भूतों के कारण-रूप को, प्राणियों के आदि-कारण को

भूतानाम्—४-६ १०-५, २०, २२; ११-२; १३-१५; १८-४६ भूतमात्र का, भूतों का, प्राणियों का

भूतानि—२-२८,३०, ६९; ३-१४; ३३; ४-३५; ७-६, २६; ८-२२; ९-५, ६; १५-१३, १६ भूत, प्राणी, भूत-मात्र; २-३४ लोग; ९-२५ भूतों को भूतप्रेतादि लोक को

भूतिः—१८-७८ उत्तरोत्तर ऐश्वर्य की वृद्धि, वैभव

भूतेज्याः—९-२५ विनायकादि भूतगण की पूजा करनेवाले, भूतप्रेतादि को पूजनेवाले

भूतेश—१०-१५ हे भूतों के पति, जीवों के ईश्वर

भूतेषु—७-११; ८-२०; १३-१६, १७; १६-२; १८-२१, ५४ प्राणियों में, प्राणियों के विषय में

भूत्वा—२-२०,३५, ४८; ३-३०; ८-१९; ११-५०; १५-१३, १४ होकर, उत्पन्न हो-होकर

भूमिः—७-४ पृथ्वी (तन्मात्रा)

भूमौ—२-८ भूमि में, इस लोक में

भूयः—२-२०; ६-४३; १०-१, १८; ११-३५, ३९, ५०; १३-२३; १४-१; १५-४; १८-६४ फिर से, अब फिर; ७-२ अधिक

भूः—२-४७ देखो, 'मा भूः' (न होओ)

भृगुः—१०-२५ भृगु ऋषि

भेदम्—१७-७; १८-२९ भेद को

भेर्यः—१-१३ भेरियां, नगाड़े

भैक्ष्यम्—२-५ भिक्षा, भिक्षान्न

भोक्ता—९-२४; १३-२२ भोगने-वाला, भोक्ता

भोक्तारम्—५-२९ भोक्ता को

भोक्तुम्—२-५ खाने को, खाना

८-२ हे मधुसूदन कृष्ण

मधुसूदनः—२-१ मधुसूदन कृष्ण

मध्यम्—१०-२०; ३२; ११-१६ मध्य स्थिति, मध्य

मध्ये—१-२१, २४; २-१०; ८-१०; १४-१८ बीच में, मध्य में

मनवः—१०-६ मनु

मनवे—४-१ (अपने—विवस्वान के पुत्र) मनु को

मनसः—३-४२ मन से, मन की अपेक्षा

मनसा—३-६, ७, ४२; ५-११, १३; ६-२४; ८-१० मन से, मन द्वारा

मनः—१-३० मगज, चित्त; २-६०, ६७; ३-४०, ४२; ५-१९; ६-१२, १४, २५, २६, ३४,३५; ७-४; ८-१२; १०-२२; ११-४५; १२-२, ८; १५-९; १७-११ मन, मन को

मनःप्रसादः—१७-१६ मन की प्रसन्नता, चित्तप्रसन्नता

मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः—१८-३३ मन, प्राण और इन्द्रियों की क्रियाओं को

मनःषष्ठानि—१५-७ जिनके साथ मन छठा है, उन पांच इंद्रियों को

मनीषिणः—२-५१; १८-३ बुद्धिमान् लोग, विचारवान पुरुष

मनीषिणाम्—१८-५ विवेकियों का

मनुष्यलोके—१५-२ मनुष्यलोक में

मनुष्याणाम्—१-१४ मनुष्यों का; ७-३ मनुष्यों में

मनुष्याः—३-२३; ४-११ लोग

मनुष्येषु—४-१८; १५-६९ मनुष्यों में, लोगों में

मनुः—४-१ (वैवस्वत) मनु

मनोगतान्—२-५५ मन में स्थित (कामनाओं)को, मन में आये हुए को

मनोरथम्—१६-१३ मनोरथ को, इच्छा को

मन्तव्यः—९-३० मानने योग्य, मानना चाहिए

मन्त्रहीनम्—१७-१३ मंत्ररहित

मन्त्रः—९-१६ यज्ञ में बोला जाने-वाला मंत्र

मन्दान्—३-२९ मंदबुद्धियों को

मन्मनाः—९-३४; १८-६५ मुझमें मन लगानेवाला, मुझमें लगनवाला

मन्मयाः—४-१० मुझमें परायण, मेरा ही ध्यान धरनेवाले

मन्यते—२-१९; ३-२७; ६,२२; १८-३२ (वह) मानता है

मन्यन्ते—७-२४ (वे) मानते हैं

मन्यसे—२-२६; ११-४; १८-५६ (तू) मानता है

मन्ये—६-३४; १०-१४ (मैं) मानता हूं

मन्येत—५-८ (उसको) मानना चाहिए, (वह) माने, समझे

मम—१-७, २६; २-८; ३-२३; ४-११; ७-१४, १७, २४; ८-२१; ९-५, ११; १०-७, ४०, ४१; ११-१, ७, ४९, ५२; १३-२; १४-२, ३; १५-६, ७; १८-७८ मेरा

मया—१-२२; ३-३; ४-३; १३; ७-२२; ९-४, १०; १०-१७, ३९; ४०; ११-२, ४, ३३, ३४, ४१, ४७; १५-२०; १६-१३, १४, १५; १८-६३, ७३ मुझसे, मेरे द्वारा

मयि—३-३०; ४-३५; ६-३०, ३१; ७-१, १२; ८-७; ९-२९; १२-२, ६, ७, ८, ९, १४; १३-१०; १८-५७, ६८ मुझमें

मय्यर्पितमनोबुद्धिः—१२-१४ मुझमें मन और बुद्धि अर्पित करनेवाले

मय्यावेशितचेतसाम्—१२-७ मुझमें जिनका चित्त पिरोया हुआ है उनका—उनको

मरणात्—२-३४ मरण से, मरण की अपेक्षा

मरीचिः—१०-२१ मरीचि (नामक वायु)

मरुतः—११-६, २२ मरुत, मरुतों को

मरुताम्—१०-२१ (सात) मरुतों (वायुओं) को, वायुओं में

मर्त्यलोकम्—९-२१ मृत्युलोक में संसार (को)

मर्त्येषु—१०-३ मरणशील—मनुष्यों—में, मृत्युलोक में

मलेन—३-३८ मैल से

महतः—२-४० बड़े (भय) से

महता—४-२ बड़े (दीर्घ काल) से

महति—१-१४ बड़े (में)

महतीम्—१-३ बड़ी सेना को

महत्—१-४५; ११-२३; १४-३, ४ बड़ा, विशाल

महद्ब्रह्म—१४-३ प्रकृति, महद्-ब्रह्म

महद्योनिः—१४-४ विशाल उत्पत्तिस्थान

महर्षयः—१०-२, ६ महर्षि

महर्षिसिद्धसंघाः—११-२१ महर्षियों और सिद्धों के समूह—समुदाय

महर्षीणाम्—१०-२, २५ महर्षि-

यों का, महर्षियों में

महात्मनः—११-१२; १८-७४; महात्मा का

महात्मन्—११-२०, ३७ हे महात्मन्

महात्मा—७-१९; ११-५० महात्मा

महात्मानः—८-१५; ९-१३ महात्मा

महानुभावान्—२-५ प्रभावशाली आर्यों को, महानुभावों को

महान्—९-६; १८-७७ बड़ा, महान्

महापाप्मा—३-३७ महापापी

महाबाहुः—१-१८ महाबाहु, लंबी बाहुवाला

महाबाहो—२-२६, ६८; ३-२८, ४३; ५-३, ६; ६-३५, ३८; ७-५; १०-१; ११-२३; १४-५; १८-१, १३ हे लंबी बाहुवाले

महाभूतानि—१३-५ (पंच) महाभूत—पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश

महायोगेश्वरः—११-९ महायोगेश्वर

महारथः—१-४, १७ महारथी

महारथाः—१-६; २-३५ महारथी (अनेक)

महाशंखम्—१-१५ बड़े शंख को

महाशनः—३-३७ बहुत खानेवाला, पेटू

महिमानम्—११-४१ महिमा को

महीकृते—१-३५ पृथ्वी के लिए, जमीन (के टुकड़े) के लिए

महीक्षिताम्—१-२५ राजाओं का

महीपते—१-२१ हे महीपति, हे राजन्

महीम्—२-३७ पृथ्वी को

महेश्वरः—१३-२२ महेश्वर, स्वामी

महेष्वासाः—१-४ बड़े धनुर्धारी

मंस्यन्ते—२-३५ (वे) मानेंगे

मा—२-३, ४७, नहीं—मा (निषेधवाचक); ११-४९ न होओ; माभूः २-४७ न होओ; मा व्यथिष्ठाः ११-३४ डरो मतः त्रास मत पाओ; मा शुचः—१६-५; ११-६६ शोक न कर, विषाद न कर; मा स्म गमः २-३ न जा—न प्राप्त हो

माता—९-१७ माता

मातुलान्—१-२६ मामाओं को

मातुलाः—१-३४ मामा

मात्रास्पर्शाः—२-१४ बाह्य पदार्थों के संयोग, इंद्रियों के स्पर्श

माधव—१-३७ हे माधव-कृष्ण

माधवः—१-१४ कृष्ण

मुहुः—१८-७६ फिर से

मुमुक्षुभिः—४-१५ मोक्ष की इच्छा करनेवालों द्वारा

मुह्यति—२-१३; ८-१७ (वह) मोहग्रस्त होता है, मूर्च्छित होता है

मुह्यन्ति—५-२५ (वे) मोहग्रस्त होते हैं, मोह में फंसते हैं

मूढ़ग्राहेण—१७-१९ दुराग्रह से

मूढ़योनिषु—१४-१५ पश्वादि योनियों में, मूढ़ योनियों में

मूढ़ः—७-२५ अज्ञान, मूढ़

मूढ़ाः—७-१५; ९-११; १६-२० मूर्ख लोग, मूढ़ लोग

मूर्तयः—१४-४ मूर्ति, प्राणी

मूर्ध्नि—८-१२ मस्तक—ब्रह्म-रंध्र—में

मूलानि—१५-२ जड़, मूल

मृगाणाम्—१०-३० मृगों का—पशुओं का (—में)

मृगेन्द्रः—१०-३० सिंह

मृतम्—२-२६ मरे हुए, मरने-वाले को

मृतस्य—२-२७ मरे हुए का

मृत्युम्—१३-२५ मृत्यु को

मृत्युसंसारवर्त्मनि—९-३ मृत्युमय संसारमार्ग में

मृत्युसंसारसागरात्—१२-७ मृत्यु-मय संसार से, मृत्युरूपी संसार-सागर से

मृत्युः—२-२७; ९-१९; १०-३४ मृत्यु, मरण

मे—१-२१, २९, ३०, ४६; ३-२, २२, ३१, ३२; ४-३, ५, ९, १४; ६-३०, ३६, ३९, ४७; ७-४, ५. १८; ९-५, २९, ३१; १०-१, २, १८, १९; ११-५, ८, १८, ४५, ४७, ४९; १२-२, १४, १५,१६, १७, १९, २०; १३-३; १६-६, १३; १८-४, ६, ६४, ६५, ६९, ७०, ७७ मेरा; २-७; ५-१; ९-२६; १०-१३; ११-४, ३१, ४५ मुझे; १८-१३,३६, ५० मेरे पास से

मेधा—१०-३४ बुद्धि

मेधावी—१८-१० आत्मज्ञानी, बुद्धिमान

मेरुः—१०-२३ मेरु पर्वत

मैत्रः—१२-१३ मित्र भाववाला

मोक्षकांङ्क्षिभिः—१७-२५ मुमु-क्षुओं से, मोक्षेच्छुओं द्वारा

मोक्षपरायणः—५-२८ मोक्ष के विषय में परायण

मोक्षयिष्यामि—१८-६६ (मैं) मुक्त करूंगा

मोक्षम्—१८-३० मोक्ष को

मोक्ष्यसे—४-१६; ९-१, २८

(तू) मुक्ति पायेगा, बचेगा

मोघकर्माणः—६-१२ व्यर्थ कर्म करनेवाले

मोघज्ञानाः—६-१२ मिथ्या ज्ञान-वाले

मोघम्—३-१६ व्यर्थ, फिजूल

मोघाशाः—६-१२ व्यर्थ आशा-वाले

मोदिष्ये—१६-१५ (मैं) आनन्द मानूंगा

मोहकलिलम्—२-५२ मोहरूपी कीचड़ को

मोहजालसमावृताः—१६-१६ मोह-जाल में फंसे हुए

मोहनम्—१४-८; १८-३९ मोह-कारक, मोह में डालनेवाला, मूर्च्छा प्राप्त करानेवाला

मोहम्—४-३५; १४-२२ मोह (को)

मोहयसि—३-२ (तू) भ्रमित करता है, शंकाशील बनाता है

मोहः—११-१; १४-१३; १८-७३ मोह, मूढ़ता

मोहात्—१६-१०; १८-७, २५, ६० मोह से, मोह के वश होकर

मोहितम्—७-१३ मोहग्रस्त

मोहिताः—४-१६ मोहग्रस्त

मोहिनीम्—६-१२ मोहमयी, मोह में रखनेवाली (को)

मौनम्—१०-३८; १७-१६ मौन, वाणी का संयम

मौनी—१२-१६ मौन रखनेवाला

म्रियते—२-२० मरता है

य

यक्षरक्षसाम्—१०-२३ यक्षों और राक्षसों में

यक्षरक्षांसि—१७-४ यक्षों और राक्षसों को

यक्ष्ये—१६-१५ (मैं) यज्ञ करूंगा

यच्छ्रद्धः—१७-३ जैसी श्रद्धावाला

यजन्तः—६-१५ पूजन करते हुए

यजन्ति—६-२३ (वे) भजते हैं, पूजा करते हैं

यजन्ते—४-१२; ६-२३; १६-१७; १७-१, ४ (वे) पूजते हैं, यज्ञ करते हैं, भजते हैं

यजुः—६-१७ यजुर्वेद

यज्ञक्षपितकल्मषाः—४-३० यज्ञ द्वारा जिनके पाप क्षीण हो गये हैं, नष्ट हो गये हैं वे

यज्ञतपसाम्—५-२९ यज्ञ और तप का

यज्ञतपःक्रियाः—१७-२५ यज्ञ और तपरूपी क्रियाएं

यज्ञदानतपःकर्म—१८-३, ५ यज्ञ, दान और तपरूपी कर्म

यज्ञदानतपःक्रियाः—१७-२४ यज्ञ,

दान और तपरूपी क्रियाएं
यज्ञभावितः—३-१२ यज्ञ द्वारा संतुष्ट देवगण
यज्ञम्—४-२५; १७-१२, १३ यज्ञ को
यज्ञविद:—४-३० यज्ञ जाननेवाले
यज्ञशिष्टामृतभुजः—४-३१ यज्ञ में से बचे हुए अमृत का पान करनेवाले
यज्ञशिष्टाशिनः—३-१३ यज्ञ में से बाकी रहा हुआ खानेवाले
यज्ञः—३-१४; ९-१६; १६-१; १७-७, ११; १८-५ वैश्व-देवादि स्मार्त कर्म, यज्ञ
यज्ञात्—३-१४ यज्ञ से, यज्ञ में से; ४-३३ यज्ञ की अपेक्षा
यज्ञानाम्—१०-२५ यज्ञों में
यज्ञाय—४-२३ यज्ञ के लिए, यज्ञार्थ
यज्ञार्थात्—३-९ यज्ञार्थ—ईश्वर-प्रीत्यर्थ—किये हुए (कर्म) के सिवा, निष्काम रहकर किये हुए विहित कर्म के सिवा
यज्ञाः—४-३२; १७-२३ यज्ञ
यज्ञे—३-१५; १७-२७ यज्ञ में
यज्ञेन—४-२५ यज्ञ द्वारा
यज्ञेषु—८-२८ यज्ञों में
यज्ञैः—९-२० यज्ञों द्वारा
यत्—१-४५ जिससे कि, २-६ कि; २-७, ८ इत्यादि जो, जिसे; १५-८, ८ जो, जब
यतचित्तस्य—६-१९ नियत चित्त-वाले का, स्थिरचित्त का
यतचित्तात्मा—४-२१; ६-१० जिसका अंत:करण और देह नियम में—काबू में—है, जिसका मन अपने वश में है वह, चित्त स्थिर करके
यतचित्तेन्द्रियक्रिया—६-१२ जिसने चित्त की और इंद्रियों की क्रियाएं नियम में रखी हैं, वह चित्त और इंद्रियों को वश करके
यतचेतसाम्—५-२६ जिन्होंने अपने मन को वश में किया है (उन यतियों का)
यततः—२-६० प्रयत्न से करने-वाले की
यतता—६-३६ यत्नवान से, यत्न करनेवालों के द्वारा
यतताम्—७-३ प्रयत्न करने-वालों में
यतति—७-३ (वह) यत्न करता है
यतते—६-४३ (वह) प्रयत्न करता है
यतन्तः—९-१४; १५-११ प्रयत्न करनेवाले
यतन्ति—७-२९ (वे) प्रयत्न

करते हैं, मंथन करते हैं
यतमानः—६-४५ यत्न करता हुआ
यतयः—४-२८; ८-११ यति, प्रयत्नशील याज्ञिक, मुनि
यतवाक्कायमानसः—१८-५२ वाणी, शरीर और मन को नियम में रखनेवाला—रखकर
यतः—६-२६; १३-३; १५-४; १८-४६, जहां से, जिसमें से, जिसके द्वारा
यतात्मवान्—१२-११ संयमी, मन को काबू में रखनेवाला, यत्नपूर्वक
यतात्मा—१२-१४ इंद्रियनिग्रही
यतात्मानः—५-२५ जितेन्द्रिय, वे जिन्होंने मन के ऊपर काबू पा लिया है
यतीनाम्—५-२६ यतियों का
यतेन्द्रियमनोबुद्धिः—५-२८ जिसने इंद्रिय, मन तथा बुद्धि को वश में कर लिया है, इंद्रिय, मन और बुद्धि को वश में करके
यत्प्रभावः—१३-३ जैसे प्रभाववाला, कैसे प्रभाववाला
यत्र—६-२०, २१; १८-३६, ७८ जहां, जिसमें, जिस काल; ८-२३ जब, जिस समय
यथा—२-१३, २२, ३-२५, ३८; ४-३७, ११; ६-१६; ९-६; ११-३, २८, २९ जिस प्रकार, जिस रीति से; ७-१ जिससे, किस प्रकार
यथाभागम्—१-११ स्थान के अनुसार, अपने-अपने स्थान पर
यथावत्—१८-१९ जैसे (बताये गए) हैं वैसे
यथोक्तम्—१२-२० कहे अनुसार
यदा—२-५२, ५३, ५५, ५८; ४-७; ६-४, १८; १३-३०; १४-११, १४, १९ जब
यदि—१-३८, ४६; २-६; ३-२३; ६-३२; ११-४, १२ अगर
यदृच्छया—२-३२ अनायास, अपने आप
यदृच्छालाभसंतुष्टः—४-२२ अनायास प्राप्त लाभ से संतोष मानने वाला
यद्वत्—२-७० जैसे, जिस प्रकार
यद्विकारि—१३-३ जैसे विकारवाला
यन्त्रारूढानि—१८-६१ यंत्र पर बैठे हुए, चाक पर चढ़े हुए
यम्—२-१५, ७०; ६-२, २२; ८-६; ६-२१ जिसे
यमः—१०-२९; ११-३९ यमराज
यया—२-३९; ७-५; १८-३१, ३३, ३४, ३५ जिसके द्वारा

समत्व रखनेवाला; ६-८ ईश्वरपरायण मनुष्य
युक्तात्मा—७-१८ निष्काम कर्मयोगी
युक्ताहारविहारस्य—६-१७ जिस का खान-पान और घूमना-फिरना यथायोग्य है, आहार-विहार में प्रमाण रखनेवाला
युक्ते—१-१४ युक्त, जड़े हुए
युक्तैः—१७-१७ एकाग्र चित्त-वालों से, समभावी पुरुषों द्वारा
युक्त्वा—९-३४ जोड़कर
युगपत्—११-१२ एक ही समय, एक साथ
युगसहस्रान्ताम्—८-१७ हजार युग अवधिवाली
युगे—४-८ युग में
युज्यते—१०-७ (वह) जुड़ता है, प्राप्त होता है; १७-२६ युक्त होता है; काम में आता है
युज्यस्व—२-३८, ५० (तू) प्रवृत्त हो
युञ्जतः—६-१९ साधन करने-वाले का, (आत्मा का परमात्मा के साथ) संयोग साधनेवाले का, संबंध जोड़नेवाले का
युञ्जन्—६-१५, २८; ७-१ साधता हुआ, जोड़ता हुआ, (आत्मा का परमात्मा के साथ) अनुसंधान (संयोग) करता हुआ
युञ्जीत—६-१० (वह) स्थिर करे, साधे, के साथ जोड़े
युञ्ज्यात्—६-१२ (वह) (योग) साधे
युद्धविशारदाः—१-९ युद्ध में कुशल
युद्धम्—२-३२ युद्ध को
युद्धात्—२-३१ युद्ध से, युद्ध की अपेक्षा
युद्धाय—२-३७, ३८ युद्ध के लिए, लड़ने के लिए
युद्धे—१-२३, ३३; १८-४३ युद्ध में
युधामन्युः—१-६ एक राजा का नाम
युधि—१-४ युद्ध में, लड़ने में
युधिष्ठिरः—१-१६ युधिष्ठिर राजा, धर्मराजा
युध्य—८-७ (तू) युद्ध कर, लड़
युध्यस्व—२-१८; ३-३०; ११-३४ (तू) लड़, युद्ध कर
युयुधानः—१-४ सात्यकि
युयुत्सवः—१-१ लड़ने की इच्छा-वाले
युयुत्सुम्—१-२८ लड़ने को उत्सुक, लड़ने की इच्छावाले (को)

ये—१-७ इत्यादि; जो

ये—१-७, २३; ३-१३, ३१, ३२; ४-११; ५-२२; ७-१२, १४, २६, ३०; ९-२२, २३, २६, ३२; ११-२२, ३२; १२-१, २, ३, ६, २०; १३-१४; १७-१, ५ जो

येन—२-१७; ३-२; ४-३५; ६-६; ८-२२; १०-१०; जिससे, जिसके द्वारा, जिसके कारण

येन केनचित्—१२-१९ चाहे जिससे

येषाम्—१-३३; २-३५; ५-१६; १९; ७-२८; १०-६ जिनके

योक्तव्यः—६-२३ साधने योग्य, साधन करना चाहिए

योगक्षेमम्—९-२२ योगक्षेम, योग—न मिलनेवाले का मिलना, क्षेम—मिले हुए की रक्षा

योगधारणाम्—८-१२ योगा-वस्था को, समाधियोग को

योगवलेन—८-१० योगवल से

योगभ्रष्टः—६-४१ योग से विच-लित, योगभ्रष्ट

योगमायासमावृतः—७-२५ योग-माया से समावृत, (योगमाया —गुणों का संघटन और प्रकाशन)

योगयज्ञाः—४-२८ योगरूपी यज्ञ करनेवाले, अष्टांगयोग साधनेवाले

योगयुक्तः—५-६, ७; ८-२७ कर्मयोग का आचरण करने-वाला, समत्ववाला, वह जिसने योग साधा है, योग से युक्त

योगयुक्तात्मा—६-२९ जिसने योग साधा है ऐसा पुरुष, योगी

योगवित्तमाः—१२-१ योगवेत्ताओं में उत्तम, श्रेष्ठ योगी

योगसञ्ज्ञितम्—६-२३ योग नाम-वाले को

योगसंन्यस्तकर्माणम्—४-४१ जिसने समत्वरूपी योग द्वारा कर्म (फल) का त्याग किया है उसे

योगसंसिद्धः—४-३८ कर्मयोग में जिसने सिद्धि—यश प्राप्त किया है ऐसा पुरुष, योग में—समत्व में पूर्ण मनुष्य

योगसंसिद्धिम्—६-३७ योग के फल—मोक्ष को, योग की सफलता को

योगसेवया—६-२० योग के अनुष्ठान से—सेवन से

योगस्थः—२-४८ योग में स्थिर,

राजर्षयः—४-२; ९-३३ राजर्षि
राजविद्या—९-२ विद्याओं में राजा—श्रेष्ठ विद्या
राज सम्—१७-१२ १८, २१; १८-८, २१, २४, ३८ राजस, राजसी
राजसस्य—१७-९ रजोगुणी मनुष्य का (को), राजस प्रकृतिवाले का
राजसः—१८-२७ राजसी, रजोगुणी
राजसाः—७-१२; १४-१८ राजसी, रजोगुणात्मक; १७-४ राजसी लोग
राजसी—१७-२; १८-३१, ३४ राजसी, रजोगुणात्मक
राजा—१-२, १६ राजा
राज्यम्—१-३२, ३३; २-८; ११-३३ राज्य, राज्य को
राज्यसुखलोभेन—१-४५ राज्य-सुख के लोभ से
राज्येन—१-३२ राज्य से
रात्रिम्—८-१७ रात्रि को
रात्रिः—८-२५ रात्रि
रात्र्यागमे—८-१८, १९ (ब्रह्मा की) रात्रि शुरू होने पर
राधनम्—७-२२ पूजा, आराधना, सेवा
रामः—१०-३१ परशुराम
रिपुः—६-५ दुश्मन, शत्रु
रुद्राणाम्—१०-२३ रुद्रों में
रुद्रादित्याः—११-१२ रुद्र और आदित्य
रुद्रान्—११-६ रुद्रों को
रुद्ध्वा—४-२९ रूंधकर, रोककर
रुधिरप्रदिग्धान्—२-५ खून से सने हुए (भोगों को)
रूपस्य—११-५२ रूप का
रूपम्—११-३, ९, २०, २३, ४५, ४९, ५०, ५१; १८-७७ रूप को, स्वरूप को; ११-४७, ५२; १५-३ रूप, स्वरूप
रूपाणि—११-५ रूप
रूपेण—११-४६ रूप से, रूप के साथ, रूप से युक्त
रोमहर्षणम्—१८-७४ रोंगटे खड़े करनेवाला
रोमहर्षः—१-२९ रोंगटे खड़े होना

ल

लघ्वाशी—१८-५२ अल्पाहारी, थोड़ा खानेवाला
लब्धम्—१६-१३ प्राप्त किया है, पा लिया है
लब्धा—१८-७३ मिली, (मैंने) प्राप्त की, (मुझे) प्राप्त हुई

लब्ध्वा—४-३९; ६-२२ पाकर, प्राप्त करके
लभते—४-३९; ६-४३; ७-२२; १८-४५, ५५ (वह) प्राप्त करता है, पाता है
लभन्ते—२-३२; ५-२५; ९-२१ (वे) पाते हैं, प्राप्त करते हैं
लभस्व—११-३३ (तू) प्राप्त कर
लभे—११-२५ (मैं) पाता हूं
लभेत्—१८-८ (वह) प्राप्त करे
लभ्य:—८-२२ प्राप्त किया जा सके ऐसा
लाघवम्—२-३५ तुच्छता, लघुता (को)
लाभम्—६-२२ लाभ को
लाभालाभौ—२-३८ लाभ और हानि
लिङ्गैः—१४-२१ चिह्नों से
लिप्यते—५-७, १०; १३-३१ (वह) लिप्त होता है,—के ऊपर असर होता है; १८-१७ मलिन होता है
लिम्पन्ति—४-१४ (वे) असर करते हैं, स्पर्श करते हैं
लुप्तपिण्डोदकक्रियाः—१-४२ पिंड-दान की श्राद्ध-क्रिया से वंचित
लुब्धः—१८-२७ लोभी
लेलिह्यसे—११-३० (तू) चाटता है
लोकक्षयकृत्—११-३२ लोकों का नाश करनेवाला
लोकत्रयम्—११-२० तीनों लोक; १५-१७ तीनों लोकों को
लोकत्रये—११-४३ तीनों लोकों में
लोकम्—९-३३; १३-१३ लोक को, जगत को
लोकमहेश्वरम्—१०-३ लोकों के महेश्व को
लोकसंग्रहम्—३-२०, २५ लोकोन्नति, लोककल्याण, लोकसंग्रह
लोकस्य—५-१४; ११-४३ जगत का, लोक का
लोकः—३-९, २१; ४-३१, ४०; ७-२५ लोक, दुनिया; ३-२१; १२-५ लोक
लोकात्—१२-१५ लोकों से
लोकान्—६-४१; १०-१६; ११-३०, ३२; १४-१४; १८-१७, ७१ लोकों में
लोकाः—३-२४; ८-१६; ११-२३, २९ लोक
लोके—२-५; ३-३; ४-१२; ६-४२; १०-६; १३-१३; १५-१६, १८; १६-६ लोक में, जगत में
लोकेषु—३-२२ लोकों में
लोभः—१४-१२, १७; १६-२१

परद्रव्य की इच्छा, लोभ
लोभोपहतचेतसः—१-३८ लोभ से जिनके चित्त मलिन हो गये हैं वे

व

वक्तुम्—१०-१६ कहने के लिए
वक्त्राणि—११-२७, २८, २९ मुख
वक्ष्यामि—७-२; ८-२३; १०-१; १८-६४ (मैं) कहूंगा
वचनम्—१-२; ११-३५; १८-७३ वचन
वचः—२-१०; १०-१; ११-१; १८-६४ वचन
वज्रम्—१०-२८ दधीचि मुनि की हड्डियों से बना हुआ हथियार —वज्र
वद—३-२ (तू) कह
वदति—२-२९ (वह) कहता है, वर्णन करता है
वदनैः—११-३० मुखों द्वारा
वदन्ति—८-११ वे कहते हैं वर्णन करते हैं
वदसि—१०-१४ (तू) कहता है
वदिष्यन्ति—२-३६ (वे) कहेंगे, बोलेंगे
वयम्—१-३७, ४५; हम; २-१२ हम लोग

वर—८-४ श्रेष्ठ
वरुणः—१०-२९; ११-३९ वरुण (जल-देवता)
वर्णसंकरकारकैः—१-४३ वर्णों का संकर करनेवाले (के द्वारा)
वर्णसंकरः—१-४१ वर्णसंकर
वर्तते—५-२६; ६-३१; १६-२३ (वह) बरतता है
वर्तन्ते—३-२८; ५-९; १४-२३ (वे) बरतते हैं, अपना भाव व्यक्त करते हैं
वर्तमानः—६-३१; १३-२३ बरतता हुआ, व्यवहार करता हुआ
वर्तमानानि—७-२६ वर्तमान
वर्ते—३-२२ (मैं) प्रवृत्त रहता हूं
वर्तेत—६-६ (वह) बरते
वर्तेयम्—३-२ (मैं) बरतूं, प्रवृत्त रहूं
वर्त्म—३-२३; ४-११ मार्ग, आचरण को
वर्षम्—९-१९ वर्षा को
वशम्—३-३४; ६-२६ वश, काबू
वशात्—९-८ बल से, सामर्थ्य से, जोर से, प्रभाव से
वशी—५-१३ जितेन्द्रिय, संयमी
वशे—२-६१ वश में
वश्यात्मना—६-३६ संयमी से, जिसका मन अपने वश में है

उसके द्वारा
वसवः—११-२२ वसु
वसूनाम्—१०-२३ वसुओं में
वसून्—११-६ वसुओं को
वहामि—९-२२ (मैं) वहन करता हूं, भार उठाता हूं
वह्निः—३-३८ अग्नि
वः—३-१० तुम्हारी; ३-११, १२ तुम्हें
वा—१-३२, इत्यादि, अथवा
वाक—१०-३४ वाणी
वाक्यम्—१-२१; २-१; १७-१५ वचन, वाक्य
वाक्येन—३-२ वचन से
वाङ्मयम्—१७-१५ वाणी का, वाचिक
वाचम्—२-४२ वाणी को
वाच्यम्—१८-६७ कहने योग्य, कहना
वादः—१०-३२ (जल्प, वितंडा आदि का) वाद, जिज्ञासुओं के बीच की चर्चा
वादिनः—२-४२ बोलनेवाले
वायुः—२-६७; ७-४; ९-६; ११-३९; १५-८ वायु
वायो—६-३४ वायु का
वार्ष्णेय—१-४१; ३-३६ हे वृष्णि-कुलोत्पन्न कृष्ण
वासवः—१०-२२ इन्द्र

वासः—१-४४ निवास
वासांसि—२-२२ कपड़े, वस्त्र
वासुकिः—१०-२८ वासुकि सर्प
वासुदेवस्य—१८-७४ वासुदेव का
वासुदेवः—७-१९; १०-३७; ११-५० सर्व प्राणियों में बसने-वाले ईश्वर-कृष्ण, वासुदेव
विकम्पितुम्—२-३१ भय करने को
विकर्णः—१-८ विकर्ण राजा, दुर्योधन का भाई
विकर्मणः—४-१७ निषिद्ध कर्म का
विकारान्—१३-१९ बुद्धि इन्द्रियादि के विकारों को
विक्रान्तः—१-६ पराक्रमी
विगतकल्मष—६-२८ पापरहित हुआ
विगतज्वरः—३-३० शोकसंताप-रहित, रागरहित
विगतभीः—६-१४ भयरहित
विगतस्पृहः—२-५६; १८-४९ स्पृहा, (इच्छा) रहित, जिसने कामनाएं छोड़ दी हैं वह
विगतः—११-१ चला गया, दूर हो गया है
विगतेच्छाभयक्रोधः—५-२८ इच्छा, भय और क्रोध से रहित
विगुणः—३-३५; १८-४७ गुण-रहित
विचक्षणाः—१८-२ विचारशील

लोग, बुद्धिमान लोग
विचालयेत्—३-२९ (वह) विचलित करे, बुद्धिभेद उत्पन्न करे
विचाल्यते—६-२२; १४-२३ चलायमान होता है, डिगता है, आलोडित होता है
विचेतसः—९-१२ विवेकदृष्टि रहित—मूढ़ लोग
विजयम्—१-३२ विजय को
विजयः—१८-७८ विजय
विजानतः—२-४६ जाननेवाले ज्ञानी की, आत्मानुभवी के, ज्ञानवान (को)
विजानीतः—२-१९ (वे दो) जानते हैं
विजानीयाम्—४-४ (मैं) जानूं
विजितात्मा—५-७ शरीर के ऊपर जिसने विजय प्राप्त की है वह, जिसने अपना मन जीता है वह
विजितेन्द्रियः—६-८ जिसकी इन्द्रियां वश में हैं वह, जिसने इन्द्रियां जीती हैं वह, इन्द्रियजित्
विज्ञातुम्—११-३१ (विशेष रूप से) जानने को
विज्ञानम्—१८-४२ विशेष ज्ञान, अनुभवज्ञान, अनुभव
विज्ञानसहितम्—९-१ अनुभवज्ञानसहित, अनुभववाला
विज्ञाय—१३-१८ जानकर
विततः—४-३२ विस्तारित, वर्णित, वर्णन किये हुए
वित्तेशः—१०-२३ कुवेर
विदधामि—७-२१ (मैं) देता हूं, करता हूं
विदितात्मनाम्—५-२६ आत्मज्ञानियों का, जिन्होंने अपने को पहचाना है उनका
विदित्वा—२-२५; ८-२८ जानकर
विदुः—४-२; ७-२९; ३०; ८-१७; १०-२; १४; १३-३४; १३-७; १८-२ (वे) जानते थे, जानते हैं
विद्धि—२-१७; ३-१५, ३२, ३७; ४-१३, ३२, ३४; ३-२; ७-५, १०, १२; १०-२४, २७; १३-२, १९, २६; १४-७, ८; १५-१२; १७-६, १२; १८-२०, २१ (तू) जान, समझ
विद्मः—२-६ (हम) जानते हैं
विद्यते—२-१६, ३१, ४०; ३-१७; ४-३८; ६-४०; ८-१६; १६-७ (वह) होता है, है

विद्यात्—६-२३; १४-११ (उन्हें) जानना चाहिए, (वे) जानें
विद्यानाम्—१०-३२ विद्याओं में
विद्याम्—१०-१७ (मैं) जानूं, पहचानूं
विद्याविनयसंपन्ने—५-१८ विद्या और विनयवालों में, विद्वान् और विनयवान के विषय में
विद्वान्—३-२५, २६ ज्ञानी, समझदार पुरुष
विधानोक्ता:—१७-२४ शास्त्र-विहित, शास्त्र में कही हुई
विधिदृष्टः—१७-११ विधिपूर्वक
विधिहीनम्—१७-१३ विधिरहित
विधीयते—२-४४ (वह) स्थिर हो सकती है, की जा सकती है
विधेयात्मा—२-६४ जिसका मन अपने काबू में है वह
विनङ्क्ष्यसि—१८-५८ (तू) नाश को प्राप्त होगा
विनद्य—१-१२ आवाज करके, बजाकर
विनश्यन्ति—४-४०; ८-२० (वह) नाश को प्राप्त होता है
विनश्यत्सु—१३-२७ नाशवान प्राणियों में
विना—१०-३९ सिवा, बिना
विनाशम्—२-१७ नाश (को)
विनाशः—६-४० नाश
विनाशाय—४-८ नाश के लिए
विनियतम्—६-१८ अच्छी तरह से नियमबद्ध किया हुआ
विनियम्य—६-२४ अच्छी तरह से नियम में रखकर
विनिवर्तन्ते—२-५९ (वे) विरत (निवृत्त) होते हैं, शान्त होते हैं
विनिवृत्तकामा:—१५-५ जिनकी कामनाएं शांत हो गई हैं वे
विनिश्चितैः—१३-४ निश्चित, निश्चयवालों (द्वारा)
विन्दति—४-३८; ५-२१; १८-४५, ४६ (वह) प्राप्त करता है
विन्दते—५-४ (वह) प्राप्त करता है
विन्दामि—११-२४ (मैं) प्राप्त करता हूं
विपरिवर्तते—९-१० (वह) परिवर्तन प्राप्त करता है, उत्पत्ति और नाश होता है, (रेहट की भांति) घूमता रहता है
विपरीतम्—१८-१५ विपरीत, उल्टा
विपरीतानि—१-३१ उल्टा, विपरीत
विपरीतान्—१८-३२ उलटे (को)
विपश्चितः—२-६० ज्ञानी का, विवेकदृष्टिवाले का, समझदार का

विभक्तम्—१३-१६ विभक्त
विभक्तेषु—८-२० विविधता में बंटे हुओं में
विभावसौ—७-९ अग्नि में
विभुम्—१०-१२ सर्वव्यापी (ईश्वर रूप) को
विभुः—५-१५ परमेश्वर
विभूतिभिः—१०-१६ विभूतियों द्वारा
विभूतिम्—१०-७, १८ विस्तार को, विभूति को
विभूतिमत्—१०-४१ विभूति-वाला, वैभववान
विभूतीनाम्—१०-४० विभूतियों का
विभूतेः—१०-४० विभूति का
विमत्सरः—४-२२ ईर्ष्यारहित, द्वेषरहित
विमुक्तः—९-२८; १४-२०; १६-२२ मुक्त
विमुक्ताः—१५-५ मुक्त
विमुच्य—१८-५३ छोड़कर
विमुञ्चति—१८-३५ (वह) तजता है, छोड़ता है
विमुह्यति—२-७२ (वह) मोह-ग्रस्त होता है
विमूढः—६-३८ मूढ, गड़बड़ में पड़ा हुआ, भूल में पड़ा हुआ
विमूढभावः—११-४९ विमूढ-चित्तता, परेशानी
विमूढात्मा—३-६ मूढ पुरुष
विमूढाः—१५-१० मूर्ख
विमृश्य—१८-६३ भली प्रकार से विचार करके
विमोक्षाय—१६-५ मोक्ष के लिए
विमोक्ष्यसे—४-३२ (तू) मुक्त होगा, मोक्ष प्राप्त करेगा
विमोहयति—३-४० (वह) विविध प्रकार से मोह में डालता है, मूर्च्छित करता है
विराटः—१-४, १७ मत्स्यदेश का राजा
विलग्नाः—११-२७ चिपटे हुए, लिपटे हुए
विवस्वतः—४-४ सूर्य का, विवस्वान का
विवस्वते—४-१ सूर्य को, विवस्वान को
विवस्वान्—४-१ सूर्य
विविक्तदेशसेवित्वम्—१३-१० एकांत स्थल का सेवन करने की वृत्ति
विविक्तसेवी—१८-५२ एकांत-सेवी
विविधाः—१७-२५; १८-१४ जुदी-जुदी, विविध
विविधैः—१३-४ जुदे-जुदे, विविध प्रकार के (द्वारा)

विवृद्धम्—१४-११ बढ़ा हुआ
विवृद्धे—१४-१२, १३ बढ़े हुए में, वृद्धि पाये हुए (में)
विशते—१८-५५ (वह) प्रवेश करता है
विशन्ति—८-११; ९-२१; ११-२१, २७, २८, २९; (वे) प्रवेश करते हैं
विशालम्—९-२१ विस्तीर्ण, विशाल
विशिष्टाः—१-७ मुख्य, खास-खास
विशिष्यते—३-७, ५-२; ६-९; ७-१७; १२-१२ (वह) विशेष है, श्रेष्ठ है, बढ़ जाता है, अच्छा है
विशुद्धया—१८-५१ संस्कारी—शुद्ध (द्वारा)
विशुद्धात्मा—५-७ जिसने अपने हृदय को शुद्ध किया है वह
विश्वतोमुखम्—९-१५; ११-११ विश्वव्यापक को, चारों ओर जिसके मुख हैं उसे, सर्व-व्यापी को
विश्वतोमुखः—१०-३३ चारों ओर मुखवाला, सर्वव्यापी
विश्वम्—११-१९, ३८ विश्व, जगत, जगत को; ११-४७ विश्वव्यापी को
विश्वमूर्ते—११-४६ हे विश्वमूर्ति
विश्वरूपम्—११-१६ विश्वरूप को
विश्वस्य—११-१८, ३८ जगत का, विश्व का
विश्वे—११-१२ विश्वेदेव
विश्वेश्वर—११-१६ हे जगत के ईश्वर
विषमे—२-२ कठिन समय में, संकट में
विषयप्रवालाः—१५-२ विषयरूपी जिनके पल्लव—अंकुर—है वे विषयरूपी कोंपलवाली
विषयान्—२-६२, ६४; ४-२६; १५-९; १८-५१ विषयों को
विषयाः—२-५९ विषय
विषयेन्द्रियसंयोगात्—१८-३८ विषय और इंद्रियों के संयोग से—मिलाप से
विषम्—१८-३७, ३८ जहर
विषादम्—१८-३५ खिन्नता को, निराशा
विषादी—१८-२८ शोकातुर, गमगीन
विषीदन्—१-२८ खिन्न होता हुआ, खेद पाता हुआ
विषीदन्तम्—२-१, १० दुःखी को, उदास होकर बैठे हुए को
विष्टभ्य—१०-४२ः व्याप्त होकर, धारण करके
विष्ठितम्—१३-१७ विशेष रूप

से स्थित (पाठान्तर 'घिष्ठि-तम्)
विष्णुः—१०-२१ विष्णु, सर्वव्यापी भगवान
विष्णो—११-२४, ३० हे कृष्ण—विष्णु
विसर्गः—८-३ त्याग, क्रिया, व्यापार
विसृजन्—५-९ (मलादिका) त्याग करता हुआ, छोड़ता हुआ
विसृजामि—९-७, ८ (मैं) उत्पन्न करता हूं, सर्जन करता हूं
विसृज्य—१-४७ छोड़कर, अलग रखकर
विस्तरशः—११-२; १६-६ विस्तारपूर्वक
विस्तरस्य—१०-१९ विस्तार की
विस्तरः—१०-४० विस्तार
विस्तरेण—१०-१८ विस्तार से—पूर्वक
विस्तारम्—१३-३० विस्तार को
विस्मयः—१८-७७ आश्चर्य
विस्मयाविष्टः—११-१४ आश्चर्य में लीन, आश्चर्यचकित
विस्मिताः—११-२२ विस्मित, आश्चर्यचकित
विहाय—२-२२, ७१ छोड़कर, अलग डालकर
विहारशय्यासनभोजनेषु—११-४२ खेलते, सोते, बैठते और खाते हुए
विहितान्—७-२२ निर्मित की हुई (को)
विहिताः—१७-२३ निर्माण किये हुए
वीक्षन्ते—११-२२ (वे) देखते हैं, निरीक्षण करते हैं
वीतरागभयक्रोधः—२-५६ जिसके राग, भय और क्रोध दूर हो गये हैं वह
वीतरागभयक्रोधाः—४-१० जिनके राग, भय और क्रोध दूर हो गये हैं वे; राग, भय और क्रोध से रहित
वीतरागाः—८-११ जिन्होंने राग-द्वेषादि का त्याग किया है वे, वीतरागी
वीर्यवान्—१-५, ६ बलवान, शूरवीर
वृकोदरः—१-१५ भेड़िये के समान पेटवाला—भीम
वृजिनम्—४-३६ पाप (समुद्र) को
वृष्णीनाम्—१०-३७ यादवों में, वृष्णिकुल में
वेगम्—५-२३ जोर को, वेग को

व्यतीतानि—४-५ हो चुके, बीत गये
व्यथन्ति—१४-२ (वे) नाश को प्राप्त होते हैं, व्यथा पाते हैं
व्यथयन्ति—२-१५ (वे) पीड़ा देते हैं, व्याकुल करते हैं
व्यथा—११-४९ अकुलाहट, व्यथा
व्यथिष्ठाः—११-३४ देखो 'मा व्यथिष्टाः' (न व्यथित हो)
व्यादरयत्—१-१९ (उसने) चीर डाला
व्यनुनादयन्—१-१९ गुंजा देनेवाला
व्यपाश्रित्य—९-३२ आश्रय लेकर
व्यपेतभीः—११-४९ जिसका भय चला गया है वह, भयरहित
व्यवसायः—१०-३६; १८-५९ निश्चय
व्यवसायात्मिका—२-४१, ४४ निश्चयवाली, निश्चयात्मक
व्यवसितः—९-३० यथार्थ संकल्पवाला, निश्चयवाला
व्यवसिताः—१-४५ तैयार हुए
व्यवस्थितान्—१-२० सज्ज, सजे हुए
व्यवस्थितौ—३-३४ (दो) रहते हैं
व्यात्ताननम्—११-२४ खुले हुए मुखवाले को
व्याप्तम्—११-२० व्याप्त (हैं)
व्यामिश्रेण—३-२ मिश्र, दो अर्थवाली
व्याप्य—१०-१६ व्याप्त होकर
व्यासप्रसादात्—१८-७५ व्यास की कृपा से
व्यासः—१०-१३, ३७ व्यास मुनि
व्याहरन्—८-१३ उच्चारण करता हुआ, जपता हुआ
व्युदस्य—१८-५१ छोड़कर, तजकर, जीतकर
व्यूढम्—१-२ व्यूह के आकार में
व्यूढाम्—१-३ सज्ज, व्यूहाकार (को)
व्रज—१८-६६ (तू) जा
व्रजेत—२-५४ (वह) चलता है, बरतता है, चले, बरते

श

शक्नोति—५-२३ (वह) सकता है समर्थ है
शक्नोमि—१-३० (मैं) सकता हूं, समर्थ हूं
शक्नोषि—१२-९ (तू) सकता है, समर्थ है
शक्यसे—११-८ (तू) सकता है, समर्थ है
शक्यम्—११-४; १८-११ शक्य
शक्यः—६-३६; ११-४८, ५३, ५४ शक्य
शङ्खम्—१-१२ शंख (को)

धारियों में

शस्त्रसंपाते—१-२० शस्त्रप्रहार में (प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते—शस्त्र-प्रहार शुरू होने पर)

शस्त्राणि—२-२३ शस्त्र

शंकरः—१०-२३ शंकर

शंससि—५-१ (तू) बखानता है, तन, स्तुति करता है

शाखाः—१५-२ शाखाएं, डालियां

शाधि—२-७ (तू) सिखावन दे, रास्ता बता

शान्तरजसम्—६-२७ जिसका रजोगुण शांत हो गया है—शमन हो गया है, जिसके विकार शांत हो गये हैं

शान्तः—१८-५३ शांत

शान्तिम्—२-७०, ७१; ४-३९; ५-१२, २९; ६-१५; ९-३१; १८-६२ शांति को

शान्तिः—२-६६; १२-१२; १६-२ शांति

शारीरम्—४-२१ शरीर का, शरीरसंबंधी, शरीर की स्थिति; १७-१४ शारीरिक (तप)

शाश्वतधर्मगोप्ता—११-१८ अविचल सनातन धर्म का रक्षक

शाश्वतम्—१०-१२; १८-५६, ६२ नित्य, सनातन, शाश्वत

शाश्वतस्य—१४-२ शाश्वत की

शाश्वतः—२-२० शाश्वत

शाश्वताः—१-४३ सनातन

शाश्वतीः—६-४१ शाश्वत

शाश्वते—८-२६ शाश्वत, सना-चलती आई (दो गतियां)

शास्त्रविधानोक्तम्—१६-२४ शास्त्र में कहा हुआ, शास्त्र-विधि को

शास्त्रविधिम्—१६-२३; १७-१ शास्त्र में बताई हुई क्रिया को, शास्त्रविधि को, शिष्टाचार को

शास्त्रम्—१५-२०; १६-२४ शास्त्र

शिखन्डी—१-१७ शिखंडी

शिखरिणाम्—१०-२३ शिखर-वालों में, पर्वतों में

शिरसा—११-१४ सिर से

शिष्यः—२-७ शिष्य

शिष्येण—१-३ शिष्य द्वारा, शिष्य

शीतोष्णसुखदुःखदाः—२-१४ सर्दी, गर्मी, सुख और फल देनेवाले

शीतोष्णसुखदुःखेषु—६-७; १२-१८ सर्दी, गर्मी, सुख और दुःख में

शुक्लकृष्णे—८-२६ शुक्ल और कृष्ण (दो गतियां), ज्ञान और अज्ञान के (मार्ग)

शुक्लः—८-२४ सफेद, पवित्र,

शून्य, श्रद्धारहित

श्रद्धाम्—७-२१ श्रद्धा को

श्रिता:—६-१२ आश्रित, आश्रय लेनेवाले

श्रीमत्—१०-४१ लक्ष्मीवाला, कांतिवाला

श्रीमताम्—६-४१ श्रीमंतों का, विभूतिमानों का, साधन-संपन्नों का

श्री:—१०-३४; १८-७८ श्री, शोभा, लक्ष्मी

श्रुतम्—१८-७२ सुना हुआ, सुना

श्रुतवान्—१८-७५ (मैं) सुनता था, (मैंने) सुना

श्रुतस्य—२-५२ सुना हुआ

श्रुतिपरायणा:—१३-२५ सुने हुए पर श्रद्धा रखनेवाले

श्रुतिविप्रतिपन्ना—२-५३ (अनेक प्रकार के) सिद्धांत (श्रुतियां), सुनकर व्यग्र बनी हुई

श्रुतौ—११-२ सुने हुए, सुने

श्रुत्वा—२-२९; ११-३५; १३-२५ सुनकर

श्रेय:—१-३१; २-७; ३-२, ११; १६-२२ श्रेय, कल्याण; २-५, ३१; ३-३५; ५-१; १२-१२ अधिक अच्छा, श्रेयस्कर

श्रेयान्—३-३५; ४-३३; १८-४७ अच्छा, अधिक अच्छा

श्रेष्ठ:—३-२१ प्रधान पुरुष, उत्तम पुरुष

श्रोतव्यस्य—२-५२ सुनने योग्य का, जिसका सुनना बाकी रहा हो उसमें, सुने हुए के विषय में

श्रोत्रम्—१५-९ कान

श्रोत्रादीनि—४-२६ कान आदि (इन्द्रियों) को

श्रोष्यसि—१८-५८ (तू) सुनेगा

श्वपाके—५-१८ कुत्तों को पका-कर खानेवाले—चांडाल में

श्वशुरान्—१-२७ श्वशुरों को

श्वशुरा:—१-३४ श्वशुर

श्वसन्—५-८ श्वास लेते हुए

श्वेतै:—१-१४ श्वेतों, सफेद (के द्वारा)

ष

षण्मासा:—८-२४, २५ छः मास

स

सक्तम्—१८-२२ आसक्त

सक्त:—५-१२ लिपटा हुआ, फंसा हुआ, आसक्त

सक्ता:—३-२५ आसक्त

सखा—४-३; ११-४१, ४४ मित्र

सखीन्—१-२६ मित्रों को, सखाओं को

सखे—११-४१ हे मित्र

सख्युः—११-४४ सखा का, मित्र का
सगद्गदम्—११-३५ गद्गद् होकर, गद्गद् कंठ से
संकरस्य—२-१० संकर का, अव्यवस्था का, वर्णसंकर का
संकरः—१-४२ (वर्णों का) मिश्रण, संकर
संकल्पप्रभवान्—६-२४ संकल्पों से उत्पन्न हुए (कामों) को
संख्ये—१-४७; २-४ संग्राम में
संगम्—२-४८; ५-१०, ११; १८-६, ९ आसक्ति—संग को
संगरहितम्—१८-२३ आसक्ति विना
संगवर्जितः—११-५५ (धनादि की) आसक्ति से रहित
संगविवर्जितः—१२-१८ काम-त्यागी, आसक्तिरहित
संगः—२-४७ संग, आग्रह; २-६२ आसक्ति
संगात्—२-६२ संग से, आसक्ति से
संग्रहेण—८-११ संक्षेप में
सङ्ग्रामम्—२-३३ लड़ाई, संग्राम
संघातः—१३-६ (शरीर, इंद्रिय आदि का) समुदाय, संघात
सचराचरम्—९-१० स्थावरजंगम पदार्थों को; ११-७ स्थावर-जंगमसहित (जगत) को
सचेताः—११-५१ प्रसन्नचित्त, शांत
सच्छब्दः—१७-२६ 'सत्' शब्द
सज्जते—३-२८ (वह) आसक्त होता है
सज्जन्ते—३-२९ (वे) आसक्त होते हैं, रहते हैं
संजनयन्—१-१२ उत्पन्न करता हुआ, पैदा करता हुआ
संजय—१-२ हे संजय
संजयति—१४-९ उत्पन्न करता है, संयोग करता है, आसक्त करता है
संजयः—१-२, २४, ४७; २-१, ९; ११-९, ३५, ५०; १८-७४ संजय
संजायते—२-६२; १३-२६; १४-१७ उत्पन्न होता है
संज्ञार्थम्—१-७ नाम (जानने) के लिए, जानकारी के लिए
सत्—९-१९; ११-३७; १३-१२; १७-२३, २६, २० ईश्वर का नाम, सत्
सततयुक्तानाम्—१०-१० (मुझमें) सतत तन्मय रहनेवालों का
सततयुक्ताः—१२-१ अहर्निश समाहित रहते हुए, निरन्तर ध्यान करते हुए
सततम्—३-१९; ६-१०; ८-१४; ९-१४; १२-१४; १७-२४;

१८-५७ निरंतर, सदा, हमेशा
सतः—२-१६ सत का
सति—१८-१६ होने पर, होते हुए भी
सत्कारमानपूजार्थम्—१७-१८ सत्कार, मान और पूजा के निमित्त—प्राप्त करने के लिए
सत्त्वन्—१०-३६; १४-५, ६, ९, १०, ११; १७-१ सत्त्व, सत्त्वगुण; १०-४१; १३-२६; १८-४० वस्तु, पदार्थ, प्राणी
सत्त्ववताम्—१०-३६ सात्त्विक पुरुषों का, सात्त्विक भावनावालों का
सत्त्वसमाविष्टः—१८-१० आत्मा-अनात्मा का विवेक करनेवाला, शुद्ध भावनावाला
सत्त्वसंशुद्धिः—१६-१ अंतःकरण की निर्मलता—शुद्धि
सत्त्वस्थाः—१४-१८ सात्त्विक (वृत्तिवाले), सत्त्वगुण से युक्त
सत्त्वात्—१४-१७ सत्त्वगुण से
सत्त्वानुरूपी—१७-३ अंतःकरण—स्वभाव के अनुसार, प्रकृति—स्वभाव का अनुसरण करनेवाली
सत्त्वे—१४-१४ सत्त्वगुण में
सत्यम्—१०-४; १६-२७; १७-१५ जैसा सुना, देखा, अनुभव किया हो वैसा कहना, सत्य; १८-६५ सत्य, सचमुच
सदसत्—११-३७ सत् (व्यक्त) और असत् (अव्यक्त)
सदसद्योनिजन्मसु—१३-२१ अच्छी-बुरी योनि में जन्म की बावत (जन्म मिलने का)
सदा—५-२८; ६-१५, २८; ८-६; १०-१७; १८-५६ हमेशा, सदा, निरंतर
सदृशम्—३-३३ (के) जैसा, अनुसार; ४-३८ (के) समान
सदृशः—१५-१६ के जैसा, समान
सदृशी—११-१२ के जैसी, समान
सदोषम्—१८-४८ दूषित, दोषवाला
सद्भावे—१७-२६ अस्तित्व भाव में—जैसे पुत्र न हो, वहां पुत्र हो, इस भाव में, सत्य या अस्तित्व के अर्थ में
सन्—(अपि) ४-६ होते हुए
सनातनम्—४-३१; ७-१० सनातन, शाश्वत
सनातनः—२-२४; ८-२०; ११-१८; १५-७ प्राचीन, अनादि, सनातन
सनातनाः—१-४० सनातन
संतरिष्यसि—४-३६ (तू) तर जायगा

सन्तः—३-१३ सत्पुरुष, संत, वे होते हैं
संतुष्टः—३-१७; १२-१४, १९ संतोष पाया हुआ, तृप्त
संदृश्यन्ते—११-२७ (वे) दिखाई देते हैं
संनियम्य—१२-४ संयम करके, वश में रखकर
संनिविष्टः—१५-१५ प्रवेश करके, रहा हुआ
संन्यसनात्—३-४ (बाह्य) त्याग से
संन्यस्य—३-३०; ५-१३; १२-६; १८-५७ त्यागकर, अर्पण करके
संन्यासयोगयुक्तात्मा—९-२८ अर्पणरूप संन्यास और कर्मरूप योग—अथवा कर्मसंन्यासरूपी योग—से समाहित हुआ, फलत्यागरूपी समत्व को पाया हुआ
संन्यासस्य—१८-१ संन्यास का
संन्यासम्—५-१; ६-२; १८-२ सर्वथा त्याग को, कर्मों के त्याग को, संन्यास को
संन्यासः—५-२, ६; १८-७ (कर्मों का) त्याग, संन्यास
संन्यासिनाम्—१८-१२ संन्यासियों का, त्यागियों का
संन्यासी—६-१ सर्वकर्मत्यागी, संन्यासी
संन्यासेन—१८-४९ संन्यास द्वारा
सपत्नान्—११-३४ शत्रुओं को
सप्त—१०-६ सात (ऋषि-भृगु वशिष्ठ, मरीचि, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह और क्रतु)
समक्षम्—११-४२ उपस्थिति में, सोहबत में, जाहिर में
समग्रम्—४-२३; ११-३० सब, सर्व, सारा, सारे को; ७-१ संपूर्ण को, संपूर्णरूप से
समग्रान्—११-३० सब (को)
समचित्तत्वम्—१३-९ समचित्तता, समानता, समभाव
समता—१०-५ समचित्तता, समता, बराबरीपना
समतीतानि—७-२६ बीते हुए (को)
समतीत्य—१४-२६ लांघकर, पार करके
समत्वम्—२-४८ समानता, समता
समदर्शनः—६-२९ समान देखनेवाला, समभाव रखनेवाला
समदर्शिनः—५-१८ समान भाव रखनेवाले, समदृष्टि रखते हैं
समदुःखसुखम्—२-१५ सुख-दुःख में सम रहनेवाले (को)
समदुःखसुखः—१२-१४; १४-२४ जिसे सुख-दुःख समान है ऐसा,

सुख-दुःख के बारे में समान
समधिगच्छति—३-४ पाता है, प्राप्त करता है
समन्ततः—६-२४ चारों ओर से, सब दिशाओं से
समन्तात्—११-१७, ३० चारों ओर, सब दिशाओं में
समबुद्धयः—१२-४ समान बुद्धि-वाले, समदर्शी
समबुद्धिः—६-९ सम भाववाला, समान भाव रखनेवाला
समम्—५-१९ समभावी; ६-१३ समरेखा में; ६-३२; १३-२७, २८ समान रीति से, समान भाव से
समलोष्टाश्मकाञ्चनः—६-८; १४-२४ जिसे मिट्टी का ढेला, पत्थर और सोना समान है ऐसा
समवस्थितम्—१३-२८ समभाव से रहनेवाले को
समवेतान्—१-२५ इकट्ठे हुओं (को)
समवेताः—१-१ इकट्ठे हुए
समः—२-४८; ४-२२; ९-२९; १२-१८; १८-५४ समान भाववाला, समान, तटस्थ, समतावाला
समागताः—१-२३ इकट्ठे हुए
समाचर—३-९, १९ (तू) अच्छी तरह कर, बरत, (कर्म) कर
समाचरन्—३-२६ करता हुआ, अच्छी तरह (कर्म) करता हुआ
समाधातुम्—१२-९ स्थापित करने के लिए, समाहित करने के लिए
समाधाय—१७-११ निश्चित करके, स्थिर करके, पिरोकर
समाधिस्थस्य—२-५४ स्थिरचित्त योगी की, समाधिस्थ की
समाधौ—२-४४, ५३ समाधि में समाधि के बारे में
समाप्नोषि—११-४० (तू) व्याप्त है, धारण करता है
समारम्भाः—४-१९ आरंभ
समासतः—१३-१८ थोड़े में, संक्षेप में
समासेन—१३-३, ६; १८-५० संक्षेप में, थोड़े में
समाहर्तुम्—११-३२ नाश करने को, संहार करने को
समाहितः—६-७ सम-स्थिर रहा हुआ,—रहता है, एक समान
समाः—६-४१ संवत्सर
समितिञ्जयः—१-८ युद्ध में जय प्राप्त करनेवाला
समिद्धः—४-३७ सुलगा हुआ, प्रज्वलित

समीक्ष्य—१-२७ ध्यानपूर्वक देखकर
समुद्रम्—२-७०; ११-२८ सागर को
समुद्धर्ता—१२-७ बचानेवाला, उद्धार करनेवाला
समुपस्थितम्—१-२८ इकट्ठा हुए (को); २-२ उत्पन्न हुआ, उपस्थित हुआ
समुपाश्रितः—१८-५२ आश्रय लेकर रहनेवाला, आश्रय लिया हुआ
समृद्धवेगाः—११-२९, २९ बढ़ते जाते वेगवाले (होकर), बढ़ते हुए वेग में
समृद्धम्—११-३३ समृद्धिवाला, धन-धान्य से भरा हुआ
समे—२-३८ समान (दो)
समौ—५-२७ समान, समभावी, एक समान (दो)
संपत्—१६-५ संपत्ति
संपदम्—१६-३, ४, ५ संपत्ति को
संपद्यते—१३-३० होती है
संपश्यन्—३-२० देखकर,—का विचार करते हुए
संप्रकीर्तितः—१८-४ वर्णन किया गया है, कहा गया है
संप्रतिष्ठा—१५-३ पाया, नींव
संप्रवृत्तानि—१४-२२ प्राप्त होने पर आ जाने पर

संप्रेक्ष्य—६-१३ अच्छी तरह निगाह डालकर, नजर टिकाकर, देखकर
संप्लुतोदके—२-४६ सरोवर में(से)
संबन्धिनः—१-३४ सगे-संबंधी
संभवन्ति—१४-४ (वे) उत्पन्न होते हैं
संभवः—१४-३ उत्पत्ति
संभवामि—४-६, ८ (मैं) जन्म लेता हूं
संभावितस्य—२-३४ प्रतिष्ठित का, मान पाये हुए का (को)
संमोहम्—७-२७ मूर्च्छा को
संमोहः—२-६३ अविवेक, मूढ़ता
संमोहात्—२-६३ संमोह से, मूढ़ता से
सम्यक्—५-४; ८-१०; ९-३० भली प्रकार से
सरसाम्—१०-२४ सरोवरों में
सर्गः—५-१९ संसार, जन्म
सर्गाणाम्—१०-३२ सृष्टियों में
सर्गे—७-२७ सृष्टि में, जगत में, १४-२ उत्पत्तिकाल में
सर्पाणाम्—१०-२८ सर्पों में
सर्व—११-४० हे सर्वरूप (ईश्वर)
सर्वकर्मणाम्—१८-१३ सब कर्मों की, कर्ममात्र की
सर्वकर्मफलत्यागम्—१२-११; १८-२ सब कर्मों के फल

त्याग का

सर्वकर्माणि—३-२६ सारे कर्म; ४-३७; ५-१३; १८-५६, ५७ सब कर्मों को

सर्वकामेभ्यः—६-१८ सब कामनाओं से

सर्वकिल्विषैः—३-१३ सब पापों से

सर्वक्षेत्रेषु—१३-२ सब शारीरिक क्षेत्रों में

सर्वगतम्—६-१५; १३-३२ सब में व्याप्त, सर्वव्यापी

सर्वगतः—२-२४ सब में व्याप्त, सर्वव्यापी

सर्वगुह्यतमम्—१८-६४ सबसे गुह्य, सब गुह्यों में गुह्यतम

सर्वज्ञानविमूढान्—३-३२ ज्ञानहीन मूर्खों को

सर्वतः—२-४६ सब प्रकार; ११-१६, १७, ४०; १३-१३ सबसे, सब तरफ से, चारों ओर

सर्वतःपाणिपादम्—१३-१३ सब ओर हाथ-पैरवाला

सर्वतःश्रुतिमत्—१३-१३ सब ओर कानवाला

सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्—१३-१३ जिसके सब तरफ आंख, मुंह और सिर हैं वह

सर्वत्र—२-२८, ६-२९, ३०, ३२; १२-४; १३-२८, ३२; १८-४६ सब जगह

सर्वत्रगम्—१२-३ सर्वव्यापी को, सब जगह जानेवाले को

सर्वत्रगः—९-६ सब जगह जानेवाला, सब जगह विचरण करनेवाला

सर्वथा—६-३१; १३-२३ सब प्रकार से; चाहे जैसा

सर्वदुर्गाणि—१८-५८ सब संकटों को, (संकटरूपी) पहाड़ों को

सर्वदुःखानाम्—२-६५ सब दुःखों का

सर्वदेहिनाम्—१४-८ सब प्राणियों का, देहधारीमात्र का

सर्वद्वाराणि—८-१२ सब द्वारों को, इंद्रियों को

सर्वद्वारेषु—१४-११ सब द्वारों में, इंद्रियों में

सर्वधर्मान्—१८-३६ सब धर्मों को

सर्वपापेभ्यः—१८-६६ सब पापों से

सर्वपापैः—१०-३ सब पापों से

सर्वभावेन—१५-१९; १८-६२ पूर्णभाव से, समभाव से

सर्वभूतस्थम्—६-२९ भूतमात्र मे स्थित

सर्वभूतस्थितम्—६-३१ भूतमात्र में रहे हुए को

सर्वभूतहिते—५-२५; १२-४

सर्वाः—८-१८; ११-२०; १५-१३ सब

सर्वे—१-६, ९, ११, ३३; २-१२, ७०; ४-१९, ३०; ७-१८; १०-१३, ११-२२, २६, ३२, ३६; १४-१ सब

सर्वेन्द्रियगुणाभासम्—१३-१४ जिनमें सब इंद्रियों के गुणों का आभास होता है वह

सर्वेन्द्रियविवर्जितम्—१३-१४ इंन्द्रियों से रहित, विना सब इंद्रियों का

सर्वेभ्यः—४-३६ सब से

सर्वेषाम्—१-२५; ६-७ सब का, सब में

सर्वेषु—१-११; २-४६; ८-७, २०, २७; १३-२७; १८-२१; ५४ सब में

सर्वैः—१५-१५ सबके द्वारा

सविकारम्—१३-६ विकारसहित (क्षेत्र)

सविज्ञानम्—७-२ अनुभवयुक्त, विज्ञानसहित

सव्यसाचिन्—११-३३ हे वाएं हाथ से वाण चला सकने वाले (अर्जुन)

सशरम्—१-४७ वाणसहित (को)

सह—१-२२; ११-२६; १३-२३ साथ, सहित

सहजम्—१८-४८ जन्म से प्राप्त हुए, सहज प्राप्त

सहदेवः—१-१६ सहदेव, पांडवों में पांचवां भाई

सहयज्ञाः—३-१० यज्ञसहित

सहसा—१-१३ एकाएक, एक साथ

सहस्रकृत्वः—११-३९ हजारों वार

सहस्रबाहो—११-४६ हे हजार हाथवाले

सहस्रयुगपर्यन्तम्—८-१७ हजारों युग तक का

सहस्रशः—११-५ हजारों की संख्या में

सहस्रेषु—७-३ हजारों में

संयतेन्द्रियः—४-३९ जिसने अपनी इंद्रियां वश में रखी हैं वह, जितेंद्रिय

संयमताम्—१०-२९ नियमन करनेवालों में, दंड देनेवालों में

संयमाग्निषु—४-२६ संयमरूपी अग्नियों में

संयमी—२-६९ योगी, संयमी

संयम्य—२-६१; ३-६; ६-१४ संयम में रखकर, वश में रखकर; ८-१२ रोककर, वंद करके

संयाति—२-२२ (वह) जाता है, प्राप्त करता है; १५-८ जाता है

संवादम्—१८-७०, ७४, ७६ संवाद को
संवृत्तः—११-५१ शांत हुआ—हुआ हूं
संशयम्—४-४२; ६-३९ संशय को
संशयस्य—६-३९ संशय का
संशयः—८-५; १०-७; १२-८ शंका, संशय
संशयात्मनः—४-४० शंकाशील का
संशयात्मा—४-४० शंकाशील
संशितव्रताः—४-२८ तीक्ष्ण व्रत करनेवाले, कठिन व्रतधारी
संशुद्धकिल्विषः—६-४५ जिसके पाप धुल गये हैं वह, पापमुक्त
संश्रिताः—१६-१८—का आश्रय लेनेवाले
संसारेषु—१६-१९ संसार में, लोक में
संसिद्धिम्—३-२०; ८-१५; १८-४५ ज्ञान को, मोक्ष को, परम सिद्धि को
संसिद्धौ—६-४३ मोक्ष के लिए, परम सिद्धि के लिए
संस्तभ्य—३-४३ स्थिर करके वश में करके
संस्पर्शजा—५-२२ विषयेन्द्रिय-संबंध से होनेवाले, विषयजन्य
संस्मृत्य—१८-७६, ७७ याद करके
संहरते—२-५८ (वह) समेट लेता है, इकट्ठा कर लेता है
सः—१-१३, इ० वह
सा—२-६९; ६-१९; ११-१२; १७-२; १८-३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५ वह (स्त्रीलिंग)
साक्षात्—१८-७५ स्वयं, प्रत्यक्ष
साक्षी—९-१८ कृताकृत को देखनेवाला, साक्षी
सागरः—१०-२४ समुद्र
सात्त्विकप्रियाः—१७-८ सात्त्विक लोगों को प्रिय
सात्त्विकम्—१४-१६; १७-२०; १८-२०, २३, ३७ सात्त्विक; सत्त्वगुणयुक्त
सात्त्विकः—१७-११; १८-९, २६ सात्त्विक
सात्त्विकाः—७-१२ सात्त्विक, सत्त्वगुणात्मक; १७-४ सात्त्विक लोग
सात्त्विकी—१७-२; १८-३०, ३३ सात्त्विक, सत्त्वगुणात्मक
सात्यकिः—१-१७ एक यादव, युयुधान, श्रीकृष्ण का सारथि
साधर्म्यम्—१४-२ समान भाव को, सरूपता को
साधिभूताधिदैवम्—७-३० अधिभूत—पंचमहाभूतों और अधिदैव—देवसहित को
साधियज्ञम्—७-३० अधियज्ञवाले को

साधुभावे—१७-२६ जहां असाधुता हो वहां साधुता चाहने के भाव में, कल्याण (साधु) के अर्थ (भाव) में

साधुषु—६-९ साधुओं में

साधुः—९-३० साधु

साधूनाम्—४-८ साधुओं का

साध्याः—११-२२ साध्य देव, साध्य

साम—९-१७ सामवेद

सामर्थ्यम्—२-३६ वल

सामवेदः—१०-२२ सामवेद

सामासिकस्य—१०-३३ समास (समूह) में

साम्नाम्—१०-३५ सामों में, सामवेद के सूक्तों में

साम्ये—५-१९ समान भाव में, समत्व में

साम्येन—६-३३ साम्यबुद्धि (के साधन) से, समत्वरूपी (योग)

साहंकारेण—१८-२४ मैं करता हूं, इस भाव से

सांख्ययोगी—५-४ सांख्य (ज्ञान) योग और कर्मयोग

सांख्यम्—५-५ संन्यास को, सांख्ययोग को

सांख्यानाम्—३-३ ज्ञानयोगियों की, सांख्यों की

सांख्ये—२-३९; १८-१३ परमार्थवस्तुविवेक में, सांख्यसिद्धान्त (तर्कवाद) में (की), सांख्यशास्त्र में, वेदांत में

सांख्येन—१३-२४ सांख्य से, ज्ञान (मार्ग) से

सांख्यैः—५-५ संन्यासियों से, सांख्ययोगियों द्वारा

सिद्धये—७-३; १८-१३ सिद्धि के लिए

सिद्धसंघाः—११-३६ सिद्धों के समुदाय-संघ

सिद्धः—१३-१४ सर्वसंपन्न, सिद्ध

सिद्धानाम्—७-३; १०-२६ सिद्धों का (—में)

सिद्धिम्—३-४; ४-१२; १२-१०; १४-१; १६-२३; १८-४५, ४६; १८-५० सिद्धि को मोक्ष को, परम गति को, पूर्णत्व को

सिद्धिः—४-१२ सिद्धि, फल

सिद्धौ—४-२२ फलप्राप्ति में, सफलता में

सिद्धयसिद्धयोः—२-४८; १८-२६ सिद्धि-असिद्धि में, सफलता-निष्फलता में

सिंहनादम्—१-१२ सिंहसमान गर्जना, सिंहनाद

सीदन्ति—१-२८ (वे) ढीले होते हैं

सुकृतदुष्कृते—२-५० अच्छे-बुरे कर्म को, पाप-पुण्य को

सुकृतस्य—१४-१६ सत्कर्म का, अच्छी तरह किये हुए का
सुकृतम्—५-१५ पुण्य
सुकृतिनः—७-१६ अच्छे काम करनेवाले, सदाचारी
सुखदुःखे—२-३८ सुख और दुःख में
सुखदुःखसंज्ञैः—१५-५ सुख-दुःख नाम से पहचाने जानेवाले (के द्वारा)
सुखदुःखानाम्—१३-२० सुख-दुःखों का
सुखम्—२-६६; ४-४०; ५-२१; ६-२१, २७, २८, ३२; १०-४; १३-६; १६-२३; १८-३६, ३७, ३८, ३९ सुख, सुख को; ५-३ सरलता से ५-१३ सुख से, सुख में
सुखसङ्गेन—१४-६ सुख के संबंध से, सुख के साथ
सुखस्य—१४-२७ सुख का
सुखानि—१-३२, ३३ सुख, सुखों को
सुखिनः—१-३७; २-३२ सुखी, भाग्यशाली (लोग)
सुखी—५-२३; १६-१४ सुखी
सुखे—१४-९ सुख में
सुखेन—६-२८ सुख से, सहजता से, अनायास
सुखेषु—२-५६ सुखों में

सुघोषमणिपुष्पकौ—१-१६ सुघोष और मणिपुष्पक नामक नकुल और सहदेव के शंख
सुदुराचारः—९-३० अत्यंत दुराचारी
सुदुर्दर्शम्—११-५२ बहुत कठिनाई से देखा जा सके ऐसा, बहुत दुर्लभ दर्शनवाला
सुदुर्लभः—७-१९ कठिनाई से मिलनेवाला, बहुत दुर्लभ
सुदुष्करम्—६-३४ अत्यन्त कठिनाई से किया जा सकने योग्य
सुनिश्चितम्—५-१ ठीक निश्चयपूर्वक, अच्छी तरह से निश्चय करके
सुरगणाः—१०-२ देवों के संघ, देव
सुरसंघाः—११-२१ देवों के समुदाय, संघ
सुराणाम्—२-८ देवों का
सुरेन्द्रलोकम्—९-२० स्वर्ग को, देवलोक को, इंद्रलोक को
सुलभः—८-१४ सहज, मिलने-जैसा
सुविरूढमूलम्—१५-३ गहराई तक गई हुई जड़ोंवाले
सुसुखम्—९-२ सुख देनेवाला, सहल
सुहृत्—९-१८ हितेच्छु, मित्र
सुहृदम्—५-२९ हित करनेवाले (को)

सुहृदः—१-२७ प्रत्युपकार के विना भला करनेवाले (को) स्नेहियों को

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु—६-९ हितेच्छु, मित्र, शत्रु, निष्पक्षपाती (तटस्थ) दोनों (पक्ष) का भला चाहनेवाला, द्वेष्य और बंधुओं में

सूक्ष्मत्वात्—१३-१५ सूक्ष्मता के कारण

सूतपुत्रः—११-२६ सूतपुत्र कर्ण

सूत्रे—७-७ डोरी में, सूत्र में

सूयते—९-१० (वह) उत्पन्न करता है

सूर्यसहस्रस्य—११-१२ हजार सूर्य का

सूर्यः—१५-६ सूरज

सृजति—५-१४ (वह) उत्पन्न करता है, रचता है

सृजामि—४-७ (मैं) उत्पन्न करता हूं

सृती—८-२७ (दो) मार्ग

सृष्टम्—४-१३ सिरजा है, उत्पन्न किया है

सृष्ट्वा—३-१० उत्पन्न करके

सेनयोः—१-२१, २४; २-१० दोनों सेनाओं की; १-२७ दोनों सेनाओं में

सेनानीनाम्—१०-२४ सेनापतियों में

सेवते—१४-२६ (वह) सेवा करता है

सेवया—४-३४ सेवा द्वारा, सेवा करके

सैन्यस्य—१-७ सेना का

सोढुम्—५-२३; ११-४४ सहन करने की

सोमः—१५-१३ चंद्र

सोमपाः—९-२० सोमरस पीनेवाले

सौक्ष्म्यात्—१३-२२ सूक्ष्मता के कारण

सौभद्रः—१-६, १८ सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु

सौमदत्तिः—१-८ सोमदत्त का पुत्र, (दूसरा नाम भूरिश्रवा)

सौम्यत्वम्—१७-१६ सुजनता, सौम्यता

सौम्यवपुः—११-५० शांतमूर्ति, प्रसन्नदेह

सौम्यम्—११-५१ शांत, सौम्य

स्कन्दः—१०-२४ देवों के सेनापति कार्तिकस्वामी

स्तब्धः—१८-२८ अक्खड़, झक्की

स्तब्धाः—१६-१७ अक्खड़

स्तुतिभिः—११-२१ स्तोत्रों द्वारा

स्तुवन्ति—११-२१ (वे) स्तुति करते हैं, यश गाते हैं

स्तेनः—३-१२ चोर, तस्कर

स्त्रियः—९-३२ स्त्रियां
स्त्रीषु—१-४१ स्त्रियों में
स्थाणुः—२-२४ स्थिर
स्थानम्—५-५; ८-२८; ९-१८; १८-६२ पद, स्थिति, स्थान
स्थाने—११-३६ योग्य है, उचित स्थान पर है
स्थापय—१-२१ खड़ा रखो
स्थापयित्वा—१-२४ स्थापन करके, खड़ा रखकर
स्थावरजङ्गमम्—१३-२६ अचर और चर, स्थावर-जंगम
स्थावराणाम्—१०-२५ स्थिर वस्तुओं में, स्थावरों में
स्थास्यति—२-५३ (वह) स्थिर होगा—रहेगा
स्थितप्रज्ञस्य—२-५४ स्थिर बुद्धि-वाले की स्थितप्रज्ञ की
स्थितप्रज्ञः—२-२५ स्थितप्रज्ञ
स्थितधीः—२-५४, ५६ स्थिर बुद्धिवाला
स्थितम्—५-१९; १३-१६; १५-१० रहा हुआ, स्थिर
स्थितः—५-२०; ६-१०, १४, २१, २२; १०-४२; १८-७३ रहा हुआ, स्थिर
स्थितान्—१-२६ खड़े हुए (को)
स्थिताः—५-१९ स्थिर, स्थिर हुए हैं
स्थितिम्—९-३३ स्थिति को
स्थितिः—२-७२ निष्ठा, स्थिति; १७-२७ दृढ़ता, स्थिरता, स्थिर भावना
स्थितौ—१-१४ बैठे हुए (दो)
स्थित्वा—२-७२ रहकर, स्थिर होकर
स्थिरबुद्धिः—५-२० स्थिर बुद्धि-वाला
स्थिरम्—६-११; १२-९ स्थिर अचल
स्थिरमतिः—१२-१९ स्थिर बुद्धि-वाला
स्थिरः—६-१३ स्थिर
स्थिराम्—६-३३ स्थिर (को)
स्थिराः—१७-८ पौष्टिक
स्थैर्यम्—१३-७ स्थिरता
स्निग्धाः—१७-८ स्निग्ध, चिकना-हटवाले, चिकने
स्पर्शनम्—१५-९ स्पर्शेन्द्रिय, त्वचा
स्पर्शान्—५-२७ इन्द्रियों के विषयोंवाले स्पर्श को, विषयभोगों को
स्पृशन्—५-८ छूता हुआ, स्पर्श करता हुआ
स्पृहा—४-१४; १४-१२ तृष्णा, लालसा, इच्छा
स्म—२-३ निषेधवाची 'मा' के साथ आनेवाला अतिरिक्त

उपपद, देखो 'मा' (स्म गमः) में

स्मरति—८-१४ (वह) याद करता है, स्मरण करता है

स्मरन्—३-६; ८-५, ६ याद करता हुआ, चिंतन करता हुआ

स्मृतम्—१७-२०, २१; १८-३८ स्मृति में कहा हुआ, कहा गया है

स्मृतः—१७-२३ स्मरण किया हुआ, स्मृति में कहा हुआ, कहा गया है

स्मृता—६-१९ कही हुई, कही गई है

स्मृतिभ्रंशात्—२-६३ स्मृति भ्रांत होने से

स्मृतिविभ्रमः—२-६३ स्मृति भ्रांत होना, होश गुम होना

स्मृतिः—१०-३४; १५-१५ स्मरणशक्ति, स्मृति, १८-७३ भान

स्यन्दने—१-१४ रथ में

स्यात्—१-३६; २-७; ३-१७; १०-३९; ११-१२; १५-२०; १८-४० (वह) हो

स्याम्—३-२४; १८-७० (मैं) होऊं

स्याम—१-३७ (हम) हों

स्युः—९-३२ (वे) हों

स्रंसते—१-३० (वह) खिसक जाता है, गिरता है

स्रोतसाम्—१०-३१ नदियों में

स्वकर्मणा—१८-४६ अपने कर्म से

स्वकर्मनिरतः—१८-४५ अपने कर्म में रत हुआ

स्वकम्—११-५० अपने (रूप)को

स्वचक्षुषा—११-८ अपनी (प्राकृत)आंखों द्वारा, चर्म-चक्षु द्वारा

स्वजनम्—१-२८, ३१, ४७, ४५ स्वजन को, सगे-संबंधियों को

स्वतेजसा—११-१९ अपने तेज से

स्वधर्मम्—२-३१, ३३ स्वधर्म को

स्वधर्मः—३-३५; १८-४७ स्वधर्म, अपना धर्म

स्वधर्मे—३-३५ स्वधर्म में

स्वधा—९-१६ पितरों को चढ़ाया जानेवाला अन्न, (यज्ञ द्वारा) पितरों का आधार

स्वनुष्ठितात्—३-३५; १८-४७ अच्छी तरह अनुष्ठान किये हुए की अपेक्षा सुलभ—सुकर की अपेक्षा

स्वपन्—५-८ सोता हुआ

स्वप्नम्—१८-३५ निद्रा को

स्वबान्धवान्—१-३७ अपने बांधवों को

स्वभावजम्—१८-४२, ४३, ४४

ह

हन्ति—२-१९, २१; १८-१७ (वह) मारता है, हनन करता है
हन्तुम्—१-३५, ३७, ४५ मारने को
हन्यते—२-१९, २० (वह) मारा जाता है, हनन किया जाता है
हन्यमाने—२-२० हनन होने पर, नाश होने पर, नाश होने से
हन्युः—१-४६ (वे) मारें, मार डालें
हयैः—१-१४ घोड़ों द्वारा
हरति—२-६७ (वह) हरण कर लेता है, खींच ले जाता है
हरन्ति—२-६० (वे) हर लेते हैं
हरिः—११-९ कृष्ण
हरेः—१८-७७ हरि का, कृष्ण का
हर्षशोकान्वितः—१८-२७ हर्ष और शोक से घिरा हुआ, हर्ष और शोकवाला
हर्षम्—१-१२ आनन्द (को) हर्ष (को)
हर्षामर्षभयोद्वेगैः—१२-१५ हर्ष, अमर्ष (क्रोध), भय और उद्वेग से
हविः—४-२४ बलि, हवन की वस्तु
हस्तात्—१-३० हाथ से
हस्तिनि—५-१८ हाथी में
हानिः—२-६५ नाश
हि—१-११ इत्यादि, एक पादपूरक उपपद; सचमुच, कारण कि; 'पर' के अर्थ में भी कभी-कभी उपयोग में आता है
हितकाम्यया—१०-१ हितेच्छा से, हित के लिए
हितम्—१८-६४ लाभ, हित
हित्वा—२-३३ छोड़कर, खोकर
हिनस्ति—१३-२८ (वह) नाश करता है, घात करता है
हिमालयः—१०-२५ हिमालय पर्वत
हिंसात्मकः—१८-२७ हिंसक स्वभाववाला, हिंसावान
हिंसाम्—१८-२५ हिंसा पर-पीडन को
हुतम्—४-२४ होमा हुआ; ९-१६ हवन, हवनद्रव्य; १७-२८ हवन किया हुआ, यज्ञ
हृतज्ञानाः—७-२० जिनका ज्ञान हरा गया है वे
हृत्स्थम्—४-२२ हृदय में रहे हुए
हृदयदौर्बल्यम्—२-३ हृदय की दुर्बलता
हृदयानि—१-१९ हृदयों को
हृदि—८-१२; १३-१७; १५-१५ हृदय में
हृद्देशे—१८-६१ हृदयस्थान में, हृदय में

हृद्याः—१७-८ हृदय को प्रिय, मन को प्रिय लगें ऐसे

हृषितः—११-४५ आनंदित

हृषीकेश—११-३६; १८-१ हे इंद्रियों के ईश—कृष्ण

हृषीकेशम्—१-२१; २-९ हृषीकेश को

हृषीकेश.—१-१५, २४; २-१० कृष्ण

हृष्टरोमा—११-१४ रोमांचित

हृष्यति—१२-१७ (वह) हर्षित होता है

हृष्यामि—१८-७६, ७७ (मैं) हर्षित होता हूं, प्रसन्न होता हूं

हे—११-४१ हे, संबोधनार्थक उपपद

हेतवः—१८-१५ कारण, हेतु

हेतुना—९-१० हेतु से, कारण से

हेतुमद्भिः—१३-४ कार्यकारण के हेतुवाले (के द्वारा), युक्ति-वाले (के द्वारा), उदाहरण तर्क (के द्वारा)

हेतुः—१३-२० कारण, हेतु

हेतोः—१-:५ कारण से, हेतुसे

ह्रियते—६-४४ (वह) खिंचता है

ह्रीः—१६-२ अकार्य में लज्जा, मर्यादा, व्रीड़ा





मंडल द्वारा प्रकाशित
गांधीजी की प्राप्य पुस्तकें

□□

१. आत्मकथा (संपूर्ण)
२. आत्मकथा (संक्षिप्त)
३. गीता-माता
४. अनासक्ति-योग
५. गीता-बोध
६. गीता-पदार्थकोश
७. गीता की महिमा
८. देश-सेवकों के संस्मरण
९. ग्राम-सेवा
१०. नीति-धर्म
११. मंगल प्रभात
१२. सर्वोदय
१३. आश्रमवासियों से
१४. हृदय-मंथन के पांच दिन
१५. गांधी-शिक्षा (तीन भाग)
१६. धर्म-नीति
१७. प्रार्थना-प्रवचन (भाग २)

